देश की लोकप्रिय मासिक हिन्दी खेल पत्रिका

शानदार 32वां वर्ष

नेशनल स्पोर्ट्स टाइम्स

मई-2026, अंक-11

न्यूज मैगजीन

मूल्य ₹25

आईपीएल में ओपनर्स का बल्ले से गदर

एक साथ दो टी20 टीम उतार सकता है भारत

पीएम मोदी ने फुटबॉल खेल युवा खिलाड़ियों में भरा जोश

टी20 विश्व कप टीम इंडिया का ऐलान

हरमनप्रीत की कप्तानी में उतरेगी भारतीय टीम

भारतीय शतरंज की नई रानी आर. वैशाली

एमपीएल 2026 भोपाल लेपर्ड्स पर विशेष रिपोर्ट

IPL का रोमांच चरम पर

इस बार आईपीएल का फैसला पावर प्ले ओवर करने वाले हैं

ओपनर की धूम का सीजन बन गया है ये

आरएनआई नंबरः 69917/94 डाक पंजीयन म.प्र. / भोपाल / 607 / 2024-26 / 4 तारीख को प्रकाशित / डाक पोस्टिंग 5 तारीख

Email: nationalsportstimes@yahoo.com, nationalsportstimes@gmail.com Website: nationalsportstimes.org

फुल टाइम. पार्ट टाइम. एनी टाइम !

कमाइए, सीखिए और प्रगति कीजिए
भारत की विशालतम जीवन बीमा कंपनी के साथ.

- अपने समय के अनुसार काम कीजिए
- विस्तृत बेनिफिट पैकेज
- पुरस्कार और सम्मान
- फुल टाइम या पार्ट टाइम करियर... आप तय कीजिए

एजेंट के रूप में एलआईसी के साथ जुड़ने के लिए SMS करें 'Agent City-Name' (Agent space City-Name) जैसे कि 'Agent Mumbai' और भेज दें 56767474 पर या हमारी वेबसाइट www.licindia.in के माध्यम से रजिस्टर करें या नज़दीकी एलआईसी शाखा से संपर्क कीजिए.

Follow us : YouTube LIC India Forever

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA
मध्यक्षेत्र, भोपाल

LIC/02/16-17/12/HIN

IRDAI Regn No.: 512

ज़िन्दगी के साथ भी, ज़िन्दगी के बाद भी.

Train Like a Professional

Perform Like a Champion!

Fitness | Skills | Matches | Career Guidance

BHOPAL LEOPARDS

CRICKET ACADEMY

Facilities & Features

4 Turf Wickets
2 Cement Wickets

Personal Attention to Every Player

Cricket Fitness & Strength Sessions

Professional Training Environment

Regular Practice Matches

Residential Sports Programme

BDCA Registered Cricket Academy

U-9 | U-13 | U-15 | U-18 | Open Age Group

Head Coach
Brajesh Tomar

Dedicated Female Coach available for **GIRLS CRICKETERS**

Special Focus on Girls Cricket Development

SUMMER Camp 2026
Registration Open

Food
CCTV
WIFI
Accommodation
Recreation Area
Physiotherapy Room

RESIDENTIAL Facilities Available

ADMISSIONS OPEN
Rahul Dukhande : 7223836109

Location HMG Bhopal Leopards Cricket Ground at DPS Bhopal

Follow Us On Social Media

PRISTINEIDEAS.COM

आरामदायक · सुविधाजनक · खुशियों से भरपूर ·

नकद निकासी | आरटीजीएस/ एनईएफटी | ऋण | पासबुक प्रिंटिंग | एफडी/आरडी खोलने के लिये

शाखा क्यो जाये ?

इसके बदले PNB OneApp अपनाये

- एमपासबुक की जांच
- निधि अंतरण तथा सुरक्षित और संरक्षित UPI लेनदेन
- कार्ड रहित नकद निकासी
- तत्काल सावधि जमा/ आवर्ती जमा खोलें
- ऑनलाइन डिजीटल ऋण पाएं
- और भी बहुत कुछ

PNB ONE कैसे प्राप्त करें ?

इस क्यूआरकोड को स्कैन करें और डाउनलोड करें

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

हमें फॉलो करें: pnbindia | www.pnbindia.in

पंजाब नैशनल बैंक ...भरोसे का प्रतीक!

punjab national bank ...the name you can BANK upon!

Treadmills | Ellipticals | Home & Commercial Gyms.
Rowers | Mountain Bikes | Massage Chairs | Accessories Etc.

Available Brands

VIVA FITNESS
#PushYourself

NordicTrack

Reebok Etc.

BUY BACK SCHEME AVAILABLE*

For Home, Commercial & Corporate Use

Rahurikar's Advance Fitness
Where Fitness is the Only Concern

AN ISO 9001-2008 CERTIFIED CO.
6, A-B, Malviya Nagar Near Airtel Office, Bhopal
website : www.advancefitness.co.in
Ph.: 0755-4044440, 7509068004, 9826054741
FF-31 & 32, Cosmos Mall, Nanakheda, Ujjain (M.P.)
PH: 7509068022

नेशनल स्पोर्ट्स टाइम्स

पंजीयन संख्या (आरएनआई): 69917/94, डाक पंजी. न. मप्र/भोपाल/607/2024-26

■ वर्ष-32 ■ अंक-11 ■ क्रमांक-307 ■ मई-2026 ■ मूल्य-25 रूपये

संपादकीय मंडल

प्रधान संपादक	:	इन्द्रजीत मौर्य
प्रबंध संपादक	:	सुरेश कुमार
प्रबंधक	:	मयूरी मौर्य
विज्ञापन प्रबंधक	:	अजय मौर्य
विज्ञापन सहायक	:	रामेश्वर भार्गव
डिजाइनिंग	:	सुरेन्द्र डहारे
फोटो जर्नलिस्ट	:	मनीष शुक्ला
कार्टूनिस्ट	:	वीरेंद्र कुमार ओगले

सलाहकार संपादक

- अरुणेश्वर सिंहदेव
- अरुण भगोलीवाल
- आशीष पाण्डे
- शांति कुमार जैन
- समीर मिरीकर
- सुशील सिंह ठाकुर
- राजीव सक्सेना
- शंकर मूर्ति

विशेष संवाददाता / समीक्षक

हरेंद्र नागेश साहू, हरीश हर्ष, चरनपालसिंह सोबती, वीरेन्द्र शुक्ल, सरिता अरगरे, मोहन द्विवेदी, मोहम्मद ईशाउद्दीन, धर्मेश यशलाहा, दामोदर आर्य, डॉ. मुनीष राणा, प्रशांत सेंगर, सुदेश सांगते, डॉ. प्रशांत मिश्रा, विजय रांगणेकर, अनुराग मिश्रा, अमरनाथ, मो. अफरोज, दीपक शर्मा, आत्माराम भाटी।

संपादकीय कार्यालय

बी-10, छत्रपति नगर, अयोध्या बायपास, भोपाल
फोन : 0755-4218892,
मोबाइलः 094250-25727, 8349994166

पंजीयन कार्यालय : ई-197, ओल्ड मीनाल रेसीडेंसी, जे.के. रोड, भोपाल, मप्र-462023,

E-Mail: nationalsportstimes@Yahoo.com
nationalsportstimes@gmail.com

फोटो स्रोतः इंटरनेट, सोशल मीडिया, अखबार एवं ब्यूरो कार्यालय

ब्यूरो कार्यालय

इंदौर, उज्जैन, नागदा, देवास, सीहोर, विदिशा, रायसेन, बुरहानपुर, धार, जबलपुर, ग्वालियर, दतिया, रीवा, सतना, खण्डवा, खरगोन, शहडोल, छिंदवाड़ा, सागर, छतरपुर, होशंगाबाद, बैतूल, इटारसी, रतलाम, शिवपुरी, ललितपुर, झाँसी, नागपुर, रायपुर, दुर्ग, बिलासपुर, मुंबई, रत्नागिरी, कोलहापुर, पूना, जलगाँव, दिल्ली, नोएडा, हरियाणा, लुधियाना, जालंधर, मेरठ, लखनऊ, कानपुर, इलाहाबाद, गोरखपुर, मिर्जापुर, जयपुर, पटना, नैनीताल, देहरादून, कुमाऊ, गाजियाबाद, एंगुल (उड़ीसा), ऊना, शिमला, भुवनेश्वर।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक इन्द्रजीत मौर्य द्वारा सुलेख आफसेट प्लाट नं. 150, एल-5, मनोरमा काम्प्लेक्स, जोन-1, एमपी नगर, भोपाल से मुद्रित तथा ई-197, मीनाल रेसीडेंसी, जे.के. रोड, राज होम्स कॉलोनी, भोपाल से प्रकाशित। संपादक इन्द्रजीत मौर्य।

खेल पत्रिका में प्रकाशित लेखों की जिम्मेदारी लेखक की है। प्रकाशक एवं संपादक का लेखक से सहमत होना अनिवार्य नहीं है। (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल न्यायालय रहेगा।

21 फिडे शतरंज

भारतीय शतरंज की नई रानी आर. वैशाली

अंदर के पन्नों पर

चालाकी करने वालों पर कसेगा शिकंजा	07
आईपीएल में 250 भी सेफ नहीं	08
अभिषेक का टी20 में नया कीर्तिमान	14
बीसीसीआई की नई रणनीति	17
स्मृति का बल्ले से जलवा	19
फीफा विश्व कप फुटबॉल काउनडाउन-5	23
फीफा विश्व कप में आत्मघाती गोल	26
बदनसीब इटली	35
बैडमिंटन में मंजूनाथ का त्याग	37
शटल की उड़ान	38
आयुष बने उपविजेता	39
भोपाल स्पोर्ट्स काम्प्लेक्स पर उठे सवाल	44

Website: www.nationalsportstimes.org

देश की लोकप्रिय मासिक हिन्दी खेल पत्रिका

नेशनल स्पोर्ट्स टाइम्स

आज ही अपनी प्रति बुक कराएं...

नेशनल स्पोर्ट्स टाइम्स

घर बैठे कैसे पाएं

आपको सिर्फ इतना करना है कि आप इस कूपन को भरकर भेजें और नेशनल स्पोर्ट्स टाइम्स खुद चलकर आपके घर दस्तक देगा।

मैं .... नेशनल स्पोर्ट्स टाइम्स का वार्षिक सदस्य बनना चाहता/चाहती हूं। वार्षिक शुल्क 300 रुपए, दो वर्ष के लिए 600 रुपए (50 रुपए की छूट), तीन वर्ष के लिए 900 रुपए (80 रुपए की छूट), पांच वर्ष के लिए 1500 रुपए (100 रुपए की छूट) एवं आजीवन सदस्यता 15,000 रुपए मनीआर्डर या नगद .... से भेज रहा हूं।

पूरा पता ....

....

मो. .... ईमेल................................

नोटः *मनीऑर्डर या नगद राशि नेशनल स्पोर्ट्स टाइम्स के नाम से भेजें। *आपकी सदस्यता राशि प्राप्त होने के अगले माह से पत्रिका के अंक नियमित रूप से भिजवाए जाएंगे। *पत्रिका केवल डाक द्वारा ही भेजी जाएगी। *किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र भोपाल न्यायालय होगा।

पत्रिका प्राप्त करने के लिए इस पते पर संपर्क करें: ई-197, ओल्ड मीनाल रेसीडेंस, जेके रोड, भोपाल-462023 (मप्र)

E-Mail: nationalsportstimes@yahoo.com
nationalsportstimes@gmail.com

फोन: 0755-4218892, मोबाइल: 09425025727

चालाकी करने वालों पर फीफा कसेगा शिकंजा

इन्द्रजीत मौर्य
प्रधान संपादक

विश्व फुटबॉल की नियम निर्धारक संस्था इंटरनेशनल फुटबॉल एसोसिएशन बोर्ड ने बड़ा फैसला लेते हुए नया नियम मंजूर किया है। अब अगर कोई खिलाड़ी विरोधी खिलाड़ी से बहस के दौरान अपना मुंह ढककर बात करता है, तो उसे सीधे लाल कार्ड दिखाया जा सकता है। यह फैसला वैंकूवर में हुई बैठक में सर्वसम्मति से लिया गया। नया नियम 11 जून से शुरू होने वाले विश्व कप 2026 में लागू होगा। यह नियम उस विवाद के बाद सामने आया है जिसमें रियल मैड्रिड स्टार विनीसियस जूनियर ने फरवरी में चैंपियंस लीग मैच के दौरान बेनफिका के जियानलुका प्रेस्टियानी पर मुंह ढककर नस्लीय टिप्पणी करने का आरोप लगाया था। इस मामले में यूईएफए ने प्रेस्टियानी पर छह मैचों का प्रतिबंध लगाया था। यदि वह अर्जेंटीना की विश्व कप टीम में चुने जाते हैं, तो शुरुआती मैचों से बाहर रह सकते हैं।

आईएफएबी ने अपने बयान में कहा, चकिसी विरोधी खिलाड़ी के खिलाफ बहस के दौरान मुंह ढकने वाले किसी भी खिलाड़ी को लाल कार्ड से दंडित किया जा सकता है।ज इस बयान के बाद साफ हो गया है कि फुटबॉल में अब गुप्त बातचीत या अपमानजनक टिप्पणी छिपाने की कोशिश बर्दाश्त नहीं की जाएगी। आईएफएबी ने एक और बड़ा नियम लागू किया है। अब यदि कोई खिलाड़ी रेफरी के फैसले के विरोध में मैदान छोड़ता है, तो उसे भी लाल कार्ड दिखाया जा सकता है। यह नियम टीम अधिकारियों पर भी लागू होगा। यानी अगर कोई कोच या अधिकारी खिलाड़ियों को मैदान छोड़ने के लिए उकसाता है, तो उस पर भी कार्रवाई होगी।

फीफा ने विश्व कप 2026 के लिए पीले कार्ड नियमों में भी राहत दी है। अब ग्रुप स्टेज में मिला एक पीला कार्ड नॉकआउट दौर में लागू नहीं होगा। इसी तरह क्वार्टर फाइनल तक पहुंचने पर भी पुराने कार्ड रिकॉर्ड से हट जाएंगे। फीफा ने कहा, फीफा परिषद ने फीफा विश्व कप 2026 के नियमों में संशोधन किया है, जिसके अनुसार ग्रुप चरण में मिला एक पीला कार्ड नॉकआउट चरण में मान्य नहीं होगा। इसी तरह क्वार्टर फाइनल में मिला एक पीला कार्ड अगले मैचों के लिए मान्य नहीं होगा। इन बदलावों का सबसे बड़ा फायदा यह होगा कि स्टार खिलाड़ी छोटे उल्लंघनों के कारण बड़े मैचों से बाहर नहीं होंगे। साथ ही मैदान पर अनुशासन भी बेहतर होगा। विश्व कप 2026 में अब सिर्फ गोल ही नहीं, नियमों की सख्ती भी चर्चा का विषय बनने वाली है।

विशेष

अब मैदान पर मुझे मैडम कहकर बुलाते हैं लोग : रितिका

समाज में बदलाव की मिसाल पेश करते हुए 31 वर्षीय रितिका श्री तमिलनाडु की पहली पंजीकृत ट्रांसजेंडर क्रिकेट अंपायर बन गई हैं। लेकिन इसके पीछे संघर्ष और साहस की लंबी कहानी छिपी है। पिछले साल सितंबर में, कोयंबटूर के एक शैक्षणिक संस्थान में बतौर अंपायर अपने पहले मैच में पहुंचीं रितिका को सुरक्षाकर्मी ने गेट पर रोक दिया। गार्ड ने उन्हें वहां से भगा दिया। रितिका ने हिम्मत नहीं हारी और डटकर कहा कि वह अंपायरिंग के लिए आई हैं पर कोई नहीं माना। फिर अधिकारियों ने हस्तक्षेप कर उन्हें मौका दिया। यह उनका पहला मैच था, मौका जो उनके लिए खुशी का होना चाहिए था वो अपमान में बदल गया।

रितिका ने कहा कि उस सुबह मैंने सवाल किया, एक ट्रांसजेंडर सामान्य जीवन क्यों नहीं जी सकता। उन्होंने लड़ाई लड़ी जिसमें कोयंबटूर डिस्ट्रिक्ट क्रिकेट एसोसिएशन (सीडीसीए) ने साथ दिया। लैंगिक समानता के प्रति जारूकगता बढ़ाई। अब हर मैच से पहले वेन्यू को मैसेज जाता है कि रितिका श्री अंपायरिंग करेंगी उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करें।

रितिका कहती हैं, मैदान पर मुझे मैडम कहकर पुकारा जाता है। मैंने एक भी टिप्पणी नहीं सुनी। अगले महीने रितिका तमिलनाडु क्रिकेट एसोसिएशन की अंपायर परीक्षा देंगी। शुरू में फॉर्म में थर्ड जेंडर का विकल्प नहीं था पर रितिका के प्रयास से इसमें बदलाव हुआ है और तीसरे लिंग का विकल्प जोड़ दिया गया। 2019 में आईपीएल देखते हुए रितिका ने सोचा वह अंपायर बनेंगी। तब उनका नाम मुथु राज था। 2020 लॉकडाउन में आईटी जॉब चली गई तो उन्होंने सलेम जाकर अंपायरिंग शुरू की। हालांकि, लिंग बदलने के कारण साल भर क्रिकेट से दूर रहीं। वापसी पर अधिकारियों में तीसरे लिंग का विकल्प नहीं था। लेकिन सीडीसीए ने उनका शानदार रिकॉर्ड देखा और उन्हें शामिल कर लिया।

आईपीएल में 250 का स्कोर भी सेफ नहीं

आईपीएल) में अब बल्लेबाजों का ऐसा दौर चल रहा है, जहां 250 रन का आंकड़ा भी आम होता जा रहा है। कभी टी20 क्रिकेट में 200 पार करना बड़ी बात माना जाता था, लेकिन आईपीएल में अब टीमें लगातार 250 या उससे ज्यादा स्कोर खड़ा कर रही हैं। दिलचस्प बात यह है कि लीग की 10 में से छह टीमों ने कुल 16 बार 250 या उससे ज्यादा का स्कोर बनाया है। हालांकि, इतनी बड़ी पारियां खेलने के बावजूद तीन मौकों पर टीमों को हार का सामना भी करना पड़ा।

शंकर मूर्ति
खेल समीक्षक

इस सूची में सनराजर्स हैदराबाद जैसी टीमों का दबदबा साफ नजर आता है, जिसने कई बार 270 के पार तक स्कोर पहुंचाया। आईपीएल में सबसे ज्यादा बार 250+ स्कोर बनाने का रिकॉर्ड सनराइजर्स हैदराबाद के नाम है। सनराइजर्स हैदराबाद ने कई बार 260 और 270 रन के पार स्कोर बनाए हैं, जिसमें 287/3 (रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के खिलाफ) लीग के सबसे बड़े स्कोर में शामिल है। इसके अलावा 286/6, 278/3 और 277/3 जैसे स्कोर भी इसी टीम के नाम दर्ज हैं, जो दिखाता है कि उनकी बल्लेबाजी कितनी आक्रामक रही है।

अन्य टीमों ने भी दिखाया दम : सनराइजर्स हैदराबाद के अलावा पंजाब किंग्स, रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु, कोलकाता नाइट राइडर्स, दिल्ली कैपिटल्स और लखनऊ सुपर जायंट्स ने भी 250+ स्कोर बनाकर अपनी ताकत दिखाई है। खासकर कोलकाता और पंजाब ने 260 रन के पार स्कोर बनाकर साबित किया है कि अब आईपीएल बल्लेबाजों का खेल बन चुका है।

बड़ी पारियां, फिर भी मिली हार : आईपीएल में 250 रन या उससे ज्यादा का स्कोर भी जीत की गारंटी नहीं होती। आंकड़ों के मुताबिक 16 में से 3 बार ऐसा हुआ जब टीम ने 250+ स्कोर बनाया, लेकिन फिर भी हार गई। इसका सबसे बड़ा उदाहरण तब देखने को मिला जब दिल्ली कैपिटल्स ने 264/2 का विशाल स्कोर खड़ा किया, लेकिन पंजाब किंग्स ने उसे हासिल कर लिया। इसी तरह रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु और कोलकाता नाइट राइडर्स भी 250+ का स्कोर बनाने के बावजूद हार चुकी हैं। आइए जानते हैं कि किन-किन टीमों ने यह कीर्तिमान छुआ और कब-कब इतने बड़े स्कोर बने।

आईपीएल में 250 या उससे ज्यादा रन बनाने वाली टीमों की पूरी सूची

टीम	स्कोर	ओवर	रन रेट	विपक्षी टीम	नतीजा	मैच की तिथि	शहर	मैदान
सनराइजर्स हैदराबाद	287/3	20	14.35	रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु	जीत	15 अप्रैल 2024	बेंगलुरु	एम चिन्नास्वामी स्टेडियम
सनराइजर्स हैदराबाद	286/6	20	14.3	राजस्थान रॉयल्स	जीत	23 मार्च 2025	हैदराबाद	राजीव गांधी इंटरनेशनल स्टेडियम
सनराइजर्स हैदराबाद	278/3	20	13.9	कोलकाता नाइट राइडर्स	जीत	25 मई 2025	दिल्ली	अरुण जेटली स्टेडियम
सनराइजर्स हैदराबाद	277/3	20	13.85	मुंबई इंडियंस	जीत	27 मार्च 2024	हैदराबाद	राजीव गांधी इंटरनेशनल स्टेडियम
कोलकाता नाइट राइडर्स	272/7	20	13.6	दिल्ली कैपिटल्स	जीत	03 अप्रैल 2024	विशाखापत्तनम	डॉ. वाईएस राजशेखर रेड्डी एसीए-वीडीसीए क्रिकेट स्टेडियम
सनराइजर्स हैदराबाद	266/7	20	13.3	दिल्ली कैपिटल्स	जीत	20 अप्रैल 2024	दिल्ली	अरुण जेटली स्टेडियम
पंजाब किंग्स	265/4	18.5	14.07	दिल्ली कैपिटल्स	जीत	25 अप्रैल 2026	दिल्ली	अरुण जेटली स्टेडियम
दिल्ली कैपिटल्स	264/2	20	13.2	पंजाब किंग्स	हार	25 अप्रैल 2026	दिल्ली	अरुण जेटली स्टेडियम
रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु	263/5	20	13.15	पुणे वॉरियर्स	जीत	23 अप्रैल 2013	बेंगलुरु	एम चिन्नास्वामी स्टेडियम
पंजाब किंग्स	262/2	18.4	14.03	कोलकाता नाइट राइडर्स	जीत	26 अप्रैल 2024	कोलकाता	ईडन गार्डन
रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु	262/7	20	13.1	सनराइजर्स हैदराबाद	हार	15 अप्रैल 2024	बेंगलुरु	एम चिन्नास्वामी स्टेडियम
कोलकाता नाइट राइडर्स	261/6	20	13.05	पंजाब किंग्स	हार	26 अप्रैल 2024	कोलकाता	ईडन गार्डन
लखनऊ सुपर जायंट्स	257/5	20	12.85	पंजाब किंग्स	जीत	28 अप्रैल 2023	मोहाली, चंडीगढ़	पंजाब क्रिकेट एसोसिएशन आईएस बिंद्रा स्टेडियम
दिल्ली कैपिटल्स	257/4	20	12.85	मुंबई इंडियंस	जीत	27 अप्रैल 2024	दिल्ली	अरुण जेटली स्टेडियम
पंजाब किंग्स	254/7	20	12.7	लखनऊ सुपर जायंट्स	जीत	19 अप्रैल 2026	न्यू चंडीगढ़	महाराजा यादवेंद्र सिंह अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम
रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु	250/3	20	12.5	चेन्नई सुपर किंग्स	जीत	5 अप्रैल 2026	बेंगलुरु	एम चिन्नास्वामी स्टेडियम

हरमनप्रीत कौर की कप्तानी में उतरेगी भारतीय टीम

टीम में युवा टेलेंट को मिला पूरा मौका

इंग्लैंड की मेजबानी में 12 जून से शुरू होने वाले महिला टी20 विश्व कप के लिए 2 मई 2026 को टीम इंडिया का टीम घोषित किया गया है। वनडे विश्व कप की चैंपियन कप्तान हरमनप्रीत कौर को इस टीम की कमान मिली है। वहीं स्मृति मंधाना टीम की उपकप्तान होंगी। महिला प्रीमियर लीग के कई युवा टैलेंट को भी इस टीम में जगह मिली है। भारत और पाकिस्तान के बीच हाई वोल्टेज ग्रुप चरण का मुकाबला 14 जून को एजबेस्टन में खेला जाएगा। इस हाई-वोल्टेज मैच पर दुनियाभर के क्रिकेट प्रशंसकों की नजरें रहेंगी। इसके अलावा ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका जैसे मजबूत प्रतिद्वंद्वियों के साथ भारत के मुकाबले भी रोमांचक रहने वाले हैं। भारत के इस टीम में महिला प्रीमियर लीग की कई स्टार खिलाड़ी शामिल हैं। भारती फुलमाली और नंदनी शर्मा को विश्व कप के लिए चुना गया है। इसके अलावा यास्तिका भाटिया की लंबे समय बाद भारतीय टीम में वापसी हो गई है। वनडे विश्व कप विनर हरलीन देओल, स्नेह राणा, अमनजोत कौर और प्रतिका रावल को टीम में नहीं चुना गया है।

भारतीय टीम इस वैश्विक टूर्नामेंट में हरमनप्रीत कौर की अगुआई में खेलने उतरेगी। भारत ने पिछले साल वनडे विश्व कप का खिताब अपने नाम किया था और अब टीम की नजरें अपने पहले टी20 विश्व कप खिताब पर होंगी।

टी20 विश्व कप भारतीय टीम : हरमनप्रीत कौर (कप्तान), स्मृति मंधाना (उपकप्तान), शेफाली वर्मा, जेमिमा रोड्रिग्स, भारती फुलमाली, दीप्ति शर्मा, ऋचा घोष, श्री चरणी, यास्तिका भाटिया, नंदनी शर्मा, अरुंधति रेड्डी, रेणुका ठाकुर, क्रांति गौड़, श्रेयांका पाटिल, राधा यादव।

पाकिस्तान के खिलाफ टीम इंडिया शुरू करेगी अभियान : टीम इंडिया 14 जून को अपना अभियान इस टूर्नामेंट में शुरू करेगी। भारतीय टीम का पहला मुकाबला पाकिस्तान के साथ होगा। टीम इंडिया के ग्रुप में पाकिस्तान के अलावा ऑस्ट्रेलिया और साउथ अफ्रीका भी मौजूद हैं। वहीं क्वालिफायर के बाद बांग्लादेश और नीदरलैंड्स इस ग्रुप का हिस्सा बनीं। अब इस टूर्नामेंट के लिए सभी 12 टीमों के नाम तय हैं। साथ ही भारतीय टीम को इस साल लॉर्ड्स में इंग्लैंड के खिलाफ एक टेस्ट मैच भी खेलना है। उसके लिए भी टीम इंडिया का रेड बॉल स्क्वॉड चुना गया है। इस टीम की कप्तानी भी हरमनप्रीत कौर करेंगी। इस टीम में प्रतिका रावल को चुना गया है।

इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट के लिए भारतीय महिला टीम का : हरमनप्रीत कौर (कप्तान), स्मृति मंधाना (उपकप्तान), शेफाली वर्मा, जेमिमा रोड्रिग्स, प्रतिका रावल, दीप्ति शर्मा, ऋचा घोष (विकेटकीपर), श्री चरणी, यास्तिका भाटिया (विकेटकीपर), नंदनी शर्मा, हरलीन देओल, रेणुका ठाकुर, क्रांति गौड़, सयाली सतघरे, स्नेह राणा।

भारत-पाकिस्तान एक ही ग्रुप में : टी20 विश्व कप के लिए 12 टीमों को छह-छह के दो ग्रुप में बांटा गया है। भारतीय टीम ग्रुप-1 में शामिल है। ग्रुप-1 को 'ग्रुप ऑफ डेथ' माना जा रहा है, जहां मौजूदा दिग्गज टीमों के साथ भारत-पाकिस्तान की पारंपरिक प्रतिद्वंद्विता भी देखने को मिलेगी।

- **ग्रुप 1 :** ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका, भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नीदरलैंड।
- **ग्रुप 2 :** वेस्टइंडीज, इंग्लैंड, न्यूजीलैंड, श्रीलंका, आयरलैंड, स्कॉटलैंड।

– एनएसटी इंटरनेट डेस्क

IPL का रोमांच चरम पर

आईपीएल 2026 में दिल्ली कैपिटल्स के सलामी बल्लेबाज केएल राहुल का बल्ला जमकर रन उगल रहा है। राहुल सिर्फ रन ही नहीं बना रहे, बल्कि लंबे-लंबे छक्के और दर्शनीय चौके भी लगा रहे हैं। 1 मई 2026 को जयपुर में राहुल ने राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ 40 गेंदों पर 75 रन की पारी खेली थी। इस पारी में उन्होंने पांच छक्के लगाए। इस दौरान राहुल के नाम एक बेहद खास रिकॉर्ड दर्ज हो गया। केएल राहुल आईपीएल में बतौर ओपनर 200 छक्के लगाने वाले पहले भारतीय बल्लेबाज बन गए हैं। इससे पहले केएल राहुल पंजाब के खिलाफ रिकॉर्ड 67 गेंद पर 152 * (16 चौके और 9 छक्के) के साथ भारत के पहले आईपीएल खिलाड़ी बन चुके हैं, जिन्होंने 150 रन का आंकड़ा पार किया है।

इस बार आईपीएल का फैसला पावर प्ले ओवर करने वाले हैं

ओपनर की धूम का सीजन बन गया है ये

चरनपाल सिंह सोबती
खेल समीक्षक

24 मई को जब इस साल के आईपीएल में ग्रुप मैच पूरे होंगे तो कौन सी टीमें प्ले ऑफ में खेलेंगी या इसके बाद के नॉक आउट मैच किस टीम को आईपीएल ट्रॉफी तक पहुंचाएंगे, ऐसी भविष्यवाणी करना बड़े जोखिम का काम है। तब भी इस सीजन में अब तक जैसा क्रिकेट खेले हैं, उसके आधार पर कुछ बातें तो सामने हैं जो इस सीजन को सबसे अलग साबित कर रही हैं...

- इस बार पावर प्ले में जो क्रिकेट खेला जा रहा है उसका मैच पर असर इतना गहरा पड़ रहा है कि मैच का फैसला करने में, आम तौर पर, ये खास भूमिका निभा रहे हैं। बाउंड्री लगाना ही पहला धर्म है, ये सोच बन गई है बल्लेबाज की और इस धर्म को निभाने वालों की गिनती बढ़ रही है। इसका नतीजा ये कि 2008 में आईपीएल के पहले सीजन जो रन बनने की तेजी प्रति ओवर 7.7 दर्ज हुई, वह अगर 2018 तक 8.42 रन प्रति ओवर तक आ गई थी तो इस सीजन में 9 से काफी ऊपर है, और टूर्नामेंट पूरा होने तक ये गिनती 10 को भी पार कर चुकी हो तो कोई हैरानी नहीं होगी।
- आईपीएल सीजन 2026 की 29 अप्रैल तक की अंक तालिका देखें तो जहां एक तरफ एक बार भी आईपीएल न जीती, पंजाब किंग्स सबसे ऊपर है, 3 खिताब जीत चुकी कोलकाता नाइट राइडर्स नंबर 8 और 5 खिताब जीत चुकी मुंबई इंडियंस नंबर 9 है जबकि 5 बार आईपीएल खिताब जीत चुकी चेन्नई सुपर किंग्स पहली 5 टीम में भी नहीं है। कुछ दिन पहले तो ये स्थिति थी कि मिलकर 18 में से 13 बार ट्रॉफी जीत चुकी मुंबई, चेन्नई और कोलकाता की पुरानी टीमें आखिरी 5 टीम में थीं। ऐसा नहीं कि ऐसा अजीब नजारा इस सीजन में ही देखने को मिला है। इसके संकेत तो मिलने लगे थे पर अब ये तय हो गया है कि इन पुरानी दिग्गज टीमों

वैभव सूर्यवंशी

अभिषेक शर्मा

का खौफ खत्म और अब मैच खेला तो इनका पहले से डर वाला माहौल खत्म।

- इन दोनों बड़े बदलाव के लिए जिम्मेदार तो कई मुद्दे हैं, वे पहले भी थे पर उनका फायदा दूसरी टीमों ने देरी से उठाया। जब पिछले 18 सीजन में से, हर सीजन के साथ खेल बदलता रहा, इसे खेलने वाले बदलते रहे तो कोलकाता नाइट राइडर्स, मुंबई इंडियंस और चेन्नई सुपर किंग्स जैसी पुरानी और दिग्गज टीम अपनी सोच और खेल के स्तर में वहीं रह गईं, जबकि अन्य दूसरी टीम बदलाव के साथ आधुनिक टी20 खेलने के तरीकों को अपनाते हुए बहुत आगे निकल गईं। आईपीएल 2026 कोई भी जीते, इतना लगभग तय है कि कोलकाता नाइट राइडर्स, मुंबई इंडियंस और चेन्नई सुपर किंग्स स्तर की दौड़ में बहुत पीछे हैं।

आईपीएल में सबसे ज्यादा 200+ टीम स्कोर की गिनती देखें तो ये बात अपने आप समझ आ जाएगी। 29 अप्रैल 2026 तक चेन्नई और बेंगलुरु टीम ने अगर ये रिकॉर्ड 39-39 बार बनाया तो उनके मुकाबले पर कहीं न गिनी जाने वाली पंजाब किंग्स ऐसे 37 स्कोर बना चुकी है और वे इस मामले में 34 बार ये रिकॉर्ड बनाने वाले मुंबई इंडियंस को भी पार कर चुके हैं।

तो इस सब का वह क्या नतीजा है जो इस सीजन में खेली क्रिकेट पर असर डाल रहा है? इन सभी बड़े मुद्दों ने अंक तालिका में ऊपर रहने वाली टीम और जूझ रही टीम के बीच का फर्क बड़ा कम कर दिया है जिससे लीग अब पहले से कहीं ज्यादा मुकाबले वाली हो गई है। देख लीजिए टी20 खेलने के आधुनिक तरीकों को अपनाने में हुई देरी से आए फर्क का- इस सीजन में 200 रन बनाने या पावर प्ले में ज्यादा रन बनाने/विकेट लेने की दौड़ में कोलकाता नाइट राइडर्स, मुंबई इंडियंस और चेन्नई सुपर किंग्स सबसे पीछे हैं।

क्रिकेटरों की नई पीढ़ी इन टीम से डरती नहीं है क्योंकि वे इसी के साथ बड़े हुए हैं। जसप्रीत बुमराह दुनिया भर के बल्लेबाजों को परेशान कर रहे हैं पर इस सीजन में उन्हें अपने पहले 8 मैच में सिर्फ 2 विकेट मिले और पहले 5 मैच में तो एक भी विकेट नहीं मिला था।

ये मैच-अप्स और एनालिटिक्स का दौर है। अब आईपीएल मैच-अप्स और एनालिटिक्स फैसला करते हैं। गेंदबाज को सिर्फ गेंद की तेजी से विकेट नहीं मिलता। हर बल्लेबाज के लिए अलग स्कीम और इसे बनाने में कोचिंग स्टाफ का बोर्ड पर किया काम, कारगर साबित होता है। इसलिए ही बुमराह को विकेट नहीं मिले जबकि उनसे कम टैलेंट वाले बेहतर स्कीम के साथ विकेट ले गए। बड़े खिलाड़ी अब 'पढ़े' जाते हैं, दूसरी टीमें उनके खेल के तरीके का अध्ययन करती हैं और उन्हें रोकने की तैयारी करती हैं।

सब जानते हैं कि मुंबई इंडियंस एक बड़ी टीम है पर उनके टॉप खिलाड़ियों का गिरता प्रभुत्व टीम के हाल के साधारण रिकॉर्ड में साफ झलकता है। उनके बड़े खिलाड़ी कब से ऐसा नहीं खेले हैं कि प्लेयर ऑफ द मैच का अवार्ड जीत लें? लिस्ट से अपने आप अंदाजा हो जाएगा कि क्यों ये टीम लगातार साधारण रिकॉर्ड के साथ खेल रही है- तिलक वर्मा ने अप्रैल 2026 में ये सम्मान जीता पर रोहित शर्मा - मई 2025, सूर्यकुमार - मई 2025, रयान रिकलेटन - मई 2025, विल जैक्स - अप्रैल 2025, ट्रेंट बोल्ट - अप्रैल 2025, अश्वनी कुमार - मार्च 2025, जसप्रीत बुमराह - अप्रैल 2024 और हार्दिक पांड्या - मई 2019 में आखिरी बार इस टीम के लिए खेलते हुए ये सम्मान जीते थे।

सिर्फ विरासत और रुतबे के दम पर अब कोई टीम आगे नहीं बढ़ सकती। बड़े-बड़े नाम वाले खिलाड़ियों से ज्यादा जरूरी है, टीम का एक जुट हो प्रदर्शन। पहले टीमें खिलाड़ियों के बड़े नाम और मशहूरी पर चलती थीं। इससे जीत की पहली मंज़िल तो आसानी से पार हो जाती थी। अब टीम मिलकर मैच जीतती हैं। 29 अप्रैल तक सनराइजर्स हैदराबाद ने इस सीजन में 6 मैच जीते हैं और 6 अलग-अलग खिलाड़ियों ने प्लेयर ऑफ द मैच जीता है- नीतीश, प्रफुल्ल, मलिंगा, अभिषेक, ईशान और क्लासेन। जब पूरी टीम इस तरह से अच्छा खेलती है तो जीत का सिलसिला जारी रहता है। लगभग यही स्थिति पंजाब किंग्स में है।

इसलिए हर खिलाड़ी का डर है। संजू सैमसन, वैभव सूर्यवंशी, प्रभासिमरन सिंह, प्रियांश आर्य, साकिब हुसैन और मुकेश कुमार भी किसी भी मैच का पासा पलट सकते हैं। कब कौन किस तेजी से रन बना दे, कोई नहीं जानता। इसलिए सब

प्रभासिमरन और प्रियांशु आर्य

टीम बराबर हैं जीत के मौके में। जो सही मौके पर बेहतर खेल गया, वह जीत गया।

मार्कस स्टोइनिस के शानदार 22 गेंदों में नाबाद 62 बेकार गए क्योंकि पंजाब किंग्स टीम महाराजा यादवेंद्र सिंह इंटरनेशनल स्टेडियम में राजस्थान रॉयल्स के विरुद्ध 222 रन के स्कोर का बचाव करने में नाकाम रही। कुछ दिन पहले,पंजाब किंग्स ने भी कुछ ऐसा ही किया था, दिल्ली कैपिटल्स के विरुद्ध 265 रन के लक्ष्य का हासिल करने का नया रिकॉर्ड बनाते हुए।

इस आईपीएल सीजन में जीत का नया फार्मूला है पावरप्ले में प्रदर्शन। पंजाब किंग्स के 1 विकेट पर 65 रन के जवाब में रॉयल्स ने पहले 6 ओवर में एक विकेट पर 84 रन बनाए। इसी तरह, दिल्ली कैपिटल्स ने पंजाब किंग्स के विरुद्ध एक विकेट पर 68 रन बनाए। विश्वास कीजिए इस सीजन में पावरप्ले ओवरों ने 73.68 प्रतिशत मैच का फैसला किया है अब तक और ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। पावरप्ले में बाउंड्री को लक्ष्य बनाने वाले बल्लेबाज की गिनती में लगातार बढ़ोतरी हुई है जिसका सबूत पहले सीजन से बड़े रन बनने की तेजी में साफ मिल रहा है।

ऐसे संकेत हैं कि आने वाले अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट सीजन के लिए भारतीय क्रिकेट बोर्ड एक साथ दो टीम बनाने के बारे में सोच रहा है। साफ इशारा है कि देश में इतनी क्रिकेट प्रतिभा मौजूद है कि एक टीम बनाने पर हर किसी को मौका नहीं मिल पा रहा है। उपलब्ध प्रतिभा का अंदाजा लगाने के लिए ओपनर के पॉवर प्ले में प्रदर्शन को देखने से बेहतर संकेत और क्या होगा?

इस समय तूफान आया हुआ है प्रियांश आर्य, अभिषेक शर्मा और वैभव सूर्यवंशी के नाम से। तीनों कमाल के ओपनर और ऐसे कि मानो खुद ही ये तय कर दें कि मैच पर कौन सी टीम भारी है? अद्भुत नजारा ये कि इनमें से दो तो इस वक्त टी20 के लिए टीम इंडिया में भी नहीं है और प्रियांश या वैभव सूर्यवंशी को टीम में जगह देने का मतलब है कि अभिषेक शर्मा या संजू सेमसन में से किसी को बाहर करना। आईपीएल 2026 ने साबित कर दिया है कि इन तीनों के सामने किसी की भी खैर नहीं। सबूत पावरप्ले में स्ट्राइक रेट के तौर पर सामने है और ये तीनों इस सीजन में पावर प्ले में स्ट्राइक रेट में सबसे ऊपर हैं...

प्रियांश आर्य - 252.63

अभिषेक शर्मा - 251.23

वैभव सूर्यवंशी - 251.02

3 ऐसे खब्बू सलामी बल्लेबाज भारत के अतिरिक्त और किसी देश में होते तो अब तक तीनों ही अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट खेल रहे होते, न कि अकेले अभिषेक शर्मा। स्ट्रोक यूं लगते हैं मानो क्रिकेट को गोल्फ की तरह खेल रहे हों। टी20 क्रिकेट में गेंद को बाउंड्री पार भेजने के लिए बल्लेबाज अब बड़ी होशियारी से फुटवर्क के साथ-साथ बैट स्विंग का भी इस्तेमाल कर रहे हैं और वही है इन तीनों के बेहतर स्ट्राइक रेट का राज।

अभिषेक शर्मा के 6 मारने के अंदाज में अगर युवराज सिंह और ब्रायन लारा की मिली-जुली स्टाइल नजर आती है तो वैभव सूर्यवंशी की ताकत उनके फुटवर्क से ज्यादा उनकी बैट की रफ्तार में है जिसके लिए वे फ्री स्विंग का इस्तेमाल करते हैं। इसलिए ही तो उनके बैट में चिप का मुद्दा सोशल मीडिया पर खूब चर्चा में रहा। प्रियांश आर्य की तकनीक बैट को साफ-सुथरे ढंग से घुमाने पर है, जिससे वह बिना बड़े-बड़े कदम लिए सीधे बैट से शॉट लगा लेते हैं और आम तौर पर 'ऑन-साइड' में 6 मारते हैं।

आईपीएल 2026 में सबसे ज्यादा पावर प्ले छक्के लगाने में 29 अप्रैल तक 29 छक्के के साथ वैभव सूर्यवंशी लिस्ट में सबसे ऊपर हैं। उसके बाद 22- अभिषेक शर्मा, 20- प्रियांश आर्य, 12- ट्रैविस हेड एवं प्रभासिमरन सिंह तथा 10- रयान रिकेल्टन और यशस्वी जायसवाल का नाम है।

अगर इसी रिकॉर्ड को 2025 आईपीएल को शामिल कर देखें तो छक्के की गिनती और साथ में कितनी गेंद पर एक 6 के रिकॉर्ड में लिस्ट में ऊपर से नाम हैं- श्रेयस अय्यर- 61 (8.55), वैभव सूर्यवंशी- 61 (4.74), अभिषेक शर्मा- 56 (7.25), प्रियांश आर्य- 51 (7.41) और मिशेल मार्श- 48 (11.29) का। इस लिस्ट को देख साफ पता चल जाता है कि किस तरह से नए नाम हावी हो रहे हैं।

आईपीएल 2026 में पावरप्ले में इसीलिए वैभव सूर्यवंशी, प्रियांश आर्य और अभिषेक शर्मा के 4 और 6 की गिनती ने दूसरी टीमों के गेंदबाजों का रिकॉर्ड बिगाड़ दिया है। कुछ पैरामीटर पर इनका प्रदर्शन देखिए...

प्रति 6 गेंद में बनाए रन की औसत गिनती : हर 6 गेंद में प्रियांश ने 4.21, अभिषेक ने 4.5 और वैभव ने सबसे ज्यादा 5.11 रन बनाए हैं।

पावर प्ले में बल्लेबाजी का औसत : इस मामले में भी वैभव बाकी दोनों से आगे हैं। जहां वैभव सूर्यवंशी 108.5 के औसत से रन बना रहे हैं, अभिषेक ने 66.33 और प्रियांश ने 50.67 का औसत दर्ज किया है।

औसतन कितनी गेंद के बाद एक बाउंड्री : इस मामले में भी पावर प्ले में वैभव सूर्यवंशी का रिकॉर्ड प्रियांश आर्य और अभिषेक शर्मा से बेहतर है। अगर वैभव सूर्यवंशी ने औसतन हर 2.175 गेंद के बाद एक बाउंड्री शॉट लगाया तो प्रियांश ने हर 2.26 गेंद में और अभिषेक ने 2.31 गेंद में।

इस तरह का रिकॉर्ड कई जानकार की नजर में पागलों जैसी बल्लेबाजी की झलक देता है और क्रिकेट पंडित इन तीनों की हिटिंग देख, हैरान हैं। जिस दिन इन तीनों में से किसी को भी सही साथ मिला तो टीम का स्कोर 300 पर पहुंचना महज

यशस्वी जायसवाल

एक औपचारिकता सा रह जाएगा।

पावर प्ले में रन बनाने में जो तेजी 2024 सीजन से नजर आई है उसका जवाब नहीं है। शिखर धवन जैसे बल्लेबाज ने पावर प्ले में रन बनाने को एक हथियार के तौर पर इस्तेमाल किया पर इन तीनों ने तो पावर प्ले की बैटिंग से दूसरी टीम के आक्रमण को तहस-नहस ही कर दिया। अब इन तीन का ये प्रभुत्व भारत के चयनकर्ताओं के लिए भी एक सवाल बना हुआ है।

पंजाब किंग्स के सहायक कोच ब्रैड हैडिन ने कहा, 'हम जो देख रहे हैं वह पूरे टूर्नामेंट में एक परंपरा सा बन गया है, टीमें पहले 6 ओवर में कितनी हावी रहती हैं? पावरप्ले में जिस तरह से टीमें खेल रही हैं, उसे देखते हुए अब टीमों को रोकना बहुत मुश्किल है। आपके पास खिलाड़ी बदलने का विकल्प भी है, जिससे टीम अपनी बल्लेबाजी को और बेहतर बना सकती हैं तथा और भी ज्यादा मेहनत कर सकती हैं।'

अंक तालिका पर एक नजर डालने से यह भी पता चलता है कि किन टीमों ने मैच जल्दी शुरू करने या खत्म करने का यह तरीका अपनाया है। पंजाब, रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु, सनराइजर्स हैदराबाद और राजस्थान, जो अभी टॉप चार में हैं, उनके टॉप तीन बल्लेबाज, खासकर ओपनर, भी सबसे अच्छे खेल रहे हैं। प्रभासिमरन सिंह और प्रियांश आर्य ने 205.55 के स्ट्राइक रेट से रन बनाए हैं, इसके बाद रॉयल्स के ओपनर यशस्वी जायसवाल और वैभव सूर्यवंशी ने 195.56 के स्ट्राइक रेट से रन बनाए हैं। अभिषेक शर्मा और ट्रैविस हेड 183.17 के स्ट्राइक रेट से रन बना रहे हैं, जबकि विराट कोहली और फिल सॉल्ट/जैकब बेथेल ने 164.42 के स्ट्राइक रेट से रन बनाए हैं।

पुरानी और दिग्गज टीम का मौजूदा सीजन में अब पीछे रहना टीमों में अस्थिरता का संकेत है और खिलाड़ी इस्तेमाल करने में ये सबसे आगे हैं। 29 अप्रैल तक इस सीजन में मुंबई इंडियंस ने 22, चेन्नई सुपर किंग्स और दिल्ली कैपिटल्स ने 19-19 खिलाड़ियों का इस्तेमाल किया है।

रन बनाने की तेजी का अंदाजा इसी से लगा सकते हैं कि ईडन गार्डन्स में 262 रन को हासिल करने के दो साल बाद, पंजाब किंग्स ने अरुण जेटली स्टेडियम में 265 रन का पीछा कर फिर से इतिहास लिख दिया और टी20 के इतिहास में सबसे सफल रन चेज का रिकॉर्ड बनाया। यहां तक कि दिल्ली कैपिटल्स के विरुद्ध तो जब जीते तो 7 गेंद बाकी थीं।

इस मैच में जब दिल्ली कैपिटल्स ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 264/2 का स्कोर बनाया तो सोचा भी न होगा कि वे हार जाएंगे और केएल राहुल के जिन रिकॉर्ड 67 गेंद पर 152* (16 चौके और 9 छक्के) से ये स्कोर बना, वह हारने वाली टीम के लिए बनाए गिने जाएंगे। **इस स्कोर से बने कुछ खास रिकॉर्ड...**

- केएल राहुल टी20 में एक पारी में 150 रन बनाने वाले पहले भारतीय बल्लेबाज बन गए।
- आईपीएल में 150 से ज्यादा का स्कोर इससे पहले सिर्फ दो बल्लेबाज (क्रिस गेल और ब्रेंडन मैकुलम) ने बनाया था।
- आईपीएल में किसी भारतीय का सबसे बड़ा पिछला स्कोर, पिछले सीजन में अभिषेक शर्मा (141) ने बनाए थे।

ये भी जरूरी नहीं रहा कि सिर्फ बड़े स्कोर वाले मैच ही रोमांचक साबित हुए। सबसे नीचे रहने वाली टीमों के बीच मुकाबले में, कोलकाता नाइट राइडर्स ने उतार-चढ़ाव वाले मुकाबले में सुपर ओवर में लखनऊ सुपर जायंट्स को हराया और पूरे मैच में सबसे खास रोल रिंकू सिंह ने निभाया। और भी मजेदार बात तो ये कि सुपर ओवर दोनों पारी में सिर्फ 4 गेंद चले।

वैभव सूर्यवंशी ने आईपीएल 2026 के दौरान जो तूफान अपने बैट से मचाया हुआ है उसकी धूम भारत से बाहर भी हो रही है। यूं तो वैभव ने कई रिकॉर्ड बनाए और हर दिन बना रहे हैं पर साथ में बने बॉक्स से ये अंदाजा हो जाएगा कि ये खिलाड़ी क्या कर रहा है?

अब इंतजार करें आईपीएल फाइनल का। जो इन नए तरीके से खेलेगा, वही चैंपियन बनेगा। इसलिए जितना मौका बेंगलुरु टीम के पास है, उतना ही पंजाब, हैदराबाद और राजस्थान रॉयल्स के पास।

वैभव सूर्यवंशी के कुछ बड़े रिकॉर्ड

- टी20 में सिर्फ 473 गेंदों में 1000 रन बनाने वाले सबसे कम उम्र के खिलाड़ी।
- एक सीजन में सबसे तेज 400, 167 गेंदों में इस मंजिल को हासिल किया।
- एक पारी में 12 छक्के मारे, जो किसी भारतीय द्वारा सबसे ज्यादा हैं।
- आईपीएल में पहले ओवर में 4 छक्के मारने वाले पहले खिलाड़ी।
- 40 गेंदों से कम में दो बार शतक बनाने वाले इकलौते खिलाड़ी।
- 15 गेंदों या उससे कम में सबसे ज्यादा आईपीएल 50 (3)।

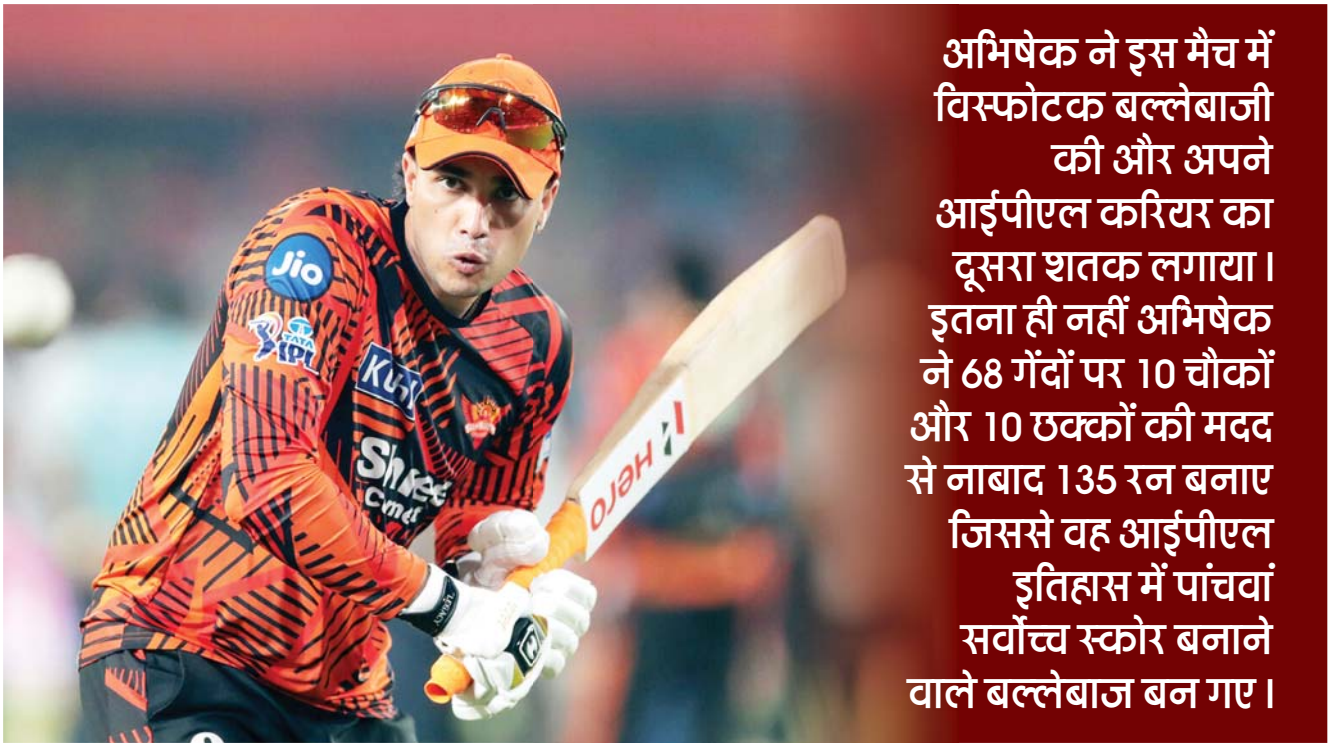

अभिषेक ने इस मैच में विस्फोटक बल्लेबाजी की और अपने आईपीएल करियर का दूसरा शतक लगाया। इतना ही नहीं अभिषेक ने 68 गेंदों पर 10 चौकों और 10 छक्कों की मदद से नाबाद 135 रन बनाए जिससे वह आईपीएल इतिहास में पांचवां सर्वोच्च स्कोर बनाने वाले बल्लेबाज बन गए।

अभिषेक शर्मा ने टी20 क्रिकेट में बनाया नया कीर्तिमान

अभिषेक शर्मा ने 21 अप्रैल को हैदराबाद में दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ आईपीएल 2026 के मुकाबले में शानदार प्रदर्शन करते हुए नया कीर्तिमान बना लिया है। अभिषेक ने इस मैच में विस्फोटक बल्लेबाजी की और अपने आईपीएल करियर का दूसरा शतक लगाया। इतना ही नहीं अभिषेक ने 68 गेंदों पर 10 चौकों और 10 छक्कों की मदद से नाबाद 135 रन बनाए जिससे वह आईपीएल इतिहास में पांचवां सर्वोच्च स्कोर बनाने वाले बल्लेबाज बन गए। सनराइजर्स हैदराबाद ने अभिषेक शर्मा की नाबाद शतकीय पारी के दम पर दिल्ली कैपिटल्स को 243 रनों का लक्ष्य दिया है।

दामोदर प्रसाद आर्य
खेल समीक्षक-कमेंटेटर

अभिषेक ने इस मैच में शानदार बल्लेबाजी की जिससे हैदराबाद ने 20 ओवर में दो विकेट पर 242 रन बनाए। दिल्ली कैपिटल्स ने इस मैच में टॉस जीतकर हैदराबाद को पहले बल्लेबाजी का न्योता दिया। हैदराबाद की बल्लेबाजी शुरुआत से ही विस्फोटक रही, लेकिन अभिषेक के अलावा अन्य कोई बल्लेबाज 50+ स्कोर नहीं बना सका। अभिषेक के अलावा ट्रेविस हेड ने 37 और कप्तान ईशान किशन ने 25 रन बनाए, जबकि हेनरिच क्लासेन 13 गेंदों पर तीन चौकों और तीन छक्कों की मदद से 37 रन बनाकर नाबाद रहे। दिल्ली के लिए अक्षर पटेल ने एक विकेट लिया।

आईपीएल के हर सीजन में कोई न कोई बल्लेबाज अपनी पारी से ध्यान खींचता है। आईपीएल में सर्वोच्च स्कोर बनाने का रिकॉर्ड क्रिस गेल का नाम है, जिन्होंने 2013 में पुणे के खिलाफ आरसीबी के लिए खेलते हुए नाबाद 175 रन बनाए थे। गेल ने एक ऐसा कीर्तिमान स्थापित किया जिसे आज तक कोई नहीं तोड़ सका है। इसके बाद ब्रेंडन मैकुलम की नाबाद 158 रन की वह पारी आती है जिसने 2008 में आईपीएल के पहले ही मैच में तहलका मचा दिया था। हाल के वर्षों में अभिषेक शर्मा एक उभरते हुए सितारे के रूप में सामने आए हैं। अभिषेक ने 2025 में 141 रन बनाए थे जो आईपीएल इतिहास का तीसरा सर्वोच्च स्कोर है। वहीं, चौथे स्थान पर क्विंटन डिकॉक हैं जिन्होंने 2022 में नाबाद 140 रन बनाए थे। अभिषेक के नाम अब पांचवां सर्वोच्च स्कोर बनाने का कीर्तिमान भी जुड़ गया है।

टी20 क्रिकेट में अभिषेक शर्मा ने एक ऐसा कीर्तिमान स्थापित कर लिया है जिसने दिग्गज बल्लेबाजों को भी पीछे छोड़ दिया है। सर्वाधिक बार टी20 की एक ही पारी में 130 से अधिक रन बनाने का कारनामा उन्होंने अब तक चार बार कर दिखाया है, जो उनसे ज्यादा बार कोई नहीं कर सका है। इस मामले में उन्होंने टी20 के महानतम खिलाड़ियों, क्रिस गेल और आरोन फिंच को भी पछाड़ दिया है, जिन्होंने नाम तीन-तीन बार एक पारी में 130+ स्कोर बनाए हैं। इतना ही नहीं, अभिषेक ने टी20 क्रिकेट में 350 छक्के भी पूरे कर लिए हैं।

अभिषेक ने टी20 क्रिकेट में नौवां शतक लगाया : अभिषेक ने टी20 क्रिकेट में यह नौवां शतक लगाया है। इस शतक के साथ ही अभिषेक ने विराट कोहली के रिकॉर्ड की बराबरी कर ली है। वह भारत की ओर से टी20 क्रिकेट में सबसे ज्यादा शतक लगाने वाले संयुक्त रूप से पहले बल्लेबाज बन गए हैं। कोहली और अभिषेक ने क्रिकेट के सबसे छोटे फॉर्मेट में नौ शतक लगाए हैं। टी20 क्रिकेट में सबसे ज्यादा शतक लगाने का रिकॉर्ड क्रिस गेल के नाम है, जिन्होंने इस फॉर्मेट में 22 शतक लगाए हैं। अभिषेक शर्मा ने टी20 क्रिकेट में 350 छक्के भी पूरे कर लिए हैं। इसके साथ ही आईपीएल में अभिषेक ने दूसरी बार एक पारी में 10 छक्के लगाए हैं। इस लिस्ट में अभिषेक से आगे सिर्फ क्रिस गेल हैं, जिन्होंने चार बार एक पारी में 10 या उससे ज्यादा छक्के लगाने का कारनामा किया है। वहीं, टी20 क्रिकेट में अभिषेक ने पांचवीं बार एक पारी में 10 या उससे ज्यादा छक्के लगाने के साथ ही श्रेयस अय्यर (4) को पीछे छोड़ दिया है।

रातों-रात चमके सनराइजर्स के दो युवा टेलेंट

आईपीएल 2026 का 21वां मैच पूरी तरह से सनराइजर्स हैदराबाद के नाम रहा। इस मुकाबले में हैदराबाद की टीम ने दोनों विभाग में लगातार चार मैच जीतकर आई राजस्थान रॉयल्स की टीम को पीट दिया। इसका सबसे बड़ा श्रेय जाता है, सनराइजर्स के दो डेब्यूटेंट भारतीय तेज गेंदबाजों को। अभी तक इस सीजन बल्लेबाजी में वैभव सूर्यवंशी, मुकुल चौधरी, समीर रिजवी जैसे खिलाड़ियों ने कमाल किया था। अब गेंदबाजी में भी भारत का युवा टैलेंट सामने आ गया है। यह दो नाम हैं प्रफुल्ल हिंगे और साकिब हुसैन के। यह दोनों खिलाड़ी सनराइजर्स हैदराबाद की टीम में एक नए युग की शुरुआत लेकर आए। कप्तान इशान किशन ने अनुभवी हर्षल पटेल और जयदेव उनादकट को टीम से बाहर किया और दोनों खिलाड़ियों को डेब्यू का मौका मिला। प्रफुल्ल हिंगे ने जहां पहले ओवर से ही मैच की तस्वीर पलट दी और वैभव सूर्यवंशी, ध्रुव जुरेल, लुहान प्रेटोरियस को डक पर आउट कर राजस्थान की कमर तोड़ दी। उनके बाद साकिब हुसैन ने भी कमाल की गेंदबाजी की।

कौन हैं साकिब हुसैन : साकिब हुसैन का जन्म बिहार के गोपालगंज में हुआ था। यह खिलाड़ी आईपीएल में नया नहीं है लेकिन बस खेलने पहली बार उतरा। इससे पहले 2024 में केकेआर के लिए इस खिलाड़ी को स्क्वाड में जगह मिली थी। मगर कोलकाता के लिए यह खिलाड़ी खेल नहीं पाया। उसके बाद आईपीएल 2026 के ऑक्शन में सनराइजर्स हैदराबाद ने 30 लाख के बेस प्राइस पर 21 साल के पेसर को खरीदा। यह फैसला सही था, इसे साकिब ने अपने यादगार डेब्यू से साबित किया।

पिता किसान, माता ने गहने बेच दिलाए थे जूते : राजस्थान के खिलाफ 4 ओवर में महज 24 रन देकर चार विकेट लेते हुए साकिब ने अपने पिता और माता के संघर्ष का मूल अदा किया। साकिब का एक पुराना वीडियो है जब वह केकेआर का हिस्सा थे, उसमें उन्होंने पूरी कहानी बताई थी। उनके पिता एक साधारण किसान थे। जब घर में उनकी कमाई से गुजर नहीं होता था तो वह मजदूरी भी करते थे। जब वह घुटनों के दर्द से परेशान हुए तो घर चलाने में और दिक्कत होने लगी।

साकिब को भी कई बार घर चलाने के लिए 500-700 रुपये में टेनिस बॉल से मैच खेलना पड़ता था। जब साकिब का रणजी टीम में बिहार के लिए चयन हुआ तो उनके पास जूते नहीं थे। अक्सर उनको फटे जूतों से खेलना पड़ता था, तो उनकी मां ने उनके लिए अपने गहने बेचकर जूते भी खरीदे। हालांकि, साकिब का परिवार चाहता था कि वह भारतीय सेना में जाएं और परिवार के लिए एक कमाई का कोई साधन आए, लेकिन भगवान के घर में देर है अंधेर नहीं, आज उनके माता-पिता का सपना पूरा हुआ जब उनके बेटे ने बॉर्डर नहीं लेकिन क्रिकेट के मैदान पर, आईपीएल 2026 में यादगार डेब्यू किया और सुर्खियां बटोरीं।

कैसा रहा साकिब का करियर रिकॉर्ड : साकिब के घरेलू क्रिकेट में प्रदर्शन की बात करें तो 2022-23 में सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी के जरिए उन्होंने टी20 डेब्यू किया था। तब उनकी उम्र 17 साल थी और उन्होंने अपने दूसरे ही मैच में 20 रन देकर चार विकेट लेते हुए इस गेंदबाज ने जलवा बिखेर दिया था। साकिब ने इसके बाद रणजी ट्रॉफी 2025-26 में अरुणाचल प्रदेश के सामने 41 रन देकर छह विकेट लेकर तहलका मचाया।

अपने डेब्यू के शानदार प्रदर्शन के बाद साकिब हुसैन व प्रफुल हिंगे।

साकिब हुसैन और प्रफुल्ल हिंगे ने सनराइजर्स हैदराबाद को इस सीजन के बीच एक नई ऊर्जा प्रदान की है। इन दोनों खिलाड़ियों ने इस मैच में 4-4 विकेट लेकर एक खास रिकॉर्ड लिस्ट में भी जगह बनाई। दोनों का बेस्ट आईपीएल डेब्यू करने वाले खिलाड़ियों की लिस्ट में भी नाम दर्ज हो गया है। इस लिस्ट में उनसे पहले सिर्फ एक भारतीय खिलाड़ी ही था। अब यह दोनों भी इसका हिस्सा बन गए हैं।

कौन हैं प्रफुल्ल हिंगे : पहले ओवर में वैभव सूर्यवंशी समेत 3 खिलाड़ियों को नहीं खोलने दिया खाता : आईपीएल 2026 के 21वें मैच में प्रफुल्ल हिंगे ने अपने पहले ओवर में ही जलवा बिखेर दिया। उन्होंने पहले ओवर में वैभव सूर्यवंशी, ध्रुव जुरेल और लुहान प्रेटोरियस को खाता नहीं खोलने दिया। इसके बाद रियान पराग को भी उन्होंने पवेलियन भेजा। सनराइजर्स हैदराबाद ने आईपीएल 2026 के 21वें मैच में राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ अपनी प्लेइंग 11 में प्रफुलहिंगे को शामिल किया। प्रफुल ने अपने डेब्यू मैच में ही फिर वो कमाल कर दिया और आईपीएल इतिहास में किसी भी खिलाड़ी ने नहीं किया था। यही नहीं प्रफुल ने शोएब अख्तर समेत 4 खिलाड़ियों की बराबरी भी कर ली।

प्रफुल ने रचा इतिहास : प्रफुल हिंगे ने राजस्थान के खिलाफ पारी के पहले ही ओवर में 3 विकेट झटके और आईपीएल इतिहास में बतौर डेब्यूटेंट पहले ओवर में 3 विकेट लेने वाले पहले गेंदबाज बने। प्रफुल ने वैभव सूर्यवंशी, ध्रुव जुरेल और लुआन-ड्रे प्रिटोरियस को आउट कर राजस्थान को पूरी तरह से बैकफुट पर धकेल दिया। ये तीनों बल्लेबाज तो खाता भी नहीं खोल पाए। प्रफुल की गेंदबाजी का इन सभी बल्लेबाजों को पास कोई जवाब नहीं था और सबने उनके सामने सरेंडर कर दिया। प्रफुल ने इस लीग में 1191 मैचों के बाद पहले ओवर में 3 विकेट लेने का कमाल किया।

आईपीएल डेब्यू में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन

- 6/12 : अल्जारी जोसेफ (MI) vs SRH, हैदराबाद, 2019
- 5/17 : एंड्रू टाई (GL) vs RPS, राजकोट, 2017
- 4/11 : शोएब अख्तर (KKR) vs DC, कोलकाता, 2008
- 4/26 : केवोन कूपर (RR) vs PBKS, जयपुर, 2012
- 4/24 : अश्वनि कुमार (MI) vs KKR, मुंबई, 2025
- 4/24 : साकिब हुसैन (SRH) vs RR, हैदराबाद, 2026
- 4/33 : डेविड वीज (RCB) vs MI, बेंगलुरु, 2015
- 4/34 : प्रफुल्ल हिंगे (SRH) vs RR, हैदराबाद, 2026

प्रियेश चौबे
रायपुर संवाददाता

इन युवाओं को मिल सकता है टीम इंडिया में मौका

मौजूदा सीजन में बहुत से खिलाड़ियों ने अलग अलग फ्रेंचाइजी टीम के लिए डेब्यू किया है और कुछ खिलाड़ी ऐसे भी है जो आईपीएल में खेल रहे लेकिन भारत के लिए नहीं खेले है। लेकिन 5-6 खिलाड़ी है जो साल 2026 में कर सकते हैं टीम इंडिया के लिए डेब्यू। आईपीएल 2026 में कई युवा खिलाड़ियों ने कमाल का प्रदर्शन किया है। खासकर कई तो ऐसे हैं जिनका इसी साल भारतीय टीम के लिए डेब्यू हो सकता है। आईपीएल 2026 अबतक तो युवा खिलाड़ियों के नाम रहा है। इस लीग का पहला हाफ अब खत्म हो गया है और कई ऐसे खिलाड़ी सामने आ चुके हैं जिन्होंने अपने प्रदर्शन से सभी को हैरान कर दिया। चाहे फिर वैभव सूर्यवंशी, प्रभासिमरन, प्रियांश आर्य, आयुष महात्रे, प्रफुल हिंगे, हर्ष दुबे, ये सीजन पूरी तरह से युवाओं के नाम रहा है। और दो खिलाड़ी ऐसे है जिनका डेब्यू सपने से बढ़ कर रहा है। (ये आंकड़े 42वें मैच तक के है।)

वैभव सूर्यवंशी (राजस्थान रॉयल्स): मात्र 15 साल की उम्र में वैभव सूर्यवंशी ने अपनी बल्लेबाजी से क्रिकेट जगत में सनसनी फैला दी है। राजस्थान रॉयल्स के लिए खेलते हुए वैभव ने अब तक 9 मैचों में के तगड़े 238.10 के स्ट्राइक रेट से 400 रन कूट दिए हैं। इसमें महज 37 गेंदों में आतिशी शतक 15-15 गेंदों पर अर्धशतक शामिल हैं। चर्चा है कि जून में होने वाले आयरलैंड दौरे पर उन्हें भारतीय टी20 टीम में शामिल किया जा सकता है।

प्रभासिमरन सिंह (पंजाब किंग्स) : पंजाब किंग्स के लिए लगातार तीन सीजन से शानदार प्रदर्शन करने वाले प्रभासिमरन सिंह अब चयन के लिए दरवाजा नहीं खटखटा रहे बल्कि उसे तोड़ रहे हैं। आईपीएल 2026 में वह अपनी टीम के लिए 346 रनों के साथ सबसे सफल बल्लेबाज रहे हैं। खास बात यह है कि वह 58 मैचों में 1651 रन बनाकर आईपीएल इतिहास के सबसे सफल अनकैप्ड खिलाड़ी भी हैं।

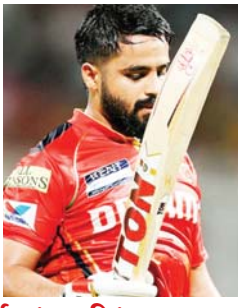

प्रियांश आर्य (पंजाब किंग्स) : पंजाब किंग्स के दूसरे ओपनर प्रियांश आर्य अपनी विस्फोटक बल्लेबाजी के लिए चर्चा का केंद्र बने हुए हैं। दिल्ली के इस बाएं हाथ के ओपनर ने 2025 में डेब्यू के बाद से कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। आईपीएल 2026 में 7 मैचों में 250 के स्ट्राइक रेट से 283 रन बना चुके है जो स्ट्राइक रेट उनका है वो कोई भी गेंदबाज लिए डरावना सपना है। प्रियांश में पहली गेंद से मैच को पलटने का दम है।

आयुष म्हात्रे (चेन्नई सुपर किंग्स) : अंडर-19 भारतीय टीम के कप्तान आयुष म्हात्रे भी इस साल अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट की दहलीज पर खड़े नजर आ रहे हैं। एमएस धोनी की टीम चेन्नई सुपर किंग्स का हिस्सा बने इस 18 वर्षीय खिलाड़ी ने मुंबई क्रिकेट की अपनी क्लास दिखाई है। आईपीएल 2026 में 6 मैचों में 201 रन बनाकर उन्होंने साबित किया है कि उनमें बड़े स्तर पर खेलने का दम है। हालांकि चोट के चलते ये खिलाड़ी आईपीएल 2026 से बाहर हो चुका है

हर्ष दुबे (सनराइजर्स हैदराबाद) : विदर्भ के कप्तान और हैदराबाद के स्पिनर हर्ष दुबे घरेलू क्रिकेट में पहले ही अपनी पहचान बना चुके है उनकी कप्तानी में ही विदर्भ ने विजय हजारे ट्रॉफी जीती थी। लेकिन आईपीएल 2026 ने उन्हें बड़ा मंच दिया है। सनराइजर्स हैदराबाद के लिए पावरप्ले में गेंदबाजी करने की कठिन चुनौती को उन्होंने बखूबी स्वीकारा है। अब तक 6 मैचों में 8 विकेट लेकर उन्होंने न केवल रनों पर अंकुश लगाया है बल्कि महत्वपूर्ण विकेट भी लिए हैं। खासकर हर्ष पावप्ले के ओवर्स के साथ मिडिल ओवर्स में भी गेंदबाजी कर लेते हैं।

सनराइजर्स हैदराबाद के दो तेज गेंदबाजों का ड्रीम डेब्यू : प्रफुल्ल हिंगे ने राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ अपने डेब्यू मैच में ही इतिहास रच दिया। हिंगे ने पहले ही ओवर में 3 विकेट लेकर तहलका मचाया और 4/34 का शानदार प्रदर्शन किया। वहीं, बिहार के युवा तेज गेंदबाज साकिब हुसैन ने भी अपना ड्रीम डेब्यू किया और 4 विकेट लिए। दोनों भी तेज गेंदबाजों ने राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ अपनी शानदार गेंदबाजी से सभी को प्रभावित किया एक समय राजस्थान का स्कोर 9 रन पर 5 विकेट था जिससे वे उबर नहीं पाए और पूरी टीम 19 ओवरों में सिमट गई।

साकिब हुसैन की क्रिकेटर बनने की कहानी : भारतीय सेना में होना चाहते थे शामिल ,गोपालगंज बिहार से आने वाले साकिब हुसैन की क्रिकेटर बनने की कहानी बेहद संघर्षपूर्ण और प्रेरणादायक है। एक साधारण परिवार से ताल्लुक रखने वाले साकिब का शुरुआती सपना भारतीय सेना में शामिल होकर देश की सेवा करना था लेकिन किस्मत उन्हें क्रिकेट के मैदान पर ले आई। उनके जुनून का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उनके करियर के शुरुआती दिनों में जब क्रिकेट के जूतों की जरूरत थी तब उनकी मां ने अपने गहने बेचकर उनके लिए जूते खरीदे थे।

प्रफुल हिंगे का सफर : यह सिर्फ एक शानदार डेब्यू नहीं, बल्कि मेहनत और हौसले की जीत है। नागपुर के एक साधारण परिवार से आने वाले प्रफुल के पास कभी सही क्रिकेट किट भी नहीं थी।पिता वॉचमैन थे, लेकिन बेटे के सपनों को कभी छोटा नहीं होने दिया। टेनिस बॉल क्रिकेट से शुरुआत, लोकल मैदानों पर सालों की मेहनत, लंबी दूरी तय करके सिर्फ एक मौका पाने की जिद आज वही लड़का आईपीएल के मंच पर चमक रहा है।हालात कितने भी कठिन हों, सपने बड़े रखो,मेहनत और धैर्य का कोई विकल्प नहीं,मौका मिले तो उसे इतिहास में बदल दो 'जिसके पास कुछ नहीं होता, उसके पास मेहनत करने की सबसे बड़ी ताकत होती है।' प्रफुल हिंगे अब सिर्फ एक नाम नहीं, बल्कि हर उस युवा के लिए प्रेरणा हैं जो छोटे शहर से बड़े सपने देखता है।

एक साथ दो टी20 टीम उतार सकता है भारत श्रेयस को मिल सकती है बड़ी जिम्मेदारी

मोहन द्विवेदी
खेल समीक्षक

बीसीसीआई सूर्यकुमार की जगह श्रेयस अय्यर को टी20 टीम की कप्तानी सौंप सकता है। श्रेयस ने आईपीएल 2026 में पंजाब किंग्स की कप्तानी शानदार ढंग से की है। वहीं, सूर्यकुमार हाल फिलहाल में खराब फॉर्म से गुजर रहे हैं।

भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) अब टी20 क्रिकेट के लिए नई रणनीति पर काम कर रहा है। बढ़ते इंटरनेशनल शेड्यूल और खिलाड़ियों की भरमार को देखते हुए बोर्ड 30-35 खिलाड़ियों का एक बड़ा पूल तैयार करने की योजना बना रहा है, ताकि जरूरत पड़ने पर एक साथ दो टी20 टीम उतारी जा सके। अगर दो टी20 टीम बनती है तो श्रेयस अय्यर भी कमान संभालने की दौड़ में आ सकते हैं।

इस फैसले के पीछे सबसे बड़ी वजह आने वाले समय में शेड्यूल का टकराव है। एशियन गेम्स और भारत बनाम वेस्टइंडीज टी20 सीरीज एक ही समय पर होने की संभावना है। ऐसे में चयनकर्ताओं को दो अलग-अलग टीमें मैदान में उतारने पर विचार करना पड़ रहा है। एशियन गेम्स और वेस्टइंडीज के खिलाफ टी20 सीरीज एक ही समय पर होने वाली हैं। इसलिए हमें दो टी20 टीमों के बारे में सोचना होगा। अब यह जरूरी हो गया है कि हमारे पास 30-35 खिलाड़ियों का ऐसा पूल हो, जिन्हें किसी भी समय इंटरनेशनल मैच के लिए चुना जा सके। आईपीएल ने भारत को लगातार तैयार खिलाड़ी दिए हैं, जिससे टीम के पास प्रतिभा की कोई कमी नहीं है। इसी को ध्यान में रखते हुए बीसीसीआई अब एक मजबूत बैकअप सिस्टम बनाना चाहता है। 2028 ओलंपिक में क्रिकेट की एंट्री और मल्टी-स्पोर्ट इवेंट्स में भागीदारी को देखते हुए यह रणनीति और भी अहम हो जाती है।

आयरलैंड दौरा बनेगा प्रयोगशाला : आने वाला आयरलैंड इस योजना के लिए एक टेस्ट प्लेटफॉर्म की तरह काम करेगा। इस दौरे पर बड़े स्क्वॉड के साथ युवा और नए खिलाड़ियों को मौका दिया जाएगा, ताकि भविष्य के लिए मजबूत टीम तैयार की जा सके। ऐसे में बीसीसीआई सूर्यकुमार की जगह श्रेयस अय्यर को टी20 टीम की कप्तानी सौंप सकता है। श्रेयस ने आईपीएल 2026 में पंजाब किंग्स की कप्तानी शानदार ढंग से की है। वहीं, सूर्यकुमार हाल फिलहाल में खराब फॉर्म से गुजर रहे हैं। ऐसे में बीसीसीआई का ध्यान इस पर भी होगा। श्रेयस टी20 में नंबर तीन या चार पर बल्लेबाजी कर सकते हैं। चयनकर्ता आईपीएल में शानदार प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों पर नजर बनाए हुए हैं। युवा बल्लेबाजों में यशस्वी जायसवाल, प्रियांश आर्य, वैभव सूर्यवंशी और अंगकृष रघुवंशी ने प्रभावित किया है। इसके अलावा रजत पाटीदार और आयुष बदोनी भी रेस में बने हुए हैं। ऑलराउंडर्स में शशांक सिंह और अनुकूल रॉय संतुलन प्रदान कर सकते हैं, जबकि गेंदबाजी में रवि बिश्नोई, प्रसिद्ध कृष्णा, कार्तिक त्यागी और खलील अहमद विकल्प के रूप में उभर रहे हैं। विकेटकीपिंग में ध्रुव जुरेल मजबूत दावेदार हैं।

पूर्व अंतरराष्ट्रीय क्रिकेटर अमय खुरासिया छत्तीसगढ़ के मुख्य कोच बने

छत्तीसगढ़ राज्य के प्रतिभाशाली क्रिकेटरों को अब देश के श्रेष्ठ प्रशिक्षक का मार्गदर्शन मिलने जा रहा है। पूर्व अंतरराष्ट्रीय क्रिकेटर अमय खुरासिया को छत्तीसगढ़ स्टेट क्रिकेट संघ का नया मुख्य कोच नियुक्त किया गया है। उनके अनुभव और नेतृत्व से राज्य के युवा खिलाड़ियों को नई दिशा मिलने की उम्मीद है। खुरासिया के मार्गदर्शन में केरल की टीम ने 74 साल के रणजी ट्रॉफी इतिहास में पहली बार फाइनल तक पहुंचने का गौरव हासिल किया था। यह उपलब्धि उनके कोचिंग कौशल और रणनीतिक सोच को दर्शाती है।

अमय खुरासिया भारत के पूर्व अंतरराष्ट्रीय क्रिकेटर रह चुके हैं। उन्होंने वर्ष 1999 के विश्व कप में भारतीय क्रिकेट टीम का प्रतिनिधित्व किया। इसके अलावा, बांग्लादेश में आयोजित सार्क क्रिकेट टूर्नामेंट में भारतीय 'ए' टीम की कप्तानी भी की, जहां टीम संयुक्त विजेता रही। अपने करियर में उन्होंने 12 अंतरराष्ट्रीय वनडे मैच (1999-2001) खेले और 119 प्रथम श्रेणी मैचों (1989-2006) का समृद्ध अनुभव भी उनके पास है। मध्य प्रदेश के जूनियर स्तर से लेकर रणजी टीम तक उन्होंने लंबे समय तक नेतृत्व किया। साथ ही, उन्होंने बीसीसीआई के लेवल-सी कोचिंग की डिग्री भी प्राप्त की है। पिछले 23 वर्षों से वे कोचिंग के क्षेत्र में सक्रिय हैं और 10 वर्षों तक मध्य प्रदेश क्रिकेट संघ के मुख्य कोच रहे हैं। इस दौरान उन्होंने रजत पाटीदार, वेंकटेश अय्यर और आवेश खान जैसे खिलाड़ियों को तैयार किया, जो आज अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में शानदार प्रदर्शन कर रहे हैं। छत्तीसगढ़ स्टेट क्रिकेट संघ और अमय खुरासिया के बीच राज्य में क्रिकेट के विकास को लेकर सकारात्मक चर्चा के बाद उन्हें मुख्य कोच नियुक्त करने का निर्णय लिया गया। इस अवसर पर संघ के निदेशक बलदेव सिंह भाटिया, निदेशक विजय शाह और अन्य समिति सदस्य भी उपस्थित रहे। इस मौके पर अमय खुरासिया ने कहा कि छत्तीसगढ़ के युवा बेहद प्रतिभाशाली हैं और उन्हें यह जिम्मेदारी सौंपे जाने पर वे आभारी हैं। **-प्रियेश चौबे**

बीसीसीआई ने अगरकर का एक साल के लिए कॉन्ट्रैक्ट रीन्यू किया; बने रहेंगे मुख्य चयनकर्ता

बीसीसीआई ने मुख्य चयनकर्ता अजीत अगरकर के कॉन्ट्रैक्ट को रीन्यू किया और इस तरह उनका कार्यकाल एक साल के लिए और बढ़ गया है। यह फैसला

2027 वनडे वर्ल्ड कप को ध्यान में रखते हुए लिया गया है, ताकि टीम चयन में निरंतरता बनी रहे। हालांकि, अब से एक साल यानी जून 2027 तक के लिए उनके कार्यकाल का विस्तार हुआ है। अगले साल वनडे विश्वकप अक्टूबर-नवंबर में दक्षिण अफ्रीका में होना है। ऐसे में अगरकर के कार्यकाल को तब भी विश्व कप तक के लिए बढ़ाया जा सकता है। विश्व कप से ठीक पहले चयनकर्ता में बदलाव टीम के लिए नुकसानदायक हो सकता है। अगरकर की अगुआई में अक्टूबर 2023 से मार्च 2026 के बीच भारतीय टीम ने चार आईसीसी टूर्नामेंट के फाइनल खेले, जिनमें से तीन में जीत हासिल की। इसमें दो टी20 वर्ल्ड कप और एक चैंपियंस ट्रॉफी शामिल हैं। ऐसे में उनका कॉन्ट्रैक्ट रिन्यू होना लगभग तय माना जा रहा था। बता दें कि अगरकर ने खुद एक्सटेंशन नहीं मांगा। चयनकर्ता अधिकतम चार साल तक काम कर सकता है, इसलिए उनका कॉन्ट्रैक्ट बढ़ाया नहीं बल्कि रीन्यू किया गया है।

आईसीसी चेयरमैन जय शाह ने बढ़ाया भारत का मान

जय शाह को विश्व इकोनॉमिक फोरम ने 'यंग ग्लोबल लीडर्स क्लास ऑफ 2026' में शामिल किया है। यह सम्मान वैश्विक क्रिकेट के भविष्य को दिशा देने में उनके बढ़ते प्रभाव और नेतृत्व क्षमता को दर्शाता है। आईसीसी के चेयरमैन के रूप में उनकी भूमिका लगातार मजबूत होती जा रही है। शाह बीसीसीआई के सबसे युवा सेक्रेटरी थे, उन्होंने इस खेल के विकास के विभिन्न पहलुओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शाह ने इंडियन प्रीमियर लीग के अहम हिस्सों की देखरेख के साथ महिला क्रिकेट के विकास को बढ़ावा दिया है। इसके अलावा, मीडिया राइट्स के बड़े सौदे तय किए हैं। उनके काम का इस खेल पर काफी असर पड़ा है। वह लॉस एंजिल्स में होने वाले 2028 समर ओलंपिक्स में क्रिकेट को शामिल करवाने में भी एक अहम हस्ती रहे हैं। एक प्रेस रिलीज में, जिसमें उनके चयन की घोषणा की गई थी, वैश्विक मंच पर उनके प्रभाव पर जोर दिया गया।

देश के सबसे उम्रदराज क्रिकेटर गोपीनाथ का निधन

भारत के सबसे उम्रदराज जीवित क्रिकेटर सीडी गोपीनाथ का 9 अप्रैल 2026 को

96 साल की उम्र में निधन हो गया। वह भारत की पहली टेस्ट जीतने वाली टीम के सदस्य थे। गोपीनाथ दुनिया के दूसरे सबसे उम्रदराज क्रिकेटर थे। ऑस्ट्रेलिया के दिग्गज खिलाड़ी नील हार्वे (97) दुनिया के सबसे उम्रदराज क्रिकेटर हैं। सीडी गोपीनाथ के निधन के बाद मुंबई के 95 साल के चंद्रकांत पाटनकर देश के सबसे उम्रदराज क्रिकेटर हैं। उन्होंने 1955 में न्यूज़ीलैंड के खिलाफ एक टेस्ट खेला था। गोपीनाथ ने भारत के लिए 8 टेस्ट खेले और एक अर्धशतक की मदद से 242 रन बनाए। गोपीनाथ को छोटे करियर का कभी मलाल नहीं रहा, जिसकी शुरुआत 1951 में ब्रेबोर्न में इंग्लैंड के खिलाफ 50 और 42 रन की पारी के साथ हुई थी। 1952 में इंग्लैंड दौरे पर उनका प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा था। इसके कारण वह भारतीय टीम में जगह पक्की नहीं कर पाए।

महिला टी20 विश्व कप के लिए रिकॉर्ड इनामी राशि

महिला टी20 विश्व कप 2026 के लिए आईसीसी ने रिकॉर्ड इनामी राशि की घोषणा की है। टूर्नामेंट की शुरुआत में अब काफी कम समय बचा है। इससे पहले खेल की वैश्विक संस्था ने आगामी टूर्नामेंट के लिए इनामी राशि का एलान किया है। इस बार कुल इनामी राशि 8,764,615 डॉलर (82 करोड़ रुपये) रखी गई है, जो 2024 के मुकाबले लगभग 10 प्रतिशत ज्यादा है। 2024 में यह राशि 7,958,077 डॉलर (लगभग 74 करोड़ रुपये) थी। खास बात यह है कि इस बार टूर्नामेंट में पहली बार 12 टीमें हिस्सा लेंगी, जबकि पहले 10 टीमें खेलती थीं।

- **विजेता टीम को मिलेगा :** 2,340,000 डॉलर (लगभग 21.8 करोड़ रुपये)।
- **उपविजेता (रनर-अप) को :** 1,170,000 डॉलर (लगभग 10 करोड़ रुपये) :
- **दोनों सेमीफाइनल हारने वाली टीमों को :** 675,000 डॉलर प्रत्येक (लगभग 6.29 करोड़ रुपये) :
- **ग्रुप स्टेज में हर जीत पर :** 31,154 डॉलर (लगभग 29 लाख रुपये) :
- **सभी 12 टीमों को न्यूनतम :** 247,500 डॉलर (लगभग 2.06 करोड़ रुपये) :

आईसीसी के सीईओ संजोग गुप्ता ने कहा कि महिला क्रिकेट तेजी से आगे बढ़ रहा है और इस तरह की बढ़ती इनामी राशि इस खेल को और मजबूत बनाएगी। उन्होंने यह भी बताया कि टूर्नामेंट का विस्तार और बढ़ता निवेश महिला क्रिकेट को वैश्विक स्तर पर नई पहचान दे रहा है। टूर्नामेंट से पहले ट्रॉफी टूर भी शुरू हो गया है। इसकी शुरुआत लंदन में स्थित ऐतिहासिक लॉर्ड्स क्रिकेट ग्राउंड से हुई। इसके बाद ट्रॉफी नीदरलैंड्स, आयरलैंड और स्कॉटलैंड जैसे देशों का दौरा करेगी और फिर इंग्लैंड के विभिन्न शहरों में जाएगी।

टूर्नामेंट की शुरुआत : महिला टी20 विश्व कप 2026 की शुरुआत 12 जून से होगी। पहला मैच मेजबान इंग्लैंड और श्रीलंका की महिला टीमों के बीच बर्मिंघम के एजबेस्टन क्रिकेट ग्राउंड पर खेला जाएगा। यह टूर्नामेंट न सिर्फ खेल के स्तर पर बल्कि दर्शकों और मीडिया के लिहाज से भी नए रिकॉर्ड बना सकता है। इस टूर्नामेंट में कुल 12 टीमें हिस्सा लेंगी जिन्हें 6-6 टीमों के दो ग्रुप में बांटा गया है। ग्रुप स्टेज में प्रत्येक टीम को अपने-अपने ग्रुप की हर टीम से एक-एक बार भिड़ना होगा। यानी हर टीम ग्रुप स्टेज में 5-5 मैच खेलेगी। ग्रुप स्टेज के बाद दोनों ग्रुप की टॉप दो-दो टीमें सेमीफाइनल में जगह बनाएंगी। एक ग्रुप की टॉप टीम दूसरे ग्रुप की दूसरे नंबर वाली टीम से सेमीफाइनल में भिड़ेगी। फिर सेमीफाइनल की विजेता टीमों की फाइनल में भिड़ंत होगी। **-एनएसटी इंटरनेट डेस्क**

टी20 में हिटमैन रोहित शर्मा को पीछे छोड़ आगे बढ़ी स्मृति मंधाना

भारतीय महिला टीम की स्टार ओपनर स्मृति मंधाना ने इतिहास रच दिया है। वह पुरुषों और महिलाओं को मिलाकर टी20 अंतरराष्ट्रीय में सबसे ज्यादा रन बनाने वाली भारतीय बन गई हैं। इस मामले में उन्होंने रोहित शर्मा को पीछे छोड़ दिया। अब वह टी20 अंतरराष्ट्रीय में दुनिया भर के बल्लेबाजों को मिलाकर बाबर आजम को पीछे छोड़ने के करीब हैं। हालांकि, भारतीय महिला टीम को दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ सीरिज के पहले मैच में 6 विकेट से हार का सामना करना पड़ा।

मंधाना ने 13 रन बनाकर तोड़ा रिकॉर्ड

डरबन के किंग्समीड स्टेडियम में पिछले दिनों खेले गए भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच मैच में मंधाना हालांकि बड़ी पारी नहीं खेल सकीं। वह सिर्फ 13 रन बनाकर आउट हो गईं, लेकिन इन 13 रनों की बदौलत उन्होंने रोहित के 4231 रनों के आंकड़े को पार कर लिया। अब मंधाना के नाम टी20 अंतरराष्ट्रीय में 161 मैचों की 155 पारियों में 4244 रन दर्ज हो गए हैं। इस दौरान उनका स्ट्राइक रेट 124.39 का रहा है। इसमें 33 अर्धशतक और एक शतक शामिल है।

टी20 अंतरराष्ट्रीय में सबसे ज्यादा रन (महिला)

खिलाड़ी	मैच	रन	स्ट्राइक रेट	शतक	अर्धशतक
सूजी बेट्स	181	4717	108.56	1	281
स्मृति मंधाना	161	4244	124.38	1	33
हरमनप्रीत कौर	191	3869	109.20	1	15
चमारी अटापट्टू	154	3637	110.58	3	14
सोफी डिवाइन	151	3587	121.55	1	23

रोहित और बाबर के नाम कितने रन ?

वहीं, टी20 अंतरराष्ट्रीय से संन्यास ले चुके रोहित ने 159 टी20 की 151 पारियों में 4231 रन बनाए थे। इस दौरान उनका स्ट्राइक रेट 140.90 का रहा था। इनमें 32 अर्धशतक और पांच शतक शामिल हैं। टी20 अंतरराष्ट्रीय में पुरुषों में सबसे ज्यादा रन बनाने का रिकॉर्ड पाकिस्तान के बाबर आजम के नाम है। बाबर ने 145 मैचों में 128.02 के स्ट्राइक रेट से 4596 रन बनाए हैं। इनमें 39 अर्धशतक और तीन शतक शामिल हैं। मंधाना बाबर के आंकड़े से 352 रन दूर हैं। वहीं, महिलाओं में टी20 अंतरराष्ट्रीय में सबसे ज्यादा रन न्यूजीलैंड की सूजी बेट्स के नाम हैं। बेट्स ने 181 मैचों में 4717 रन बनाए हैं।

टी20 अंतरराष्ट्रीय में सबसे ज्यादा रन (पुरुष)

खिलाड़ी	मैच	रन	स्ट्राइक रेट	शतक	अर्धशतक
बाबर आजम	145	4596	128.02	3	39
रोहित शर्मा	159	4231	140.89	5	32
विराट कोहली	125	4188	137.04	1	38
जोस बटलर	155	4037	147.76	1	28
पॉल स्टर्लिंग	163	3895	134.35	1	24

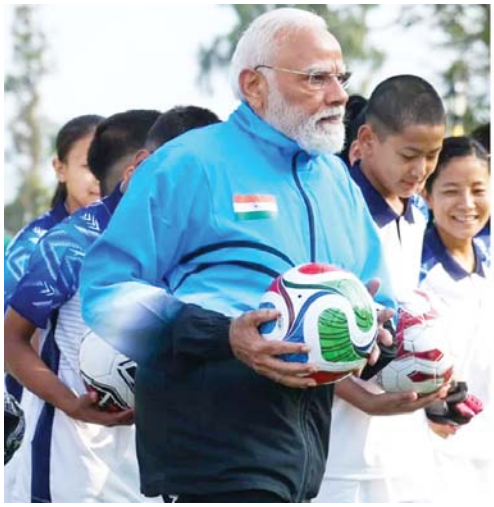

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के इस संदेश को भारतीय फुटबॉल के लिए सकारात्मक संकेत माना जा रहा है। युवाओं को बड़े मंचों के लिए तैयार करने की बात ने खेल जगत में नई ऊर्जा भर दी है।

पीएम मोदी ने फुटबाल खेल युवा खिलाड़ियों में भरा जोश

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हाल ही में सिक्किम के गंगटोक दौरे के दौरान स्थानीय बच्चों के साथ फुटबॉल खेलते हुए उन्हें बड़े सपने देखने की प्रेरणा दी। पीएम ने कहा कि भारत ओलंपिक मेजबानी की कोशिश कर रहा है, इसलिए युवाओं को अभी से तैयारी करनी चाहिए। उनके संदेश ने भारतीय फुटबॉल के भविष्य को लेकर नई उम्मीद जगाई है। भारतीय फुटबॉल को नई दिशा देने की कोशिश के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गंगटोक में युवा खिलाड़ियों के साथ फुटबॉल खेलकर बड़ा संदेश दिया। पीएम ने बच्चों से कहा कि उन्हें सिर्फ खेलने तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि ओलंपिक में खेलने के लक्ष्य के साथ मेहनत करनी चाहिए। उनके इस संदेश ने युवाओं में नया जोश भर दिया और भारतीय फुटबॉल के भविष्य को लेकर उम्मीदें बढ़ा दीं।

साथ ही फीफा विश्व कप 2026 का जून में आगाज होना है। उससे पहले पीएम मोदी के इस पहल ने भारतीय फैंस के अंदर इस टूर्नामेंट को लेकर दिलचस्पी भी जगा दी है। भारत में क्रिकेट के साथ-साथ फुटबॉल के भी काफी फैंस हैं और पीएम मोदी ने उन्हें अब फुटबॉल चुनने के लिए प्रेरित किया है। पीएम मोदी के ऐसा करने से फीफा विश्व कप जैसे बड़े मंचों पर भारत की मौजूदगी को लेकर भी नई चर्चा शुरू हो गई है। सिक्किम दौरे पर पहुंचे पीएम मोदी ने स्थानीय किशोर लड़के-लड़कियों के साथ फुटबॉल खेला। इस दौरान उन्होंने मैदान पर खिलाड़ियों के साथ समय बिताया और कुछ गोल भी किए। कभी उन्होंने राइट विंग से तो कभी सेंटर फॉरवर्ड से गेंद को गोल पोस्ट में पहुंचाया। उन्होंने गोल करने के लिए दाएं और बाएं पैर का बखूबी इस्तेमाल भी किया। एक वीडियो में पीएम कहते हैं, मुझे क्या आपलोग फुटबॉल खेलना सीखाएंगे। ऐसा तो नहीं कि आपलोग मुझे हरा देंगे।

प्रधानमंत्री ने मैच के बाद युवा खिलाड़ियों से कहा, खेलने के लिए सिर्फ अभ्यास काफी नहीं है। मैच होना चाहिए। इससे हम सीखते हैं। हममें जुनून पैदा होता है। आने वाले दिनों में इसे लोकप्रिय बनाना है। आपको पता होगा भारत ओलंपिक (2036) की मेजबानी हासिल करने का प्रयास कर रहा है। उस समय तक आपलोग परिपक्व खिलाड़ी बन जाएंगे। इसलिए आप सभी को अभी से बेहतर करना का प्रयास करना चाहिए और अपनी तैयारी ओलंपिक खेलने के उद्देश्य से तैयारी करिए।

भारतीय फुटबॉल के लिए संकेत : पीएम मोदी के इस संदेश को भारतीय फुटबॉल के लिए सकारात्मक संकेत माना जा रहा है। युवाओं को बड़े मंचों के लिए तैयार करने की बात ने खेल जगत में नई ऊर्जा भरी है। इससे पहले पीएम ने अपने एक्स अकाउंट पर कुछ तस्वीरें शेयर करते हुए लिखा था, गंगटोक की एक प्यारी सुबह, सिक्किम में अपने नन्हे दोस्तों के साथ फुटबॉल खेलने का मजा ही कुछ और है। एक अन्य पोस्ट में उन्होंने लिखा, इन युवाओं के साथ फुटबॉल का एक जबरदस्त सेशन। प्रधानमंत्री ने खिलाड़ियों को फुटबॉल पर अपना ऑटोग्राफ भी दिया।

भारतीय शतरंज की नई रानी आर. वैशाली

आत्मा राम भाटी
खेल समीक्षक

भारतीय शतरंज के लिए पिछला माह अप्रैल ऐतिहासिक उपलब्धियों वाला रहा। जब आर. वैशाली ने फिडे महिला कैंडिडेट्स टूर्नामेंट 2026 जीतकर नया इतिहास रचते हुए महिला विश्व चैम्पियनशिप के लिए क्वालिफाई किया। वहीं ए.एस श्रावणिका ने अंडर-12 रैपिड खिताब जीता। कोलकाता के अरण्यक घोष ने भारत का 95वां ग्रैंडमास्टर बनकर देश का गौरव बढ़ाया है। नेशनल रैपिड चैम्पियन अरण्यक ने बैंकॉक चेस क्लब ओपन में 9 में से 7 अंक हासिल कर अपना तीसरा और अंतिम ग्रैंडमास्टर नॉर्म प्राप्त किया। वहीं दिल्ली के 10 वर्षीय आरित कपिल ने स्पेन में एक इंटरनेशनल टूर्नामेंट के अंतिम दौर में ड्रॉ खेलकर शतरंज में इंटरनेशनल मास्टर (आइएम) नॉर्म हासिल किया। यह उपलब्धि हासिल करने वाले वह भारत के सबसे कम उम्र के चेस खिलाड़ी बने। उनकी उम्र सिर्फ 10 साल और 7 महीने है।

इन सबके बीच भारतीय शतरंज में सबसे बड़ी सनसनी चेन्नई की आर. वैशाली रही। पिछले माह अप्रैल के मध्य में शतरंज की बिसात पर युवा भारतीय महिला ग्रैंड मास्टर आर. वैशाली ने साइप्रस के पाफोस में आयोजित फिडे महिला कैंडिडेट्स टूर्नामेंट 2026 जीतकर नया इतिहास रच दिया। इस जीत के बाद वैशाली ने इस साल के अंत में होने वाली महिला विश्व शतरंज चैंपियनशिप में मौजूदा चैंपियन चीन की जू वेनजुन के खिलाफ विश्व खिताब के लिए भी पात्रता हासिल कर ली। 15 साल बाद कोई भारतीय महिला शातिर महिला विश्व शतरंज चैंपियनशिप खिताब के लिए मुकाबला करेगी। इससे पहले 2011 में कोनेरू हम्पी ने ऐसा किया था।

जब टूर्नामेंट शुरू हुआ उस समय चेन्नई की 24 वर्षीय आर. वैशाली को कोई भी खिताबी दौड़ में नहीं मान रहा था। यही नहीं वो 14 राउंड के इस टूर्नामेंट के 5वें राउंड की समाप्ति तक भारत की दिव्या देशमुख और टैन झोंगयी के साथ तालिका में सबसे नीचे थीं। उस समय यह लग भी रहा था कि वैशाली के लिए खिताबी सफर आसान नहीं रहने वाला है। लेकिन उसने खेल में जबरदस्त वापसी करते हुए लगातार तीन जीत दर्ज करते हुए अपने को दावेदारी में ला खड़ा किया।

वैशाली ने इस प्रतियोगिता के फाइनल राउंड में धैर्य व मानसिक मजबूती के साथ अपने खेल को आगे बढाते हुए रूसी खिलाड़ी कैटरीन लैग्नो को हराकर पूरे टूर्नामेंट में सबसे ज्यादा 8.5 अंक अर्जित कर खिताब अपने नाम करते हुए सबको अचंभित कर दिया।

वैशाली ने भले ही 15 साल बाद नया इतिहास बना दिया। लेकिन इस प्रतियोगिता में भाग ले रहे 8 शातिरों में दूसरी सबसे नीचे पायदान की वैशाली के लिए खिताब अपने नाम करने का रास्ता आसान नहीं था। क्योंकि पिछले साल चेन्नई ग्रैंड मास्टर्स में वैशाली अंक तालिका में अंतिम पायदान पर रही थीं। वह उसके करियर का सबसे खराब दौर था। उसके बाद इस टूर्नामेंट में भी 5वें राउंड तक सबसे पीछे थी तो ऐसे में उस पर दबाव होना लाजमी भी था। लेकिन उसने हार नहीं मानी और अपनी लय हासिल करते हुए 12वें राउंड तक शीर्ष पर आ गयी। हालांकि झु जिनर के हाथों सफेद मोहरों से मिली हार ने उन्हें एक झटका जरूर दिया, लेकिन वो डटी रहीं। एक मैच हारने के बाद उन्होंने वापसी करते हुए पूरा टूर्नामेंट जीत लिया।

इस टूर्नामेंट में सभी को वैशाली से ज्यादा उम्मीदें उसके छोटे भाई प्रज्ञानानंद से थी जो 2018 में दूसरे कम उम्र के ग्रैंडमास्टर

बनकर प्रसिद्ध हो गए थे। लेकिन वे इस टूर्नामेंट में 7वें स्थान पर रहे। भाई-बहन की जोड़ी दूसरी बार कैंडिडेट्स टूर्नामेंट में हिस्सा ले रही थी। छोटे भाई को भले ही इस खेल में वैशाली से पहले प्रसिद्धि मिल गयी। लेकिन अपने भाई से 5 साल बाद ग्रैंडमास्टर बनी वैशाली ही थी, जिसने अपने परिवार को शतरंज के मोहरों से परिचय कराया।

वैशाली जब छोटी थी तो वह टीवी पर अक्सर कार्टून देखा करती थी, और उसकी यह लत हटाने के लिए ही मां ने उसका दाखिला शतरंज की कक्षा में कराया गया था। जब वैशाली को पहले ही टूर्नामेंट में च्सबसे कम उम्र की प्रतिभागीज् का पुरस्कार मिला तो उसने पेशेवर रूप से खेलना शुरू कर दिया। 2016 में महिला अंतरराष्ट्रीय ग्रैंडमास्टर बनीं। 2018 में महिला ग्रैंडमास्टर का तमगा मिला। 2021 में अंतरराष्ट्रीय मास्टर बनी और 2023 में ग्रैंडमास्टर का ताज मिला और अब 2026 में उसकी उपलब्धि की माला में एक और फूल जुड़ गया।

वैशाली की खेल जीवन यात्रा पर नजर डालें तो भाई और बहिन दोनों का शतरंज का वास्तविक सफर चेन्नई में ग्रैंडमास्टर आरबी रमेश और महिला ग्रैंडमास्टर आरती रामास्वामी से मिले शतरंज के प्रशिक्षण से शुरू हुआ। फिर दोनों वेस्ट ब्रिज आनंद अकादमी का हिस्सा बने, जहां उन्हें दिग्गज विश्वनाथन आनंद का मार्गदर्शन मिला। भाई प्रज्ञानानंद के महज 12 साल की उम्र में ग्रैंडमास्टर बनने के बाद सबकी निगाहें उन पर टिक गई, इससे वैशाली पर काफी प्रभाव पड़ा।

किसी भी टूर्नामेंट में हार के बाद कई दिनों तक सो नहीं पाती थीं। तनाव कम करने के लिए अकेले टहलने जाती थीं या कॉमेडी फिल्में देखती थीं। लेकिन बाद में उन्होंने मनोवैज्ञानिक की मदद ली। तनाव का एक कारण यह भी था कि वैशाली को छोटे भाई प्राग्ननंदा की परछाई से बाहर निकलना किसी चुनौती से कम नहीं था। कोच रमेश के मुताबिक, 'शुरुआत में वैशाली प्रांगी से आगे थीं, लेकिन जब प्रागी ने उन्हें पीछे छोड़ा, तो वैशाली के लिए उसे स्वीकार करना आसान नहीं था। घर में तुलना होना स्वाभाविक था, लेकिन उन्होंने खुद को संभाला। उन्होंने दूसरों से मुकाबला करने के बजाय खेल पर ध्यान देना शुरू किया।'

आर. वैशाली के खेल यात्रा में एक मोड़ 2023-24 के बीच आया। जब वो विश्व कप से बाहर होने के बाद फूड पॉइजनिंग का शिकार हो गईं। दो महीने तक तक उन्हें शतरंज से दूर रहना पड़ा। गिरती रेटिंग, नॉर्म्स और ग्रैंडमास्टर टाइटल के कारण खेल का आनंद लेना भूल गई थी। लेकिन योग व मेडिटेशन के सहारे जब वापसी की तो उसके मन में नतीजों का डर नहीं, बल्कि खेलने की खुशी थी। इसी मानसिक बदलाव का नतीजा था कि उन्होंने एशियन गेम्स में रजत जीता और अब कैंडिडेट्स की चैम्पियन बनी और इस जीत के बाद से अब वह आर. प्रज्ञानानंद की बहन नहीं, बल्कि ग्रैंडमास्टर आर. वैशाली के जानी जाने लगी है।

कुल मिलाकर शतरंज की बिसात पर जिस तरह से युवा होती पीढ़ी अपने खेल से देश का नाम विश्व स्तर पर चमका रही है। आर. वैशाली जैसी खिलाड़ी और ज्यादा उपलब्धियां प्राप्त कर देश की महिला शतरंज में युवाओं के लिए प्रेरणा बनेगी। इससे हम गर्व से कह सकते हैं कि शतरंज खेल का जन्मदाता भारत आने वाले समय में इस खेल में महाशक्ति बन कर उभरेगा।

डोपिंग को अपराध बनाने की तैयारी में सरकार

डोपिंग को अपराध बनाने की खेल मंत्रालय की तैयारी के बीच 2018 के डोपिंग रोधी विधेयक के मसौदे में प्रतिबंधित पदार्थों की आपूर्ति करने वालों के लिये जेल और भारी जुर्माने के प्रावधान के साथ भारतीय ओलंपिक संघ जैसी संस्थाओं की ओर से इस पर हुई बहस और विरोध भी सुर्खियों में आ गए हैं। विश्व डोपिंग निरोधक एजेंसी (वाडा) की वैश्विक डोपिंग रोधी खुफिया और जांच नेटवर्क की 17 अप्रैल 2026 को नई दिल्ली में हुई आखिरी कांफ्रेंस में डोपिंग को अपराध बनाने का मसला छाया रहा। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार वाडा अध्यक्ष विटोल्ड बांका ने दोहराया कि वह सरकारों से अपील करेंगे कि डोपिंग को अपराध बनाया जाये, लेकिन प्रतिबंधित दवाओं की आपूर्ति करने वाले और खिलाड़ियों तक पहुंचाने वालों को निशाने पर लिया जाये ताकि खिलाड़ियों पर आंच नहीं आये। करीब एक दशक पहले न्यायमूर्ति (सेवानिवृत्त) मुकुल मुद्गल की अध्यक्षता वाली समिति के सुझावों पर भारत में डोपिंग को अपराध बनाने की तैयारी कर ली गई थी।

विधेयक में क्या कहा गया था : न्यायमूर्ति मुद्गल ने ही भारतीय क्रिकेट में 2013 के आईपीएल स्पॉट फिक्सिंग मामले की जांच की थी। विधेयक के मसौदे में कहा गया था, कोई भी व्यक्ति जो व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए किसी एथलीट को नियमित रूप से प्रतिबंधित पदार्थ की आपूर्ति करने में लिप्त पाया जाता है, वह 'तस्करी' के अपराध का दोषी माना जाएगा और उसे साधारण कारावास दिया जायेगा जिसकी अवधि एक वर्ष तक हो सकती है। इसके साथ ही उस पर जुर्माना भी लगाया जा सकता है, जो 10 लाख रुपये तक हो सकता है।'

प्रावधान विधेयक से हटा दिया गया : हालांकि, यह प्रावधान 2022 में पारित और पिछले साल संशोधित हुए विधेयक से हटा दिया गया था। उस समय सरकार ने आपराधिक कानून की बजाय निवारक कानून पर विचार किया था। आईओए ने उस समय इस प्रावधान का विरोध किया था और उसके तत्कालीन महासचिव राजीव मेहता ने कहा था कि प्रदर्शन बेहतर करने वाली दवाओं की आपूर्ति को पूरी तरह से अपराध की श्रेणी में नहीं रख सकते क्योंकि खेलों से इतर उनका इस्तेमाल हो सकता है।

खिलाड़ियों को जांच में दोषी पाये जाने पर प्रतिबंध : खेलमंत्री मनसुख मांडविया ने गुरुवार को संकेत दिया कि डोपिंग को अपराध बनाने के लिये कड़े प्रावधान लाये जा सकते हैं। पिछले तीन साल से भारत डोप उल्लंघन के मामलों में वाडा की वैश्विक सूची में शीर्ष पर है। मांडविया ने कांफ्रेंस में कहा था ,'हम खिलाड़ियों को प्रतिबंधित दवा देने वाले सहयोगी स्टाफ या प्रतिबंधित दवाओं की तस्करी में शामिल लोगों के खिलाफ आपराधिक प्रावधान लाने पर काम कर रहे हैं।' फिलहाल भारत में खिलाड़ियों को प्रतिबंधित पदार्थों की आपूर्ति करने वालों के खिलाफ दंड का प्रावधान नहीं है और अनुशासनात्मक कार्रवाई खिलाड़ियों को जांच में दोषी पाये जाने पर प्रतिबंध तक सीमित है।

NST नेशनल स्पोर्ट्स टाइम्स
देश की लोकप्रिय मासिक हिन्दी खेल पत्रिका
विशेष

50 दिन भी नहीं बचे फुटबॉल विश्व कप शुरू होने में पर भारत में ये भी नहीं मालूम कि इसे देखेंगे कैसे?

वैसे ये मानना पड़ेगा कि क्रिकेट, चाहे अंतरराष्ट्रीय मैच हों या आईपीएल, ने फुटबॉल विश्व कप जैसे बड़े आयोजन को भी चर्चा में पीछे धकेल दिया है। इसीलिए 50 दिन भी नहीं बचे फुटबॉल विश्व कप शुरू होने में पर अभी तक इसे न तो वह चर्चा मिली है जो इससे पहले होती थी और न ही पहले जैसा शोर है। ऐसा नहीं है कि 2026 का फुटबॉल विश्व कप यूं ही निकल जाएगा पर क्रिकेट का इस आयोजन पर बढ़ता असर अब साफ दिखाई देने लगा है।

खुद फीफा विश्व कप के इतिहास में 2026 विश्व कप का खास महत्व है क्योंकि तीन मेजबान, अमेरिका, कनाडा और मेक्सिको और टीम भी 48 जो पहले कभी नहीं हुआ। खुद अमेरिका में, विश्व कप में क्या होने वाला है, इससे ज्यादा चर्चा इस विश्व कप पर युद्ध के साए की है क्योंकि खुद अमेरिका युद्ध में शामिल है। ऊपरी तौर पर सब ठीक लगने के बावजूद, दुनिया के इस सबसे बड़े खेल आयोजन के लिए कई चिंताएं अभी भी बनी हुई हैं।

भारत में अगर अभी तक फुटबॉल विश्व कप को वह चर्चा नहीं मिली जो मिलनी चाहिए थी तो इसकी एक सबसे बड़ी वजह ये भी है कि भारत के फुटबॉल प्रेमी ये नहीं जानते कि वे इस फुटबॉल विश्व कप के मैच कहां और कैसे देखेंगे? विश्वास कीजिए कि अभी तक ये नहीं मालूम कि इस फुटबॉल विश्व कप का भारत में प्रसारण कौन करेगा? किस चैनल पर फुटबॉल प्रेमी, विश्व कप के मैच देख पाएंगे? उम्मीद तो यही है कि वास्तव में फुटबॉल विश्व कप शुरू होने तक इस प्रसारण वाले सवाल का जवाब आ चुका होगा पर जो स्थिति है वह आने वाले दिनों के लिए चेतावनी है।

ऐसा नहीं है कि फीफा की तरफ से फुटबॉल विश्व कप प्रसारण अधिकार बेचने में कोई देरी हुई। फीफा ने पिछले साल भारतीय बाजार के लिए अगले दो फुटबॉल विश्व कप के प्रसारण अधिकार बेचने की प्रक्रिया शुरू कर दी थी और फीफा की तरफ से इसके लिए 100 मिलियन डॉलर (लगभग 942 करोड़ रुपये) की कीमत मांगी थी। किसी ने भी इस कीमत पर इन प्रसारण अधिकार को खरीदने में, रूचि न ली तो इस कीमत को घटाते-घटाते अब फीफा 35 मिलियन डॉलर (लगभग 330 करोड़ रुपये) पर आ चुकी है पर अभी भी इन अधिकार को कोई नहीं खरीद रहा।

अभी तक फुटबॉल विश्व कप प्रसारण अधिकार में किसी भी चैनल या ब्रॉडकास्टर ने कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई है। भले ही भारत खुद कभी फुटबॉल विश्व कप में नहीं खेला है, फिर भी यह आयोजन हमेशा से फुटबॉल प्रशंसकों के बीच एक बहुत बड़ा आकर्षण रहा है। इसे देखने वालों के रात-रात जागने और मैच देखने के कई किस्से हैं। अब जहां एक ओर बढ़ती आधुनिकता में, क्रिकेट के अतिरिक्त और दूसरे खेलों को देखना कम हुआ है, प्रसारण के लिए बजट का बड़ा हिस्सा क्रिकेट के लेने के बाद और दूसरे खेलों के लिए बचता ही क्या है? इस साल भी देख लीजिए कि साल शुरू होने से लगातार इतना क्रिकेट चल रहा है कि विज्ञापन देने वालों के खेल बजट का बड़ा हिस्सा तो खर्च हो चुका है और अभी तो बहुत सा क्रिकेट बचा है। तो ऐसे में फुटबॉल विश्व कप के प्रसारण के हिस्से में क्या आएगा?

इसलिए ही फुटबॉल विश्व कप के फुटबॉल प्रशंसकों के बीच आकर्षण का केंद्र बने रहने के बावजूद, हर चार साल में होने वाले इस बड़े आयोजन का भारत में प्रसारण करने के लिए अब तक कोई आगे नहीं आया है। किसी भी टीवी चैनल या स्ट्रीमिंग कंपनी ने इसे दिखाने के लिए आगे कदम नहीं बढ़ाया है। ऐसा क्यों है?

विश्वास कीजिए, भारत में फुटबॉल की लोकप्रियता की दलील पर चाहे जो भी कहते या लिखते रहें, भारत में फुटबॉल देखने वालों की गिनती पिछले कुछ साल से लगातार घट रही है। अगर आप प्रीमियर लीग को देखें, तो उसका मूल्यांकन 2013-14 में 145 मिलियन डॉलर था जो अब गिरकर हालिया सौदे में 60 मिलियन डॉलर रह गया है। अगर फुटबॉल की लोकप्रियता बरकरार रहती, तो ऐसा क्यों होता? आपकी जानकारी के लिए बता दें कि सोनी स्पोर्ट्स ने 2013 में फीफा विश्व कप 2014, 2018 और यूरो 2016 के व्यापारिक अधिकार लगभग 90 मिलियन डॉलर (आज के लगभग 8 47 करोड़ रुपये) में खरीदे थे। उस समय भारत के रुपये के हिसाब से देखें तो डॉलर की कीमत लगभग 50 प्रतिशत कम थी। 8 साल बाद, रिलायंस ने 2022 फुटबॉल विश्व कप के प्रसारण अधिकार 60 मिलियन डॉलर (आज के लगभग 565 करोड़ रुपये) में खरीदे।

इन्हीं दोनों का हिसाब ध्यान में रखते हुए, फीफा ने पिछले साल भारतीय बाजार के लिए अगले दो फुटबॉल विश्व कप प्रसारण के अधिकार एक

पैकेज के तौर पर 100 मिलियन डॉलर में बेचने का प्रस्ताव रखा। जैसा कि आपने ऊपर पड़ा, इन प्रसारण में किसी की दिलचस्पी न देखते हुए, फुटबॉल की विश्व संस्था फीफा ने इसका मूल्यांकन घटाकर 35 मिलियन डॉलर कर दिया। तब भी, इस बार, किसी ने इसमें दिलचस्पी नहीं दिखाई है। साफ है कि दुनिया के इस हिस्से में फुटबॉल विश्व कप का प्रसारण अब फायदे का सौदा नहीं रहा। आज के चैनल, भावनाओं या लोकप्रियता की दलील को नहीं, अपने मुनाफे को देखते हैं।

अगर इस मुद्दे को और बारीकी से देखें तो वास्तव में इस से भारत में, खेलों के प्रसारण की सच्ची तस्वीर सामने आ जाएगी। ये फुटबॉल विश्व कप प्रसारण अधिकार के खरीदारों की कमी से कहीं ज्यादा पेचीदा है। समय के साथ-साथ भारत के खेल प्रेमियों की बदलती रुचि भी इसके लिए जिम्मेदार है। यहां तक कि Dentsu India नाम की खेलों, गेमिंग और इ-स्पोर्ट्स से जुड़ी कंपनी ने 2026 फुटबॉल विश्व कप के जापान के प्रसारण अधिकार खरीद लिए, भारत में नहीं। ऐसा क्यों?

Dentsu, ने जापान में फीफा फुटबॉल विश्व कप 2026 के सभी व्यापारिक अधिकार बहुत सोच-समझ कर खरीदे। 2022 फुटबॉल विश्व कप में जापान में इस देखने वालों की गिनती एक रिकॉर्ड रही थी। दर्शकों की पसंद, विज्ञापनदाताओं और पूरे मीडिया इकोसिस्टम के मामले में जापान, भारत से काफी अलग है। इसमें एक खास मुद्दा है मैच का समय। भारतीय दर्शकों के लिए फुटबॉल विश्व कप के ज्यादातर मैच का प्रसारण देर रात या सुबह-सुबह का होगा और इस से दर्शकों की गिनती पर काफी असर पड़ सकता है। **नतीजा-** सीधा असर विज्ञापन की गिनती और उनसे होने वाली कमाई की उम्मीद पर। भारत में मौजूदा स्थिति ये है कि क्रिकेट के बड़े आयोजन भी उम्मीद के अनुसार नतीजे नहीं दे रहे, हालांकि क्रिकेट को ज्यादातर प्राइम टाइम यानि कि दर्शकों के देखने के सबसे अच्छे समय पर देखते हैं तो जो दूसरे खेल प्राइम टाइम से बाहर दिखाए जाएंगे, उनकी क्या हालत होगी, इसका अंदाजा आसानी से लगाया जा सकता है।

2026 फुटबॉल विश्व कप अमेरिका, कनाडा और मेक्सिको में खेला जा रहा है और इस वजह से ज्यादातर मैच भारत में दर्शकों के देखने के सबसे अच्छे समय से बाहर होंगे। इस बार फुटबॉल विश्व कप के 104 मैचों में से सिर्फ़ 14 मैच ही, आधी रात से पहले शुरू होंगे। इसकी तुलना में, कतर 2022 में 64 में से 44 मैच आधी रात से पहले हुए थे, जबकि रशिया में खेले 2018 फुटबॉल विश्व कप में 63 मैच आधी रात से पहले शुरु हुए थे।

ये भी सच है कि भारत में खेलों के क्षेत्र में व्यापार का मतलब अब शुद्ध मुनाफा कमाना रह गया है। भारत में टूर्नामेंट के हिसाब से रूचि बदलती रहती है और दर्शक भी खुद को किसी एक चैनल के साथ बांधते नहीं या उन सभी चैनल के साल भर के ग्राहक नहीं बन जाते जो खेलों का प्रसारण करते हैं। पश्चिम में, फुटबॉल को ज्यादातर 'पेवॉल' (पैसे देकर देखने वाली सर्विस) के जरिए देखते हैं, भारत में ऐसा नहीं कर सकते। यहां तो खेल के हिसाब से रूचि बदलती रहती है।

आईपीएल का भी हर मैच देखने वालों की गिनती का रिकॉर्ड नहीं बना रहा। 23 अप्रैल 2026 तक के आंकड़ों के अनुसार आईपीएल के स्ट्रीमिंग व्यूअरशिप में टॉप 15 मैच में 5 मैच तो उस रॉयल चेंजर्स बेंगलुरु के हैं, जिनके लिए विराट कोहली खेलते हैं। चेन्नई सुपर किंग्स की टीम में एमएस धोनी की गैर-मौजूदगी उनके मैचों को देखने वालों की गिनती पर सीधे असर डाल रही है। दर्शक तो ऐसा इंतजाम चाहते हैं कि आईपीएल देखा और उस चैनल को भूल गए। किसी की रुचि सालाना सब्सक्रिप्शन फीस देने में नहीं है। फिल्म दिखाने वाले चैनल या ओटीटी प्लेटफार्म के साथ ऐसा नहीं होता।

रिकॉर्ड ये बताता है कि 2022 फुटबॉल विश्व कप को भारत में 16.87 करोड़ दर्शकों ने देखा जबकि चीन में इसे 103 करोड़ दर्शकों ने देखा। आज शायद सभी इस बात को भूल गए होंगे कि 2022 फुटबॉल विश्व कप को जियो सिनेमा ने टीवी पर मुफ्त दिखाया था। इसकी तुलना में स्पोर्ट्स 18एचडी पर इसे स्ट्रीम किया था और फीस सिर्फ 12 रूपये थी। भारत में लगभग आधे-आधे दर्शक इन दोनों के हिस्से में आए थे। टीवी पर मैच मुफ्त होने के बावजूद कई करोड़ दर्शक पैसा देकर स्ट्रीमिंग पर चले गए। रिकॉर्ड ये है कि इस मुफ्त प्रसारण से जियो स्टार को कई करोड़ रुपये का नुकसान हुआ पर वास्तव में ये जियो को कमाने के लिए ये उनका निवेश था व्यापार में।

इतनी बड़ी मुफ्त देखने की सुविधा 2022 फुटबॉल विश्व कप के समय मिली, तब भी कुल मिलाकर, देश में फुटबॉल देखने वालों की गिनती में कमी आई। पुरुषों के फुटबॉल की सबसे बड़ी लीग, इंडियन सुपर लीग के प्रसारण अधिकार की

क़ीमत पिछले एक साल में 97 प्रतिशत तक गिर गई है। फुटबॉल विश्व कप में भी यही सिलसिला देखने को मिला। 2022 फुटबॉल विश्व कप में हर मैच की कीमत 6.94 करोड़ रुपये थी जो चार साल बाद, गिरकर 1.56 करोड़ रुपये प्रति मैच तक आ चुकी है (लगभग 77.5 प्रतिशत की गिरावट) और ये भी नहीं मिल रही है।

एक और बड़ी दिक्कत है। फुटबॉल मैच के प्रसारण में विज्ञापन के मौकों की कमी भी एक और बड़ी समस्या है। क्रिकेट में हर ओवर या विकेट गिरने के बाद, या शायद टेनिस में हर सेट के बाद विज्ञापन दिखा सकते हैं, लेकिन फुटबॉल में, ये विज्ञापन दिखाने वाला मौका ज्यादातर मैच से पहले, हाफ-टाइम और फुल-टाइम पर ही मिलता है। इसमें बार-बार खेल नहीं रुकता। विज्ञापन बाजार अभी भी कीमत को लेकर अब पहले से बहुत ज्यादा होशियार हो गया है। ब्रांड अब टीवी और डिजिटल, दोनों ही प्लेटफॉर्म पर ऐसी वापसी चाहते हैं जिन्हें मापा जा सके और जो लगातार मिलती रहे। इसलिए प्रसारण अधिकार खरीदने वाले शायद अब ज़्यादा सोच-समझकर कदम उठा रहे हैं। वे अब सिर्फ़ दर्शकों की गिनती ही नहीं, बल्कि दर्शकों के जुड़ाव के दर्जे और सही समय पर भी ध्यान दे रहे हैं।

तो क्या कोई हल निकलेगा? ऐसे संकेत हैं कि अब खुद फीफा ने भारत के लगभग सभी बड़े ब्रॉडकास्टर, के साथ खुद बातचीत शुरू की है ताकि कोई आखिरी हल निकाला जा सके। अगर सारे विकल्प फेल हो जाते हैं, तो 28 साल बाद फुटबॉल विश्व कप फिर से सरकारी दूरदर्शन पर दिखाया जा सकता है। 'स्पोर्ट्स ब्रॉडकास्टिंग सिग्नल्स (प्रसार भारती के साथ अनिवार्य शेयरिंग) एक्ट' के तहत, राष्ट्रीय महत्व के खेल आयोजनों को सरकारी ब्रॉडकास्टर के साथ शेयर करना जरूरी होता है।

दूरदर्शन की मूल संस्था प्रसार भारती ने 1998 फुटबॉल विश्व कप के अधिकार से 3.5 करोड़ रुपये का मुनाफा कमाया था। इस एक्ट के तहत बड़े मैच, नॉकआउट और फाइनल भी दूरदर्शन पर दिखाए जा सकते हैं, भले ही उनके प्रसारण अधिकार किसी और के पास हों।

दूसरी तरफ ऐसे संकेत आ रहे हैं कि कुछ ब्रॉडकास्टर ने इन अधिकार में रूचि तो दिखाई है पर तब जबकि ये अधिकार 15 मिलियन डॉलर से 20 मिलियन डॉलर के बीच की कीमत पर मिल जाएं। अगर फीफा साथ में 2030 फुटबॉल विश्व कप के अधिकार को एक साथ बेचने को तैयार हो तो यह कीमत थोड़ी बढ़ सकती है।

चूंकि टूर्नामेंट कनाडा, मेक्सिको और अमेरिका में है और 'असुविधाजनक टाइम जोन' का मुद्दा नजरअंदाज नहीं कर सकते, इसलिए ब्रॉडकास्टर अधिकार लेने में ज्यादा दिलचस्पी नहीं दिखा रहे हैं। उन्हें लगता है कमाई करना मुश्किल होगा, क्योंकि 104 में से 90 मैच भारत में आधी रात के बाद और सुबह-सवेरे खेले जाने हैं। इसलिए मौजूदा हालात को देखते हुए, ज्यादातर ब्रॉडकास्टर मोल भाव के लिए भी तैयार नहीं हैं। संयोग से जब 1994 में अमेरिका ने पिछली बार विश्व कप की मेजबानी की थी, तब दूरदर्शन ने मैचों का प्रसारण किया था।

एक और ध्यान रखने वाला मुद्दा विश्व कप खेलने के समय का है। जियो सिनेमा तब वायकॉम 18 का हिस्सा था जब कतर में 2022 विश्व कप खेले थे और जियों ने 60 मिलियन डॉलर में अधिकार खरीदे थे। ध्यान दीजिए तब जियो सिनेमा एक नए ब्रॉडकास्टर थे और अपनी पहचान बनाने के लिए इस मौके को हाथ से न जाने दिया। 2014 में भी कुछ ऐसी ही स्थिति बनी थी। तब एक नया शुरू हुआ चैनल था सोनी सिक्स और उन्हें भी विश्व कप के अधिकार खरीदना फायदे का सौदा लगा। उन्होंने एक साथ 2014 (ब्राजील) और 2018 (रूस) विश्व कप के अधिकार 90 मिलियन डॉलर में खरीदे थे।

पहला मैच 11 जून को खेलना है और 50 से भी कम दिन बचे हैं। भारतीय दर्शकों को इस टूर्नामेंट का सीधा प्रसारण देखने में मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है। आपको ये बता दें कि 2026 फीफा विश्व कप फाइनल में एक अभूतपूर्व 25 मिनट का हाफ-टाइम ब्रेक शुरू करने की बड़ी संभावना है। ऐसा किया तो एक बड़े पैमाने पर मनोरंजन का तमाशा दिखाने का रास्ता साफ हो जाएगा। इसी तरह से फुटबॉल में और भी ब्रेक शुरू करने की कोशिश है ताकि प्रसारण अधिकार खरीदने वाले को और ज्यादा विज्ञापन समय मिले।

खेल रत्न और अर्जुन अवॉर्ड की चयन नीति बदलेगी

राष्ट्रीय खेल पुरस्कारों में और अधिक पारदर्शिता लाने के साथ हर वर्ष होने वाले विवादों से बचने के लिए खेल मंत्रालय ने मेजर ध्यानचंद खेल रत्न, अर्जुन अवॉर्ड और द्रोणाचार्य अवॉर्ड की चयन नीति में परिवर्तन की तैयारी कर ली है। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार खेल मंत्रालय का कहना है कि नई नीति को इस तरह से तैयार किया जा रहा है, जिसमें अवॉर्ड पाने के योग्य उम्मीदवारों को आवेदन की जरूरत नहीं पड़े। जिस तरह ओलंपिक और एशियाई खेलों में पदक जीतने वाले खिलाड़ियों को मंत्रालय तत्काल तय नकद अवॉर्ड मुहैया कराता है, उसी तरह ओलंपिक, विश्व चैंपियनशिप और एशियाई खेलों में पदक जीतने वाले खिलाड़ियों को अंकों के आधार पर अवॉर्ड के लिए प्राथमिकता दी जाएगी।

अवॉर्ड चयन नीति में होने वाला परिवर्तन जल्द आधिकारिक होगा। नीति इस तरह की होगी, जिसमें खिलाड़ियों के प्रदर्शन के आधार पर उनके अंक निर्धारित किए जाएंगे। फिर इन्हें मंत्रालय की ओर से गठित चयन समिति के सामने रखा जाएगा। मौजूदा नीति के अनुसार सभी खिलाड़ियों को अर्जुन और खेल र| के लिए आवेदन करना होता है। आवेदन के आधार पर मंत्रालय की ओर से गठित चयन समिति खिलाड़ियों का चयन कर खेल मंत्रालय को उन्हें पुरस्कार देने की सिफारिश करती है।

इस बार के पुरस्कारों का हो रहा है पुनर्मूल्यांकन : इस बार के राष्ट्रीय खेल पुरस्कार अब तक नहीं दिए गए हैं। चयन समिति ने 24 खिलाड़ियों को अर्जुन पुरस्कार देने की सिफारिश की थी। चयनित अडियों की सूची खेल मंत्री के पास है, लेकिन इनका पुनर्मूल्यांकन किया जा रहा है। मंत्रालय का कहना है कि अर्जुन पुरस्कार प्रतिष्ठित पुरस्कार है और इसे हर किसी को नहीं दिया जाना चाहिए। इसी को ध्यान में रखते हुए ही मंत्रालय ने चयन नीति को बदलने का फैसला लिया है।

अगले साल कराएंगे एफ-1 रेस : खेल मंत्री मनसुख मांडविया ने कहा, '2027 में ग्रेटर नोएडा के बुद्ध इंटरनेशमान सर्किट (बीईसी) पर एक बार फिर फार्मूला-1 रेस का आयोजन किया जाएगा। एफ-1 का कहना है. इस रेस के लिए भारत महत्वपूर्ण बाजार है, लेकिन 2027 में यहां कोई रेस निर्धारित नहीं की गई है।' मांडविया ने कहा, पश्चिम एशिया में तनाव के चलते तीन कंपनियों ने देश में एफ-1 कराने की इच्छा जताई है। टैक्स की जटिलताएं दूर की जाएंगी। उम्मीद है कि 2027 में बीआईसी पर एफ-1 का आयोजन होगा। अदाणी ग्रुप की और से कर्ज में डूबे जेपी समूह की संपतियों का अधिग्रहण हो रहा है, जिनमें बीआईसी का फॉर्मूला-1 ट्रैक भी शामिल है।

योग, खो-खो, कबड्डी, मलखंब की दावेदारी : खेल मंत्री ने कहा, 2030 राष्ट्रमंडल खेलों में भोग, खो-खो, कबड्डी और मलखंब में में दो के साथ-साथ टीम खेलों में क्रिकेट और हॉकी शामिल होंगे।

एशियाड में जाएगी मुख्य हॉकी टीम : एशियाई खेल और हॉकी विश्वकप के आयोजन में कम अंतराल होने से एक टीम का दोनों आयोजनों में खेलना मुश्किल है। ऐसे में हॉकी की दो टीमें उतरी जाएगी और मुख्य टीम एशियाड में खेलेगी।

फीफा विश्व कप में आत्मघाती गोल अपनों पे सितम, गैरों पे रहम

हरीश हर्ष
खेल समीक्षक

फुटबॉल के खेल में आत्मघाती गोल एक ऐसा बदनुमा दाग है, जिसकी चुभन कई सालों तक उस टीम को सहनी पड़ती है। आत्मघाती गोल की टीस से फीफा विश्व कप के मुकाबले भी अछूते नहीं रहे हैं। अब तक खेले गये 22 अध्यायों के कुल 964 मैचों जिसमें 2720 गोल खिलाड़ियों द्वारा ठोंका गया है, के 53 मैचों में सामान्य गोल करने के साथ-साथ आत्मघाती गोल का मनहूस रिकार्ड भी जुड़ा है। इसमें से नौ बार आत्मघाती गोल दागने वाली टीम जीतने में सफल हुई है तो आठ बार मैच ड्रॉ पर समाप्त हुआ जबकि दो मैच का फैसला तो खेल के दौरान दागे गये एकमात्र आत्मघाती गोल की बुनियाद पर उस देश के पराजय से हुआ है। इस सन्दर्भ में 2018 के रशिया आयोजन के दौरान आत्मघाती गोल से संबंधित नवीन कीर्तिमानों का सृजन हुआ है, जिसकी पुनरावृत्ति अब शायद न हो। उक्त विश्व कप में खेले गये 64 मैचों में 12 मैचों में इस घटना का नजारा देखने को मिला। इससे पहले 1998 आयोजन में जब प्रतिभागी देशों की संख्या 24 से बढ़ाकर 32 की गई थी तब सबसे अधिक 6 आत्मघाती गोल दर्ज हुए थे। 2018 आयोजन में जहां आस्ट्रेलिया, मोरक्को, नाईजीरिया, पोलैण्ड, मिश्र, ट्यूनीशिया जैसी टीमें जो कि ग्रुप दौर में बाहर हो गई, के खिलाड़ियों द्वारा आत्मघाती गोल किया गया है तो नॉकआउट दौर में ब्राजील, रशिया, मेक्सिको, स्विट्जरलैण्ड की टीमें भी इस मायाजाल का शिकार बनी। इस दुर्भाग्यजनक घटना का इस आयोजन में बार-बार होना, इस बात को इंगित करता है कि अब टीमें अपने रक्षापंक्ति में ज्यादा खिलाड़ी को खिलाते हैं जिसके कारण गोल मुहाने पर हमेशा भीड़ जमी रहती है। इस आपाधापी में कई बार डिफेन्डर गेंद क्लियर करने के प्रयास में अपने ही पाले में उसे डाल देता है।

शुरुआत में आत्मघाती गोल के स्वरूप को लेकर संशय और विवाद की स्थिति बनी रहती थी। लिहाजा 1997 में फीफा ने इस संदर्भ में एक दिशा-निर्देश जारी कर इसका समाधान किया है। इसके अनुसार यदि कोई खिलाड़ी स्वयं ही अपने गोल में गेंद डालता है अथवा विपक्षी खिलाड़ी के पास या क्रॉस हिट को अपने ही गोल पोस्ट में धकेल देता है, तो इसे आत्मघाती गोल माना जायेगा। इसके विपरीत जब विपक्षी खिलाड़ी द्वारा गोल में दागा गया शॉट या इस प्रयास में गोलपोस्ट से रिबाउन्ड शॉट यदि पहली टीम के खिलाड़ी से छुकर जाता है, तो उस स्थिति में गोल का श्रेय शॉट लेने वाले विपक्षी खिलाड़ी के पक्ष में माना जायेगा। 2018 आयोजन में भी फीफा ने तीन अवसरों पर मैच रिप्ले देखकर आत्मघाती गोल का निर्णय लिया है जिसमें अजीज बेहिच (ऑस्ट्रेलिया), ओघेनेकारो इटेबो (नाईजीरिया) और यासिने मेरीयल (ट्यूनीशिया) के न चाहने वाले प्रयास शामिल है।

विश्व कप इतिहास के इस बदनाम रिकार्ड से अनेक खिलाड़ी और अवसर जुड़े है। अपनों पे सितम, गैरों पे रहम की इस पंक्ति को चरितार्थ करने वालों में सबसे ज्यादा बदकिस्मत स्कॉटलैंड के टॉम बॉयड और ब्राजील के मर्सेलो है, जिन्होंने अपनी चूक से विश्व कप के पहले ही मैच में अपनी खुद की टीम पर गोल कर दिया है। इसमें से 26 साल के लेफ्ट बैक मर्सेलो वियेरा डिसिल्वा को ज्यादा शर्मिंदगी उठानी पड़ी, क्योंकि यह मैच 2014 में ब्राजील के घरेलु मैदान पर क्रोशिया के विरूद्ध खेल गया था। वैसे तो विश्व कप में पेनाल्टी किक द्वारा पहला गोल करने का श्रेय मैक्सिको के 18 वर्षीय रक्षापंक्ति के खिलाड़ी मैनुअल रोक्वेरॉस रोमास को जाता है जिन्होंने 19 जुलाई 1930 को खेले गये मैच के 42वें मिनट में अर्जेन्टीना के गोलकीपर एंजेल बोसियो को छकाकर गोल बनाया था। अलबत्ता इस सम्मान के तीन दिन पहले ही मैनुअल रोसास के नाम पर ही विश्व कप में पहला आत्मघाती गोल करने का दुर्भाग्य जुड़ चुका था। यह कारनामा उसने पार्क सेन्ट्रल, मोन्टेविडियो में चिली एवं मैक्सिको के मध्य खेले गये मैच में उस समय बनाया था जब मैच के 52वें मिनट उसका बैक पास गलती से गोल में बदल गया। मैनुअल रोसास के साथ एक कीर्तिमान यह भी जुड़ा है कि इस आयोजन के तीनों मैच में वह अपने बड़े भाई फेलिप के साथ खेले थे। इस तरह विश्वकप खेलने वाले यह भाइयों की पहली जोड़ी बनी। आज भी रामोस खुद की टीम पर गोल दागने वाले सबसे युवा खिलाड़ी (18 वर्ष 90 दिन) है।

2018 विश्वकप में क्रोशिया के मारियो मन्डजुकिच फाइनल में आत्मघाती गोल कर बैठे।

2018 आयोजन में मेजबान रशिया के रक्षापंक्ति के मजबूत स्तम्भ सर्गेई इग्नाशेविच 38 वर्ष 352 दिन की आयु में स्पेन के खिलाफ यह गलती कर बैठे हैं। इस तरह अपने कोच के आह्वान पर रिटायरमेन्ट के बाद पुनः खेलने वाले इग्नाशेविच ऐसे अभिशप्त गोल को दागने वाले सबसे बुजुर्ग खिलाड़ी बन गये और चार साल पहले होण्डुरस के नोएल वालाडेयर्स के 37 वर्ष 44 दिन के रिकार्ड को भंग किया। अलबत्ता नोएल वालाडेयर्स द्वारा अपने ही गोलकीपर को दगा देकर गोल बनाने का कारनामा का फैसला फीफा विश्व कप में गोल लाईन टेक्नोलाजी द्वारा फैसला दिया जाने वाला पहला गोल अवश्य बना है। इससे जुड़ा एक अन्य कीर्तिमान 2018 आयोजन में उस समय बना जब मोरक्को के अजीज

बॉहादाउड़ ने मैच के 95वें मिनट (90+5 इंजुरी टाइम) में अपने ही गोल में गेंद डाल दी और मैच ईरान के नाम कर दिया। यह इस आयोजन का सबसे पहला आत्मघाती गोल भी रहा है और नियमित समय में अब तक सबसे देरी से होने वाला आत्मघाती गोल भी। वैसे तो फीफा विश्व कप के इतिहास में मैच के अतिरिक्त समय में अभिशापित आत्मघाती गोल अब तक सिर्फ एक बार 1954 में इंग्लिश खिलाड़ी जिमी डिकिन्सन द्वारा 94वें मिनट में बेल्जियम के लिए बनाया गया था। रिकार्ड के लिए फीफा विश्व कप के इतिहास में सबसे तेज स्वमंघाती गोल दागने का दुर्भाग्य सेयाद कोलासीनेक (बोसनिया) को हासिल है जिसने 2014 में अर्जेंटीना के खिलाफ मैच के तीसरे मिनट (दो मिनट 8 सेकंड) ही में यह कारनामा कर दिया था।

2022 में मोरक्को के नायेफ आगुयर्ड आत्मघाती गोल कर खलनायक बने।

वास्तव में आत्मघाती गोल एक ऐसी घटना है जिसके साथ कोई खिलाड़ी और देश सपने में भी अपना नाम जोड़ना नहीं चाहेंगे। पर अपनी ही टीम पर गोल दागने के मामले में बुल्गारिया और रशिया के नाम एक लज्जाजनक कीर्तिमान यह भी है कि इन टीमों ने क्रमशः 1966 और 2018 आयोजन में दो बार यह गलती दोहराई है। फीफा विश्व कप में त्रिनिदाद एंड टोबागो एकमात्र देश है जिनके नाम पर एक गोल जो कि आत्मघाती गोल था, करने का कारनामा दर्ज है। अब तक विश्व कप में दोनों टीमों द्वारा आत्मघाती गोल दर्ज होने वाला सिर्फ एक ही मैच खेला गया है। यह अजीब किस्सा 2002 संस्करण में पुर्तगाल और अमरीका के मैच मे घटित हुआ है। इस संदर्भ में एक अनूठा कीर्तिमान नीदरलैण्ड के अर्नी ब्रॉन्डेस और क्रोशिया के मारियो मन्डजुकिच के नाम पर भी दर्ज है। अर्नी ब्रॉन्डेस ने 1978 में इटली के खिलाफ खेलते हुए पहले आत्मघाती गोल दागकर अपनी टीम को 1-0 से पीछे कर दिया था, तत्पश्चात उन्होंने मैच के 50वें मिनट में सामान्य गोल बनाकर अपनी टीम को बराबरी पर ले आया। कुछ ऐसा ही विश्व कप के फाइनल में भी देखा गया जब 2018 में पहली बार फाइनल मैच के दौरान 18वें मिनट में क्रोशिया के सेंटर फारवर्ड मारियो मन्डजुकिच का हेडर गलती से उनके गोल में चली गई और फ्रांस को 1-0 से बढ़त दिला दी। अलबत्ता मैच के दूसरे हाफ के 69वें मिनट में फ्रांससी गोलकीपर से गेंद छिनकर गोल दाग कर अपने गम को कुछ कम किया। वैसे इनके अलावा मैनुअल रोसास (मेक्सिको), रूड क्रोल (नीदरलैण्ड), सिनीसा मिहालोविक (यूगोस्लाविया), पार्क चु-यांग (दक्षिण कोरिया), पुयोल कार्लोस (स्पेन), फरनान्डीन्हो (ब्राजील), डेनिस चेरीशेव (रशिया) और एंजो जेरेमियास फर्नांडीस (अर्जेंटीना) के नाम भी विश्व कप में रेगुलर और आत्मघाती गोल कराने का कारनामा दर्ज है लेकिन अलग-अलग मैचों में।

एक देश द्वारा सबसे ज्यादा आत्मघाती गोल करने का दुस्साहस मेक्सिको के नाम पर है जिनकी टीम 60 मैच खेलने के बाद सबसे ज्यादा चार बार (1930, 1954, 1970 एवं 2018) इस दुर्भाग्य से जुड़ी है। इसका फायदा उठाने वाली टीम में सबसे ज्यादा छह बार (1954, 1998, 2014 एवं 2018) फ्रांस की रही है जिसमें से 2014 एवं 2018 में उनके खाते में दो-दो गोल आये हैं। एक मजेदार आंकड़ा यह भी है कि फ्रांस ही एकमात्र ऐसी विश्व कप विजेता टीम है जिसने इस आयोजन में अभी तक 73 मैच खेलने के बाद भी आत्मघाती गोल का शिकार नहीं बनी है जबकि कैमरून 26 मैच खेलने के बाद इसके किसी भी प्रकार के स्वाद से अछूता है। 1998 में पियरे ईसा (दक्षिण अफ्रीका) द्वारा किया गया आत्मघातक गोल विश्व कप का 1600वां गोल बना तो 2022 कतर में बना 100वां गोल जो नायेफ आगुयर्ड (मोरक्को) द्वारा किया गया, भी एक आत्मघाती गोल रहा है।

विश्वकप के मैदान में अपने ही पाले में गोल दागने वालों के साथ दुखद घटनाएं हो चुकी है। 1994 में कोलम्बिया के डिफेंडर आंद्रे एस्कोबार ने अमरीका के खिलाफ खेलते हुए आत्मघाती गोल कर दिया था जिससे उनकी टीम 2-1 से हार गई थी। इस गोल की वजह से कोलम्बिया उस टूर्नामेंट के पहले ही दौर मे बाहर हो गई थी। विश्वकप के एक हफ्ते बाद ही मेडेलिन में नाइट क्लब के बाहर गोली मार कर उनकी हत्या कर दी गई थी। एस्कोबार को कोलम्बिया के ड्रग्स कार्टेल के सदस्य गैलोन ब्रदर्स के बॉडीगार्ड हमबर्टो ने गोली मारी थी, क्योंकि यह माना गया कि कोलम्बिया के इस विश्व कप में बेहतर प्रदर्शन को लेकर उन्होंने बड़ी रकम दांव पर लगाई थी। कोलम्बिया के चहेते फुटबालर एस्कोबार की शव यात्रा में एक लाख 20 हजार से अधिक लोगों ने भाग लिया था। इस वर्ष क्वार्टर फाइनल में ब्राजील के डिफेंडर फरनान्डीन्हो की गलती से मैच के 13वें मिनट में बेल्जियम को अप्रत्याशित बढ़त मिल गई और अन्ततः ब्राजील यह मैच 2-1 से हार गया। इस पराजय का ठीकरा अन्ततः फरनान्डीन्हो के सिर पर फोड़ा गया और सोशल मिडिया में उसे और परिवार वालों को नस्लभेदी टिप्पणी का सामना करना पड़ा है। अब तक खेले गए सभी विश्व कप में से केवल 1934, 1950, 1958, 1962 और 1990 के संस्करणों में ही आत्मघाती गोल देखने को नहीं मिले हैं। 1950 में तो स्पेन के जोस पारा द्वारा 15वें मिनट में दागे गये आत्मघाती गोल को फीफा ने बाद में बदलकर ब्राजील के एडेमीर के नाम कर दिया है।

यह उम्मीद की जा रही है कि 2026 के विश्व कप आयोजन में आत्मघाती गोलों की संख्या में और वृद्धि होगी क्योंकि इस विश्वकप में 48 टीमें द्वारा 104 मैच खेले जा रहे हैं। अभी तक ना ही किसी भी खिलाड़ी ने एक से ज्यादा आत्मघाती गोल किया है और ना ही किसी भी देश द्वारा मैच में एक से ज्यादा आत्मघाती गोल किया गया है। इस विश्व कप आयोजन में ऐसे ही कुछ अनचाहे कीर्तिमानों का इंतजार रहेगा।

फीफा विश्व कप में दर्ज अब तक के आत्मघाती गोल का विवरण

क्र.	मैच दिनांक	खिलाड़ी एवं देश	विरूद्ध	मैच					मैदान एवं शहर
				दौर	समय	स्कोर	अंतिम स्कोर	परिणाम	
1	16.07.1930	मैनुअल रोमास (मेक्सिको)	चिली	ग्रुप	51 मिनट	2-0	3-0	पराजय	पार्क सेन्ट्रल, मोन्टेविडियो
2	09.06.1938	अर्नेस्ट लोईर्टचेर (स्विट्जरलैण्ड)	प. जर्मनी	प्रथम (रिप्ले)	22 मिनट	2-0	4-2	पराजय	पार्क डेस प्रिसेंस, पेरिस
3	16.06.1938	स्वेन जाकोबसेन (स्वीडन)	हंगरी	सेमीफाइनल	19 मिनट	1-1	5-1	पराजय	पार्क डेस प्रिसेंस, पेरिस
4	17.06.1954	जिम्मी डिकिन्सन (इंग्लैण्ड)	बेल्जियम	ग्रुप	94 मिनट	4-4	4-4	ड्रॉ	सेन्ट जाकोब स्टेडियम, बासेल
5	19.06.1954	रॉल कार्डेन्स (मेक्सिको)	फ्रांस	ग्रुप	49 मिनट	2-0	3-2	पराजय	शारमाईल्स स्टेडियम, जेनेवा
6	27.06.1954	ईविकस होरवट (यूगोस्लाविया)	पं. जर्मनी	क्वार्टरफाइनल	9 मिनट	1-0	2-0	पराजय	शारमाईल्स स्टेडियम, जेनेवा

7	03.07.1954	लुईस क्रुज (उराग्वे)	ऑस्ट्रिया	तीसरे स्थान	59 मिनट	2-1	3-1	पराजय	हार्डटर्म स्टेडियम, ज्यूरिख
8	16.07.1966	ईवान वुत्सोव (बुल्गारिया)	पुर्तगाल	ग्रुप	17 मिनट	1-0	3-0	पराजय	ओल्ड ट्रेफोर्ड, मानचेस्टर
9	20.07.1966	ईवान डेविडोव (बुल्गारिया)	हंगरी	ग्रुप	43 मिनट	1-1	3-1	पराजय	ओल्ड ट्रेफोर्ड, मानचेस्टर
10	14.06.1970	झेवियर गजमेन (मेक्सिको)	इटली	क्वार्टरफाइनल	25 मिनट	1-1	4-1	पराजय	ला बॉम्बोनेरा, स्टेडियम, तौलुसा
11	14.06.1974	कॉलिन करेन (ऑस्ट्रेलिया)	पूर्वी जर्मनी	ग्रुप	58 मिनट	1-0	2-0	पराजय	वोल्क्स पार्क स्टेडियम, हैम्बर्ग
12	19.06.1974	राबर्टो परफ्यूमो (अर्जेंटिना)	इटली	ग्रुप	35 मिनट	1-1	1-1	ड्रॉ	नेकर स्टेडियम, स्टुटगार्ड
13	23.06.1974	रूड क्रोल (नीदरलैण्ड)	बुल्गारिया	ग्रुप	78 मिनट	1-3	4-1	विजय	वेस्ट फालेन स्टेडियम, डार्टमुन्ड
14	07.06.1978	एन्ड्रानिक स्कन्डरियन (ईरान)	स्कॉटलैण्ड	ग्रुप	43 मिनट	1-0	1-1	ड्रॉ	चैटिव कैरेरस स्टेडियम, कोरडोबा
15	21.06.1978	अर्नी ब्रॉन्डेस (नीदरलैण्ड)	इटली	दुसरा	18 मिनट	1-0	2-1	विजय	मोनुमेन्टल स्टेडियम, ब्यूनस आयर्स
16	21.06.1978	बर्टी वोग्टस् (प.जर्मनी)	ऑस्ट्रिया	दुसरा	59 मिनट	1-1	3-2	पराजय	चैटिव कैरेरस स्टेडियम, कोरडोबा
17	20.06.1982	जोसेफ बारमोस (चेकोस्लावाकिया)	इंग्लैण्ड	ग्रुप	66 मिनट	2-0	2-0	पराजय	सेन मामेस स्टेडियम, बिलबायो
18	02.06.1986	लाजलो डाजका (हंगरी)	सोवियत संघ	ग्रुप	73 मिनट	5-0	6-0	पराजय	रिवोलुशन स्टेडियम, ईरापुआटो
19	10.06.1986	चो क्वांग राई (दक्षिण कोरिया)	इटली	ग्रुप	82 मिनट	3-1	3-2	पराजय	काउहटेमॉक स्टेडियम, प्यूबला
20	22.06.1994	आंड्रे एस्कोबार (कोलम्बिया)	अमरीका	ग्रुप	35 मिनट	1-0	2-1	पराजय	रोस बाउल, लॉस एन्जेलस
21	10.06.1998	थामस बॉयड (स्कॉटलैण्ड)	ब्राजील	ग्रुप	74 मिनट	2-1	2-1	पराजय	फ्रांस स्टेडियम, सेन्ट डेनिस
22	10.06.1998	युसुफ चिप्पो (मोरक्को)	नार्वे	ग्रुप	45 मिनट	1-1	2-2	ड्रॉ	ला मोसोन स्टेडियम, मॉन्टपेलियर
23	12.06.1998	पियरे ईसा (दक्षिण अफ्रीका)	फ्रांस	ग्रुप	77 मिनट	2-0	3-0	पराजय	वेलेड्रोम स्टेडियम, मारसिलेस
24	13.06.1998	एन्डोनी जुबीजर्रेता (स्पेन)	नाईजीरिया	ग्रुप	73 मिनट	2-2	3-2	पराजय	एन्टलान्टिक स्टेडियम, नॉन्टेस
25	21.06.1998	सिनीसा मिहालोविक (यूगोस्लाविया)	जर्मनी	ग्रुप	73 मिनट	1-2	2-2	ड्रॉ	फैलिक्स बोलाएर्ट स्टेडियम, लेन्स
26	24.06.1998	जॉर्जी बाचेव (बुल्गारिया)	स्पेन	ग्रुप	88 मिनट	5-1	6-1	पराजय	फैलिक्स बोलाएर्ट स्टेडियम, लेन्स
27	05.06.2002	योर्ग कोस्टा (पुर्तगाल)	अमरीका	ग्रुप	29 मिनट	2-0	3-2	पराजय	सुवांन विश्वकप स्टेडियम, सुवांन
28	05.06.2002	जेफ एगोस (अमरीका)	पुर्तगाल	ग्रुप	71 मिनट	2-3	3-2	विजय	सुवांन विश्वकप स्टेडियम, सुवांन
29	07.06.2002	पुयोल कार्लोस (स्पेन)	पैराग्वे	ग्रुप	10 मिनट	1-0	3-1	विजय	जियन्जू विश्वकप स्टेडियम, जियन्जू
30	10.06.2006	कार्लोस गमारा (पैराग्वे)	इंग्लैण्ड	ग्रुप	03 मिनट	1-0	1-0	पराजय	फीफा विश्वकप स्टेडियम, फ्रैन्कफर्ट
31	17.06.2006	क्रिस्टीयन जकार्डो (इटली)	अमरीका	ग्रुप	27 मिनट	1-1	1-1	ड्रॉ	फ्रिटज वाल्टर स्टेडियम, कैसरस्लॉटर्न
32	20.06.2006	ब्रेन्ट सान्चो (त्रिनिदाद)	पैराग्वे	ग्रुप	25 मिनट	1-0	2-0	पराजय	फ्रिटज वाल्टर स्टेडियम, कैसरस्लॉटर्न
33	08.07.2006	अरमान्डो पेटिट (पुर्तगाल)	जर्मनी	तीसरे	60 मिनट	2-0	3-1	पराजय	गॉटलिब डेम्मार स्टेडियम, स्टुटगार्ड
34	14.06.2010	डेनियल अगेर (डेनमार्क)	नीदरलैण्ड	ग्रुप	46 मिनट	1-0	2-0	पराजय	एफएनबी स्टेडियम, जोहान्सबर्ग
35	17.06.2010	पार्क चु-यांग (दक्षिण कोरिया)	अर्जेन्टीना	ग्रुप	16 मिनट	1-0	4-1	पराजय	एफएनबी स्टेडियम, जोहान्सबर्ग
36	12.06.2014	मारसेलो डिसिल्वा (ब्राजील)	क्रोशिया	ग्रुप	11 मिनट	1-0	3-1	विजय	कोरेंथियन्स एरीना, साओ पाउलो
37	15.06.2014	सेयाद कोलासीनेक (बोसनिया)	अर्जेन्टिना	ग्रुप	03 मिनट	1-0	2-1	पराजय	मरकाना स्टेडियम, रियो
38	15.06.2014	नोएल वालाडेयर्स (होन्डुरस)	फ्रांस	ग्रुप	48 मिनट	2-0	3-0	पराजय	जोस पिन्हीरो स्टेडियम, पोर्ट एल्ग्रे
39	26.06.2014	जॉन बोये (घाना)	पुर्तगाल	ग्रुप	30 मिनट	1-0	2-1	पराजय	नेशनल स्टेडियम, ब्राजीलिया
40	30.06.2014	जोसेफ योबो (नाईजीरिया)	फ्रांस	प्री-क्वार्टरफाइनल	92 मिनट	2-0	2-0	पराजय	नेशनल स्टेडियम, ब्राजीलिया
41	15.06.2018	अजीज बॉहादाउज (मोरक्को)	ईरान	ग्रुप	95 मिनट	1-0	1-0	पराजय	क्रेस्टोवस्की स्टेडियम, सेट पीटर्सबर्ग
42	15.06.2018	अजीज बेहिच (ऑस्ट्रेलिया)	फ्रांस	ग्रुप	81 मिनट	2-1	2-1	पराजय	कजान एरिना, कजान
43	16.06.2018	ओघेनेकारो इटेबो (नाईजीरिया)	क्रोशिया	ग्रुप	32 मिनट	1-0	2-0	पराजय	कालीनिन्ग्राद स्टेडियम, कालीनिन्ग्राद
44	16.06.2018	थियागो सियानेक (पोलैण्ड)	सेनेगल	ग्रुप	37 मिनट	1-0	2-1	पराजय	स्पार्कतेक स्टेडियम, मास्को
45	19.06.2018	अहमद फाथी (मिश्र)	रशिया	ग्रुप	47 मिनट	1-0	3-1	पराजय	क्रेस्टोवस्की स्टेडियम, सेट पीटर्सबर्ग
46	25.06.2018	डेनिस चेरीशेव (रशिया)	उराग्वे	ग्रुप	23 मिनट	2-0	3-0	पराजय	कॉसमॉस एरिना, समारा
47	27.06.2018	एडसन अल्वारेज (मेक्सिको)	स्वीडन	ग्रुप	74 मिनट	3-0	3-0	पराजय	सेन्ट्रल स्टेडियम, इकेटरिनबर्न
48	27.06.2018	येन सोमर (स्विट्ज़रलैण्ड)	कोस्टारिका	ग्रुप	93 मिनट	2-2	2-2	ड्रॅ	निझनी नोरगोराद स्टेडियम, निझनी नोरगोराद
49	28.06.2018	यासिने मेरीयल (ट्यूनीशिया)	पनामा	ग्रुप	33 मिनट	1-0	2-1	विजय	मोरडोविया एरिना, सारान्सक
50	01.07.2018	सर्गेई इग्नाशेविच (रशिया)	स्पेन	प्री-क्वार्टरफाइनल	12 मिनट	1-0	1-1	ड्रॉ	लुझनिकी स्टेडियम, मास्को
51	06.07.2018	फरनान्डीन्हो (ब्राजील)	बेल्जियम	क्वार्टरफाइनल	13 मिनट	1-0	2-0	पराजय	कजान एरिना, कजान
52	06.07.2018	मारियो मन्डज़ुकिच (क्रोशिया)	फ्रांस	फाइनल	18 मिनट	1-0	4-2	पराजय	लुझनिकी स्टेडियम, मास्को
53	01.12.2022	नायेफ आगुयर्ड (मोरक्को)	कनाडा	ग्रुप	40 मिनट	2-1	2-1	विजय	अल-थुमामा स्टेडियम, दोहा
54	03.12.2022	एंजो जेरेमियास फर्नांडीस (अर्जेंटीना)	ऑस्ट्रेलिया	प्री-क्वार्टरफाइनल	77 मिनट	2-1	2-1	विजय	अहमद बिन अली स्टेडियम, अर-रेयान

ANKUR CRICKET ACADEMY

WE GIVE TO NATION

Er. Jyoti Prakash Tyagi
BCCI, NCA Level A Coach
Director

Goal : Empower Youth to Make Stronger Country.
Vision & Mission : To develop young people as professionals like cricket players, Administrators, IIT Engineers,Doctors, Lawyers, Teachers & overall good citizens.

International Players
Ayan Mohd. Khan (Oman)
Samay Shrivastava (Oman)
Mohnish Mishra (WCU19)
Rahul Batham (WCU 19)
Pranjal Puri (Under 17)

Ranji Trophy, Vijay Hazare & Mushtaq All players
Mohnish Mishra
Amarjeet Singh
Aditya Shrivastav
Anupam Topo
Vickrant Singh
Shivam Tiwari
Varun Sharma
Punit Date
Ayan Mohd Khan
Rahul Batham
Ankush Singh
Yuvraj Nema

Senior Women's
Ankita Chaturvedi
Akshita Chaturvedi
Tammana Nigam
Nikita Singh
Dipika Shakya

India & BCCI Camp's
Amarjeet Singh (Under 23)
Punit Date (MRF Pace Foundation)
Aditya Shrivastav (Under 19 & 16)
Tanmay Patwardhan (Under 19)
Ayan Mohd Khan (Under 22)
Vickrant Singh (Under 17)
Tammana Nigam (Under 19)
Nikita Singh (Under 19)
Rahul Batham (Under 19 & 16)
Ankush Singh (Under 19 & 16)
Shivam Chobey (Under 19)
Shivam Tiwari (Under 16)
Akhil Yadav (Under 19)
Yuvraj Nema (Under 19)

IPL Players
Mohnish Mishra (Pune, Deccan Chargers)
Amarjeet Singh (Rajasthan Royals)
Aniket Verma (hydrabad SRH)
Shivam Shukla (KKR)

International County Players
Amarjeet Singh (England)
Mohnish Mishra (England)
Abhimanyu Pandey (England)
Varun Sharma (Australiya)
Samay Shrivastav (Kenya)
Ayan Mohd Khan (Oman)
Vickrant Singh (USA)
Punit Date (England)
Anupam Topo (England)

M.P.L players
Aniket Verma
Shivam Shukla
Rahul Batham
Punit Datey
Ankush Singh
Kanishq Dubey
Aviral Singh
Ritik Tada
Akhil Yadav
Tanishq Yadav
Yuvraj Nema
Vanshika Prajapati

State Captain's
Aditya Shrivastav (Ranji Trophy Champion)
Mohnish Mishra (Vijay Hazare Trophy)
Shivam Tiwari (Under 16, MP)
Shreyash Singh (Under 16, MP)
Man Dubey (Under 16, MP)
Vaidaihi Rajpoot (Under 16, MP)

We Also Produced Many Engineers, Doctors, Lawyers, Businessmen ,IITans & Good Citizens Of India

Thank's to All Promotors &Well-wishers.
MP Sports Youth & Welfare Dept.
MP Cricket Association.
All Coaches To Coach Players.

FACILITIES AVAILABLE

NCA BCCI Coaches Available.
All Coaching Programming Designed by NCA Pattern.
Indoor Practice Arena Available. Flood Light Practice Arena.
8 Turf, 5 Kota Stone Artificial, 3 Synthetic Turf Available ,Bowling Machine Available.
All Types of Advanced Coaching Equipment Available.
Hostel Facility Available.
Speed Gun. ,Fitness Trainers & Dedicated Coaching Staff.

वही जोश, वही रफ्तार... फिर चैंपियन बनने भोपाल लेपर्ड्स तैयार

मध्यप्रदेश क्रिकेट लीग (MPL) 2026 में भोपाल लेपर्ड्स को एक बार फिर खिताब के बड़े दावेदार के रूप में माना जा रहा है। मुकाबले से पहले हाल ही में टीम ने अपनी प्रैक्टिस भी शुरू कर दी है। 2025 में डिफेंडिंग चैंपियन रहने के बाद, टीम इस बार अपने खिताब की रक्षा करने के इरादे से इंदौर के मैदानों पर उतरने को तैयार है।

भोपाल लेपर्ड्स का एमपीएल सफर

2024	उपविजेता
2025	विजेता
2026	लगातार दूसरी बार चैंपियन बनने का लक्ष्य

भोपाल लेपर्ड्स टीम : मो. अरशद खान (कप्तान), कुणाल राय, मनीष कुमार, अनिकेत वर्मा, कमल त्रिपाठी, अंश बागड़िया, युवराज नेमा, सूरज यादव, हिमांशु शिंदे, अजय मिश्रा, प्रांजुल पुरी, राहुल चंद्रोल, तनिष्क यादव, अंचित सिंह ठाकुर, अमोल कस्तुरे, पवन निर्वाणी, अनुराग मालवीय।

मध्यप्रदेश क्रिकेट लीग (MPL) 2026 का आयोजन इस बार जून माह में इंदौर में किया जाएगा, जिसमें कुल 10 टीमें हिस्सा लेगी। टूर्नामेंट के दूसरे सीज़न के लिए सभी टीम तैयार हैं लेकिन गत विजेता भोपाल अपने टाइटल को बचाने के लिए खास तैयारी कर रहा है। इस बार भी टीम भोपाल का मुख्य लक्ष्य ट्रॉफी जीत कर लगातार दूसरी बार चैंपियन बनना है। एक बार फिर आईपीएल खिलाड़ी मोहम्मद अरशद खान की कप्तानी में एमपीएल में उतरने जा रही भोपाल लेपर्ड्स ने अपनी तैयारी शुरू कर दी है। टीम ने 4 से 10 मई और 22 से 30 में मई तक अपने विशेष कैंप में कड़ी प्रैक्टिस का बड़ा प्लान तैयार किया है।

भोपाल का यह कैम्प उसके अपने मैदान श्रुस्बरी इंटरनेशनल स्कूल पर लगने जा रहा है जहां सभी तरह की अंतरराष्ट्रीय स्तर के क्रिकेट सुविधाएं मौजूद है। इस मैदान पर मध्य प्रदेश क्रिकेट संघ अपने कई मैच आयोजित कर चुका है। डिफेंडिंग चैंपियन भोपाल का आत्म विश्वास इस बार भी लीग को लेकर सातवें आसमान पर है। गत वर्ष फाइनल में उसने चंबल घड़ियाल को रोमांचक मैच में दो रनों से हराकर खिताब जीता था। टीम भोपाल ने उसी मानसिकता के साथ मैदान में उतरने का प्लान इस बार भी तैयार किया है।

नीलमी के बाद टीम में युवाओं और अनुभवी क्रिकेटरों का अच्छा मिश्रण है। बल्लेबाजी में अनिकेत वर्मा जिन्हें 13.20 लाख में खरीदा गया है, कुणाल, सूरज, अनस और राहुल चंद्रोल जैसे आक्रामक बल्लेबाज मध्य क्रम को मजबूती देंगे, जबकि गेंदबाजी और आल राउंडर में कप्तान अरशद खान, कमल त्रिपाठी, तनिष्क यादव, अजय, अनुराग, मनीष, युवराज नेमा, अमोल, हिमांशु शिंदे, प्रांजल पुरी एवं पवन निर्वाणी जैसे नए टैलेंट टीम को मजबूती प्रदान करेंगे। टीम मैनेजमेंट ने अपनी टीम को मजबूती प्रदान करने के लिए बल्लेबाजी के साथ-साथ गेंदबाजों और आलराउंडर को भी काफी महत्व दिया है जो मैच का रूख बदल सकते हैं। इस बार टूर्नामेंट ग्वालियर की बजाय इंदौर में आयोजित हो रहा है इंदौर की पिचें आमतौर पर बल्लेबाजों के अनुकूल होती हैं जो भोपाल के आक्रमक बल्लेबाजों के लिए फायदेमंद साबित हो सकती है खासतौर से अनिकेत वर्मा के लिए। भोपाल लेपर्ड्स टीम मैनेजमेंट ने एक बार फिर आलराउंडर खिलाड़ी अरशद खान को कप्तान बनाकर टीम का सशक्त नेतृत्व सौंपा है। टीम मैनेजमेंट को पूरी उम्मीद है कि अरशद खान अपने कुशल नेतृत्व और प्रदर्शन से टीम को एक बार फिर चैंपियन बनाने का पूरा प्रयास करेंगे।

आलराउंडरों और पॉवर हिटिंग पर लेपर्ड्स का विशेष ध्यान रहेगा

कुल मिलाकर भोपाल लेपर्ड्स की टीम अपने आलराउंडर संतुलित गेंदबाजी और पावर हिटिंग बल्लेबाजी के दम पर सेमीफाइनल और फाइनल तक पहुंचने की प्रबल दावेदर मानी जा रही है। टीम ने आलराउंडरों को विशेष महत्व दिया है। नीलामी में भी आलराउंडरों पर लेपर्ड्स ने जमकर बोली लगाई थी।

भोपाल के लिए बड़ी चुनौती : इस बार MPL का विस्तार हुआ है और अब टूर्नामेंट में 10 टीमें हिस्सा लेंगी (पहले सात थी)। भोपाल से एक नई टीम और इंदौर की दो नई टीमों के आने से भोपाल लेपर्ड्स के लिए राह पिछली बार की तुलना में काफी कठिन हो सकती है। कुल मिलाकर भोपाल लेपर्ड्स की टीम अपनी संतुलित गेंदबाजी और पावर-हिटिंग बल्लेबाजी के दम पर सेमीफाइनल और फाइनल तक पहुंचने की प्रबल दावेदार मानी जा रही है।

ओपनर्स, ऑल राउंडर और तेज गेंदबाज हमारी रणनीति का विशेष हिस्सा होंगे : हेड कोच ओमी

लेपर्ड्स टीम के हेड कोच और मध्य प्रदेश टीम के पूर्व कप्तान बृजेश तोमर (ओमी) ने बताया कि गत सीजन के खिताब को बचाने भोपाल लेपर्ड्स के सभी स्टार पूरी तरह तैयार हैं। हम अपने बल्लेबाजों, गेंदबाजों और ऑलराउंडरों की कमियों पर इस समय काम कर रहे हैं ताकि मैचो के दौरान हमें किसी भी क्षेत्र में परेशानी ना हो। हम क्षेत्ररक्षण पर भी फोकस कर रहे हैं। ओपनर्स और विकेटकीपर बल्लेबाज हमारे लिए विशेष आकर्षण का केंद्र होंगे इसलिए यह भी हमारी रणनीति का विशेष हिस्सा होंगे। अरशद खान की कप्तानी में टीम लेपर्ड्स पूरी तरह संतुलित है। अनिकेत वर्मा, कमल त्रिपाठी, प्रांजल पुरी, राहुल चंद्रोल (विकेट कीपर) से हमें बड़ी उम्मीदें इस लीग में रहेंगी। ओमी ने बताया कि कोचिंग स्टाफ इस समय पूरी टीम को विशेष प्रशिक्षण दे रहा है और खिलाड़ियों की कमियों पर फॉक्स भी कर रहा है।

पूरी मजबूती के साथ इंदौर में उतरेगी भोपाल लेपर्ड्स : अभिषेक मोहन गुप्ता

भोपाल लेपर्ड्स के ऑनर अभिषेक मोहन गुप्ता में नेशनल स्पोर्ट्स टाइम्स को एक विशेष मुलाकात में बताया कि इंदौर में होने जा रहे MPL 2026 में भोपाल लेपर्ड्स अपने ओपनर्स, गेंदबाज और ऑल राउंडर्स के साथ पूरी मजबूती से मैदान में उतरेगी और लगातार दूसरी बार ट्रॉफी जीतने का पूरा दम लगाएगी। अभिषेक मोहन गुप्ता ने कहा कि हमारी टीम पूरी तरह संतुलित है और कप्तान मोहम्मद अरशद खान की कप्तानी में हम फिर उतारने जा रहे हैं। हमारे लिए अरशद काफी लकी साबित हुए हैं। इसी वजह से हमने उन्हें 3 वर्षों के लिए रिटेन किया है। वे अभी गुजरात की ओर से आईपीएल खेल रहे है जिसका पूरा फायदा वे अपनी टीम को लीग में पहुंचते नजर आएंगे। साथ ही अनिकेत वर्मा, सूरज, अनस, तनिष्क के रूप में भी हमारी टीम में बेहतरीन बल्लेबाज शामिल है। अनिकेत भी आईपीएल में सनराइजर्स हैदराबाद की ओर से जौहर दिखा रहे हैं। उन्होंने कहा कि अनिकेत भोपाल लेपर्ड्स से चमक कर आईपीएल में बल्ले से गदर मचा रहे हैं। यह लेपर्ड्स के लिए बड़े हर्ष की बात है।

उन्होंने बताया कि इस बार हमने कई पुराने खिलाड़ियों को जहां रिटेन किया है वहीं ऑक्शन में कई युवा क्रिकेटरों को टीम में शामिल कर टीम को मजबूत बनाया है। दो डेवलपमेंट खिलाड़ी कुणाल राय (विकेटकीपर बल्लेबाज) मनीष कुमार (तेज गेंदबाज) को भी टीम में लिया गया है। भोपाल लेपर्ड्स के मालिक व HMG सेंटर फॉर स्पोर्ट्स एक्सीलेंस के हेड अभिषेक मोहन गुप्ता ने बताया कि MPL 2026 के लिए हमारी टीम पूरी तरह तैयार है। टीमों की संख्या 10 होने से टूर्नामेंट पहले की अपेक्षा इस बार बड़ा हो गया है। बैक टू बैक हमें कुल 9 मैच खेलने है जिसमें हमे अच्छे रन रेट व बारिश का पूरा ध्यान रखना होगा। जून में टूर्नामेंट हो रहा है तो बारिश का सामना सभी टीमों को करना पड़ेगा क्योंकि इंदौर में जून में काफी बारिश होती है।

- **2026 सीजन के लिए टीम ऑपर का खास विजन :** 2025 में खिताब जीतने के बाद 2026 में भी उनका लक्ष्य जीत के सिलसिले को बरकरार रखना है।
- **टीम चयन :** अभिषेक गुप्ता ने इस सीजन के लिए टीम में अनुभव और युवा ऊर्जा का संतुलन बनाने पर ध्यान दिया है।
- **रणनीतिः** उन्होंने कहा कि पिछले साल की कमियों को दूर करने के लिए इस बार अलग-अलग भूमिकाओं के लिए विशेषज्ञों को चुना गया है।
- **स्थानीय प्रतिभा को मौका :** अभिषेक गुप्ता के अनुसार, भोपाल लेपर्ड्स का मुख्य उद्देश्य स्थानीय खिलाड़ियों को एमपीएल में मौका देकर भारतीय टीम एवं आईपीएल जैसे बड़े मंच तक पहुँचाना है।

CARGO ENTERPRISES

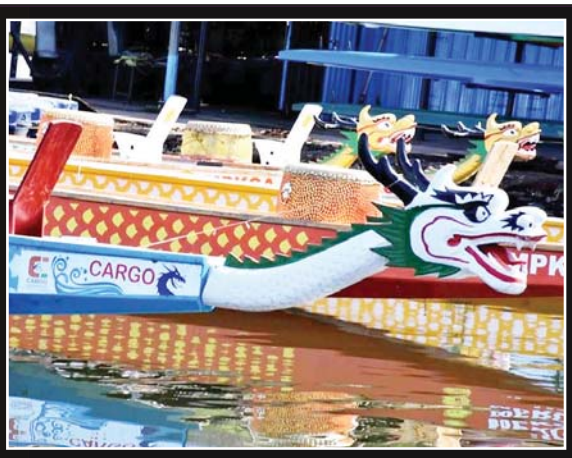

Deals in: All Water Sports Equipment, Manufactures, Repairing & Supplier

Kayak (K-1) "M" Class
Length - 520 cm
Weight - 12.5 kg

Specification :- K-1 Fibred Reinforced plastic hand molded Boat consist up Linear alignment on hull with accessories comprises of 01 Seat, 01 Foot Press, a rudder with Stay cable with adjustment of bottle screw to set up the alignment of a rudder.

Canoe (C-1) "M" Class
Length - 520 cm
Weight - 14.5 kg

Specification :- C-1 Fibred Reinforced plastic hand molded Boat consist up Linear alignment on hull with accessories comprises of 01 Foot rest with alluminium channel with anti friction foot plate grip.

CARGO ENTERPRISES

Canoe (C-2) "M" Class
Length - 650 cm
Weight - 21.5 kg

Specification :- C-2 Fibred Reinforced plastic hand molded Boat consist up dome alignment on hull with accessories comprises 02 Foot Rest with 01 alluminium channel with anti friction foot plate grip.

Kayak (K-2) "M" Class
Length - 650 cm
Weight - 18.5 kg

Specification :- K-2 Fibred Reinforced plastic hand molded Boat consist up dome alignment on hull with accessories comprises of 02 Foot press, 02 Seats, a rudder with Stay cable with adjustment of bottle screw to set up the alignment of a rudder

CARGO ENTERPRISES

Kayak (K-4) Standard
Length - 1100 cm
Weight - 32 kg

Specification :- K-4 Fibred Reinforced plastic hand molded Boat consist up dome alignment on hull with accessories comprises of 04 Foot press, 04 Seats, a rudder with Stay cable with adjustment of bottle screw to set up the alignment of a rudder.

Canoe (C-4) Standard
Length - 900 cm
Weight - 32 kg

Specification :- C-4 Fibred Reinforced plastic hand molded Boat consist up dome alignment on hull with accessories comprises of 04 Foot Rest with 01 alluminium channel with anti friction foot plate grip.

CARGO ENTERPRISES

Address: Gram-gori, Near Campian School, Sehore Road, Bhopal
Contact No. : 9893193074,9111237808, **Email:** cargoenterproses1794@gmail.com

विजेता टीम में कोई विदेशी कोच नहीं

किसी भी टीम के सफलता में जहां खिलाड़ियों, कप्तान का अहम रोल होता है। उसके पीछे रहने वाले कोच की भूमिका भी महत्वपूर्ण होता है। जो एक-एक खिलाड़ी को उनके क्षमता अनुसार परख कर उन्हें पूर्ण विश्वास के साथ मैदान में उतारता है। फीफा विश्वकप की शुरुआत 1930 में उरुग्वे से हुआ।

हरेन्द्र नागेश साहू
खेल समीक्षक

इस प्रतियोगिता में भी खिलाड़ियों की एक बड़ी फौज को संभालने, परखने आदि के लिये कोच भी रखा गया था। आरंभिक दिनों में उन्हें मैनेजर भी कहा जाता था। मगर काम तो खिलाड़ियों एवं टीम को संभालकर अच्छा खेलने के लिये प्रोत्साहित करना ही था।

मेजबानी में उरुग्वे का जलवा : जुलाई 1930 में खेले गये पहले विश्वकप को मेजबान उरुग्वे ने जीता। इसमें जितनी मेहनत टीम के खिलाड़ियों एनरिक बैलेस्ट्रेरो (गोलकीपर), जोस नसाजी (कप्तान), अर्नेस्टो माश्चेरोनी, जोस आन्द्रेद, लोरेन्जो फर्नांडिज, अल्वारो गेस्टिडो, पाब्लो डोराडो, हेक्टर स्केरॉन, हेक्टर कैस्ट्रो, पेड्रो सी व सांतोष इरियार्टे ने फायनल में अर्जेंटीना को 90 मिनट के खेल में 4-2 से हराने में किया, उतनी ही मेहनत मैदान के बाहर लगातार सपोर्ट करते मैनेजर (अब कोच) अल्बर्टो होरासियो सुपिकी ने भी किया। इस तरह सुपिकी फीफा विश्वकप जीतने वाले पहले कोच बने। द प्रोफेसर नाम से प्रसिद्ध सुपिकी ने अपनी टीम से 1928 से एमस्टरडम ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीतने वाली टीम से गोलकीपर आन्द्रेस मजाली को हटाकर बड़ा जोखिम लिया था। क्योंकि मजाली ने कर्फ्यू तोड़ा था और समय पर मोंटेवीडियो में टीम होटल नहीं पहुंचे थे। उधर टीम में शामिल किए गए नए गोलकीपर एनरिक पेड्रो बैलेस्ट्रोरो ग्रिफो (जन्म 18 जनवरी 1905 मोंटेवीडियो एवं मृत्यु 11 अक्टूबर 1969 मोंटेवीडियो, उरुग्वे) ने सभी चार मैचों में अच्छा प्रदर्शन किया और मात्र 3 गोल ही टीम पर होने दिया।

फाइनल में हालांकि 37वें मिनट बाद अर्जेंटीना गुलेर्मो स्टेबिल के गोल से 2-1 से आगे था। कुल मिलाकर 68346 दर्शकों की उपस्थिति में सेन्टेरियो स्टेडियम (मोंटेविडियो) में उरुग्वे ने डोराडो (12 मिनट), सी (57 मिनट) ईरियार्टे (68 मिनट) व कैस्ट्रो (89 मिनट) के गोल से फाइनल मैच जीता। अर्जेंटीना के लिये पहला गोल 20वे मिनट में कार्लोस प्यूसेल ने किया था। स्टेबिल ने इस मैच के बाद मात्र 25 वर्ष की उम्र में 4 मैचों में 8 गोल (इस विश्वकप में सर्वाधिक) दागकर अंतरराष्ट्रीय फुटबाल को विदा कह दिया। हांलाकि वे क्लब की ओर खेलते रहे और बाद में अर्जेंटीना टीम के 1958 (स्वीडन विश्वकप) में मैनेजर भी बने। मगर ग्रुप ए में उनकी टीम 3 मैचों में एक जीत व दो हार के बाद ग्रुप में जर्मनी, चेकोस्लावाकिया व आयरलैण्ड के बाद अंतिम स्थान पाकर बाहर हो गई।

1930 फाइनल के इस शानदार जीत के अगले ही दिन पूरे उरुग्वे में नेशनल हॉलीडे घोषित किया गया। दूसरी ओर अपनी टीम की हार से बौखलाये कुछ उपद्रवी लोगों ने ब्यूनसआयर्स स्थित उरुग्वे के दूतावास में पत्थरबाजी की थी। इस मैच से जुड़ी कुछ और महत्वपूर्ण बात है कि अर्जेंटीना के ईनसाईड राईट खिलाड़ी फ्रेंसिस्को एंटोनियो वेरालो ने पूरे 100 वर्ष की आयु (जन्म 05 फरवरी 1910 ला प्लाटा, अर्जेंटीना एवं मृत्यु 30 अगस्त 2010 ला प्लाटा, अर्जेंटीना) पूरा किया। जो 1930 विश्वकप में खेले किसी भी खिलाड़ी की सबसे अधिक आयु है। दूसरी ओर फाइनल खेले उरुग्वे के खिलाड़ियों में लेफ्टबैक अर्नेस्टो अल्बर्टो मश्चेरोनी कास्टिगलियोनी (जन्म 21 नवम्बर 1907 मोंटेविडियो उरुग्वे एवं मृत्यु 3 जुलाई 1984 मोंटेविडियो उरुग्वे) सबसे अंत में दुनिया से विदा हुये। उन्होंने उरुग्वे के लिये 13 के अलावा ईटली के लिये भी 02 अंतरराष्ट्रीय मैच खेले थे।

एकमात्र दोहरा खिताब : 'द ओल्ड मास्टर' के नाम से मशहूर विटोरियो पोजो (जन्म 2 मार्च 1886 तुरिन व मृत्यु 21 दिसम्बर 1968 तुरिन ईटली में) ने पहले एक मिडफील्डर खिलाड़ी, फिर मैनेजर (36 वर्षों तक) और अंत में पत्रकार के रूप में अपना जलवा दिखाया। हांलाकि उन्होंने ईटली के लिये अधिकृत अंतरराष्ट्रीय फुटबाल मैच नहीं खेला। मगर 1934 व 1938 में दो बार ईटली टीम के मैनेजर (कोच) बनकर फीफा विश्वकप जीतकर इतिहास रच दिया। जिसकी बराबरी अब तक कोई नहीं कर पाया है। यही नहीं 1936 के बर्लिन (जर्मनी) ओलंपिक में उनकी टीम ने फाइनल में आस्ट्रिया को 2-1 से हराकर स्वर्ण पदक भी जीता। ऐसा कारनामा अब तक कोई दोहरा नहीं सका है। हांलाकि अब 2026 में अर्जेंटीना के कोच लियोनल स्केलोनी और फ्रांस के कोच डिडियर डेश्चैम्स के पास बराबरी करने यानी दो विश्वकप जीतने का सुनहरा मौका है।

मेटोडो फॉर्मेशन के जनक : इस फॉर्मेशन के जनक ईटली के मैनेजर विटोरियो पोजो ही थे। यह मुख्य रूप से 2-3-2-3 फॉर्मेशन के रूप में जानी जाती है। इसी के बदौलत 1930 के दशक में पोजो ने अपार, अद्भुत सफलतायें एक मैनेजर (कोच) के रूप में हासिल किया। इस फॉर्मेशन अनुसार पीछे दो रक्षक यानी फुलबैक (डिफेंडर), बीच में तीन खिलाड़ी जो रक्षा और आक्रमण करते हैं यानी हॉफबैक, (मिडफील्डर), मिडफील्ड के आगे दो रचनात्मक खिलाड़ी यानी इनसाईड फारवर्ड, अटैकिंग मिडफील्डर एवं आक्रमण के लिये सामने तीन खिलाड़ी यानी फारवर्ड। इस रणनीति का मुख्य उद्देश्य रक्षा पंक्ति व आक्रमण पंक्ति के बीच पर्याप्त संतुलन बनाना था। इसमें मिडफील्डर को सबसे महत्वपूर्ण माना जाता था।

ओरिउंडी : पोजो की सफलता के पीछे एक और कारण ओरिउंडी (यानी विदेशी मूल के ईतावली नागरिक) को भी माना गया। इसके चलते उन्होंने ईटालियन मूल के खिलाड़ियों को अपनी टीम में शामिल करना प्रारंभ किया।1930 विश्वकप में अर्जेंटीना के लिये फाइनल में खेले लुंईस मोंटी तथा एक अन्य अर्जेंटीना के रायमुंडो ओरिसी को उन्होंने 1934 की ईटली टीम में शामिल किया। जिन्होंने पोजो के चयन को सही साबित किया। ओरिसी ने फाइनल में चेकोस्लावाकिया के खिलाफ एक गोल व पहले प्री-क्वार्टर फाइनल में अमरीका के खिलाफ दो गोल दागे। दूसरी ओर मोंटी कोई गोल तो नहीं दाग पाये। अलबत्ता उनकी गिनती दो विभिन्न देशों के लिये विश्वकप खेलने वाले खिलाड़ियों में हो गया। इसी तरह उन्होंने 1938 में ईतावली मूल के उरुग्वे के डोलारेस में जन्मे मिशेल एंड्रीओलो को लेकर भी किया जो कि कामयाब रहा। एंड्रीओलो ने इस विश्वकप में ईटली के सभी मैच खेले मगर कोई गोल नहीं कर पाये।

कोई भी विदेशी कोच नहीं : एक बात तो सभी विजेता टीम में कामन रहा है कि उन्हें अपने देश के ही कोच के प्रतिभा, योग्यता पर विश्वास रहा है। इसीलिये सभी 21 विजेता कोच स्वदेशी है। वैसे तो अनेक विदेशी कोच है। मगर कोई भी अपनी टीम को फाइनल तक नहीं ले पाया है। इससे हटकर हम विदेशी कोच की बात करे तो वेलीबोट बोरा मिलुटीनोविक (बाजीना बास्ता, जर्मन अधिकृत सर्बिया में 7 सितम्बर 1944 को जन्मे) ने हालांकि अपने देश के लिये ना तो कोई अधिकृत अंतरराष्ट्रीय फुटबाल मैच खेला और न ही फीफा विश्वकप में देश के लिए अधिकृत कोच बने। मगर उन्होंने 1986 में मेक्सिको (क्वार्टर फाइनल में जर्मनी से 0-0 की बराबरी के बाद पेनाल्टी शूट आउट में 4-1 से हारे), 1990 में कोस्टारिका (प्री-क्वार्टर फाइनल में चेकोस्लावाकिया से 4-1 से हारे), 1994 में अमरीका (प्री-क्वार्टर फाइनल में ब्राजील से 1-0 से हारे), 1998 मे नाईजीरिया (प्री-क्वार्टर फाइनल मे डेनमार्क से 4-1 से हारे) तथा 2002 मे चीन (ग्रुप सी में चौथे स्थान पर) के कोच रहे। कुल मिलाकर 5 विश्वकप के 20 मैचों में उनकी सभी टीमों ने 8 मैच जीते, 3 ड्रा किये और 9 मैच हारे। फिर भी उनकी गिनती सफल कोचों में होती है। कुल मिलाकर उन्होंने 8 देशों (अन्य होडुंरास, जमैका एवं ईराक) के लिये 273 अंतरराष्ट्रीय मैच खिलाये। उनके नाम ही 5 लगातार विश्वकप में

कोच रहने का भी कीर्तिमान है।

अद्भुत परेरा : ब्राजील के रियो डि जेनेरो में 27 फरवरी 1943 को जन्मे कार्लोस अल्बर्टो गोम्स परेरा की गिनती भी फुटबाल जगत के सबसे सफल कोचों में होती है, हालांकि उन्होंने कभी भी शीर्ष स्तर पर पेशेवर खिलाड़ी के रूप में फुटबाल नहीं खेला। अपने कैरियर की शुरुआत उन्होंने 1970 में ब्राजीलियाई विश्वकप विजेता टीम से शुरू किया। फिर बाद में कोच के रूप में मैदान के बाहर, कुशल रणनीतिकार के रूप मे भी काफी सफल रहे। फीफा विश्वकप में परेरा का कैरियर 1982 से 2010 तक रहा। जो कि एक कीर्तिमान है। इस दरम्यान वे 6 विश्वकप में 5 देशों के कोच रहे। सर्वप्रथम 1982 में कुवैत, 1990 यूएई 1998 में साउदी अरब व 2010 में दक्षिण अफ्रीका को ग्रुप लीग मैचों से आगे नहीं ले जा सके।1998 में जब साउदी अरब की टीम डेनमार्क व फ्रांस के खिलाफ पहले दो मैच हार गई तो उन्हें बर्खास्त करके मोहम्मद अल खराशी को दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ तीसरे मैच के लिये कोच बनाया गया। जो कि 2-2 की बराबरी पर छूटा। मगर उन्होंने 1994 में ब्राजील को चैम्पियन बनाया तथा 2006 में क्वार्टर फाइनल तक ले गये। कुल मिलाकर परेरा ने अपने 6 विश्वकप के कार्यकाल में सभी टीमों के 23 मैचों में 10 जिताये, 4 ड्रा किये और 9 हारे।

युवा एवं बुजुर्ग विजेता कोच : फीफा विश्वकप के पहले आयोजन में उरुग्वे ने विजेता के रूप में अपनी पहचान बनाई तो उनके कोच अल्बर्टो सुपिकी की उम्र मात्र 31 वर्ष 252 दिन था (जन्म 20 नवम्बर 1898, कोलोनिया डेल सैक्रामेंटा उरुग्वे)। दूसरी ओर 2010 में पहली बार विश्वकप जीतने वाली स्पेन टीम के कोच विसेंट डेल बॉस्क की उम्र 59 वर्ष 200 दिन था (जन्म 23 दिसंबर 1950, सालमांका, स्पेन)। ये दोनों कीर्तिमान अभी अटूट है। हालांकि अभी सबसे युवा कोच के रूप में अर्जेंटीना के जुआन जोस ट्रामुटोला (जन्म 21 अक्टूबर 1902 व मृत्यु 30 नवम्बर 1968) ने 15 जुलाई 1930 को 27 वर्ष 267 दिन की उम्र मे फ्रांस के खिलाफ पहले मैच में लुईस मोंटी के गोल से 1-0 की जीत दिलाई थी। वैसे इस विश्वकप में वे टीम के टेक्नीकल डायरेक्टर के रूप मे जुड़े थे, जबकि फ्रेंसिस्को ओलाजार मैनेजर थे। हांलाकि इन दोनों को ही अधिकृत रूप से टीम का कोच माना जाता है। इसी तरह 71 वर्ष 317 दिन की उम्र में ग्रीस के अर्जेंटीना के खिलाफ (22 जून 2010 को पोलोकवाजे में) मैच में इसेन जर्मनी में 9 अगस्त 1938 को जन्मे ओटो रेहागेल ने सबसे बुजुर्ग कोच के रूप में कीर्तिमान रचा। ग्रीस फुटबाल टीम के लिये उन्होंने 9 अगस्त 2001 से 30 जून 2010 तक 106 मैचों मे से 52 जीताये, 22 ड्रॉ रखे व 32 हारे भी। इस दरम्यान उन्होंने ग्रीस को 2004 में यूरोपियन चैम्पियनशिप जीताई और 2010 में वर्षों बाद पुनः विश्वकप के लिये क्वालीफाई करवाया। उनकी इस उपलब्धि पर 2022 में किंग ओटो नामक एक डॉक्यूमेंट्री भी बनी थी।

सबसे ज्यादा मैच : फीफा विश्वकप के इतिहास में सबसे ज्यादा 25 मैचो एवं सबसे ज्यादा 16 मैच जिताने का कीर्तिमान जर्मनी के हेल्मुट श्योन (जन्म 15 सितम्बर 1915 एवं मृत्यु 23 फरवरी 1996) के नाम है। इसके अलावा इंग्लैंड के सर वाल्टर विंटरबॉटम (जन्म 31 मार्च 1913 एवं मृत्यु 16 फरवरी 2002) के साथ 4 लगातार विश्वकप में एक ही टीम के कोच रहने का भी कीर्तिमान है। श्योन का कार्यकाल जहां 1966 से 1978 तक रहा। वही विंटरबॉटम का 1950 से 1962 तक का था। श्योन ही विश्वकप (1974) व यूरोपियन (1972) लीग जीतने वाले पहले कोच भी थे।

खिलाड़ी एवं कोच के रूप में विजेता : अब तक तीन खिलाड़ी मारियो जुगालो (ब्राजील-खिलाड़ी के रुप में 1958 व 1962 मे 10 मैच तथा 1970 व 1998 में कोच के रुप मे 20 मैच), फ्रैंज बेकनबायर (जर्मनी-खिलाड़ी के रूप में 1966, 1970 व 1974 में 18 मैच तथा कोच के रुप में 1986 व 1990 में 14 मैच) और डिडियर डेशचैम्स (फ्रांस-खिलाड़ी के रुप में 1998 में 6 मैच तथा कोच के रुप में 2014, 2018 व 2022 में 19 मैच) को पहले विजेता खिलाड़ी और फिर बाद में विजेता कोच होने को गौरव प्राप्त है। इनमें 1974 में फ्रैज बेकनबायर व 1998 में डिडियर डेशमैम्स अपनी विजेता टीम के कप्तान भी थे।

विजेता भी और उपविजेता भी : फीफा विश्वकप के इतिहास में 5 ऐसे विजेता कोच भी है जिन्होने अपनी टीम को विजेता के साथ ही साथ एक अवसर पर उपविजेता बनाने में मदद किया। इनमे हेल्मुट श्योन (1996), फ्रैज बेकनबायर (1986), कार्लोस बिलार्डो (1990), मारियो जगालो (1998) तथा डिडियर डेशचैम्स (2022) के नाम है।

लगातार जीत अपराजित : ब्राजील के कोच लुईस फेलिप स्कोलरी के नाम विश्वकप में लगातार 11 मैच जीतने तथा लगातार 12 मैचों में अपराजित रहने का कीर्तिमान है। यह करिश्मा उन्होंने 2002 में दक्षिण कोरिया व जापान में आयोजित विश्वकप में ब्राजील के सभी सातों मैच (तुर्की 2-1, चीन 4-0, कोस्टारिका 5-1, बेल्जियम 2-0, इंग्लैण्ड 2-1, तुर्की 1-0 एवं जर्मनी 2-0) जीतकर ब्राजील को विजेता बनाया। फिर 2006 में जर्मनी में आयोजित विश्वकप में पुर्तगाल के कोच बनकर पहले 4 मैच (अंगोला 1-0, ईरान 2-0, मेक्सिको 2-1 व नीदरलैण्ड 1-0) जीते। बाद में पांचवां मैच क्वार्टर फायनल में इंग्लैण्ड से 0-0 की बराबरी पर छूटा। हालांकि पेनाल्टी शूट आउट में पुर्तगाल 3-1 से जीती। अतंतः फ्रांस से सेमी फायनल मे 1-0 की हार ने उनके अपराजित रहने के घोड़े को रोका।

वैसे विजेता कोचों के संबंध में लिखने को और कुछ भी है। मगर फिर कभी।

फीफा विश्वकप के विजेता कोच

क्र.	फायनल तिथि	विजेता टीम	प्रदर्शन						विजेता कोच
			मैच	जीते	हारे	ड्रा	गोल किये	गोल खाये	
1	30.07.1930	उरुग्वे	4	4	0	0	15	3	अल्बर्टो होरसियो सुपिकी
2	10.06.1934	ईटली	5	4	0	1	12	3	विटोरियो पोजो
3	19.06.1938	ईटली	4	4	0	0	11	5	विटोरियो पोजो
4	16.07.1950	उरुग्वे	4	3	0	1	15	5	जुआन लोपेज फोन्टाना
5	04.07.1954	प. जर्मनी	6	5	1	0	25	14	जोसफ सेप हर्बर्गर
6	29.06.1958	ब्राजील	6	5	0	1	16	4	विन्सेट ईटालो फिओला
7	17.06.1962	ब्राजील	6	5	0	1	14	5	अयेमोर मोरिरा
8	30.06.1966	इंग्लैण्ड	6	5	0	1	11	3	अल्फैड अर्नेस्ट रामसे
9	21.06.1970	ब्राजील	6	6	0	0	19	7	मारियो जोर्ग लोबो जगालो
10	07.07.1974	प. जर्मनी	7	6	1	0	13	4	हेल्मुट श्योन
11	25.06.1978	अर्जेंटीना	7	5	1	1	15	4	सीजर लुईस मेनोटी
12	11.07.1982	ईटली	7	4	0	3	12	6	एंजो बारजोट
13	29.06.1986	अर्जेंटीना	7	6	0	1	14	5	कार्लोस सिलबेस्टर बिलार्डो
14	08.07.1990	प. जर्मनी	7	5	0	2	15	5	फ्रैंज ऐटोन बेकनबायर
15	17.07.1994	ब्राजील	7	5	0	2	11	3	कार्लोस अल्बर्टो गोम्स परेरा
16	12.07.1998	फ्रांस	7	6	0	1	15	2	एमे एरिने जैकेट
17	30.06.2002	ब्राजील	7	7	0	0	18	4	लुईस फेलिप स्कोलरी
18	09.06.2006	ईटली	7	5	0	2	12	2	मार्सेलो रोमियो लिप्पी
19	11.07.2010	स्पेन	7	6	1	0	08	2	बिन्सेट हेल बॉस्क गोंजालेज
20	13.07.2014	जर्मनी	7	6	0	1	18	4	जोकिम जोगी लाव
21	15.07.2018	फ्रांस	7	6	0	1	14	6	डिडियर क्लाउड डेश्चैम्स
22	18.12.2022	अर्जेंटीना	7	4	1	2	15	8	लियोनेल सेबेस्टियन स्केलोनी

बदनसीब इटली

फीफा विश्वकप के इतिहास में इटली से बड़ी बदनसीब टीम शायद ही कोई होगा। चार बार के विजेता, दो बार के उप विजेता तथा कुल 8 बार सेमीफाइनल खेलने वाला इटली पिछले 12 वर्षों यानी तीन आयोजनों से बाहर है। आखिर क्या कारण है जो इसकी टीम फीफा विश्वकप के अंतिम दौर के लिये क्वालीफाई करने में असमर्थ हो रही है। इस कारण इटली टीम के वर्तमान खिलाड़ियों में से कोई भी आज तक फीफा विश्वकप नहीं खेल पाया हैं। इससे पहले 2014 के ब्राजील में आयोजित विश्वकप में इटली अंतिम बार दिखाई पड़ा था।

हरेन्द्र नागेश साहू
खेल समीक्षक

ग्रुप मैचों तक सीमित : 2014 आयोजन में वह ग्रुप 'डी' में इंग्लैंड, उरुग्वे और कोस्टारिका के साथ था। इन सभी की रैंकिंग उससे ज्यादा था। इंग्लैंड के खिलाफ पहले मैच में नियमित कप्तान गियानलुईगी बफेन की अनुपस्थिति में मिडफील्डर आन्द्रेय पीरलो को कप्तानी देने के साथ साल्वाटोरा सिरिंगु को गोल कीपर के रूप में उतारा गया। अबकि उनकी शुरुआत अच्छी रही और इटली ने मिडफील्डर क्लाडियो मार्सीसियो (36वें मिनट) व सेंटर फारवर्ड मारियो बालोटेली (50वें मिनट) के गोल से इटली ने यह मैच 2-1 से जीता। मगर दूसरे मैच में उसे कोस्टारिका ने कप्तान ब्रायन रुईज (44वें मिनट) के गोल से तथा लीग के अंतिम मैच में उसे पूर्व विजेता उरुग्वे ने सेंटरबैक व कप्तान डियागो गोडिन (81वें मिनट) के गोल से अगले दौर से बाहर कर दिया। इसके बाद ही इटली के फुटबॉल में गिरावट आने लगा।

कारण- आखिरकार क्या ऐसे कारण हो गए हैं, जिससे इटली एक नहीं लगातार तीसरी बार विश्व कप खेलने से चूक गई है। इनका एक प्रमुख कारण है युवा खिलाड़ियों का ट्रांजिशन सही नहीं हो रहा है। अनुभव की कमी से अटैक में कमजोरी हो रही है। इससे गोल करने की क्षमता प्रभावित हो रहा है क्वालीफाइंग दौर में वह अपने ग्रुप में टॉप नहीं कर पा रहा है। जिससे उसे प्लेऑफ में खेलना पड़ रहा है और इसी दबाव में वह बिखरकर खराब प्रदर्शन कर रहा है। इसके अलावा इटली में फुटबॉल का सही संचालन नहीं हो रहा है। विभिन्न आयु वर्गों के खिलाड़ियों को ढूंढकर उन्हें निखारने की जरूरत है। जो वर्तमान समय में सही तरीके से नहीं हो पा रहा है। घरेलू लीग सेरी 'ए' संचालन एक समस्या बनता जा रहा है। इसमें अब विदेशी खिलाड़ियों का बोलबाला ज्यादा हो रहा है। जिसके कारण युवा इटालियन खिलाड़ियों को मौका भी कम मिल रहा है। बार-बार कोच बदलना और टैलेंट का सही तरीके से उपयोग नहीं हो पा रहा है।

कोच की सोच : अब यदि तीन वर्षों में इटली के कोच रहे व्यक्ति के खेल के तरीकों का गहरा अध्ययन करें तो पाएंगे कि 2018 के लिये नियुक्त कोच गियामपियारो वेन्चुरा ने अपने पुरानी सोच के चलते रक्षात्मक शैली पर ज्यादा ध्यान दिया। पुराने खिलाड़ियों (गियान लुईगी बफेन एवं जोर्जियो शिलानी) पर ही अधिक भरोसा रखा और नए खिलाड़ियों को कम अवसर दिया। इसलिए टीम पर बूढ़ी टीम का ठप्पा भी लग गया। फिर स्वीडन के खिलाफ महत्वपूर्ण प्लेऑफ मैच के सही रणनीति नहीं बना सके। जबकि 2022 के लिये नियुक्त कोच रोबर्टो मैंनसिनी ने जहां 2020 में यूरोपियन कप अपनी अटैकिंग शैली से जिताया। उसे बरकरार नहीं रख पाये और स्ट्राइककर की कमी और पेनाल्टी मिस करना भारी पड़ गया।

2026 के कोच जैनासे गैटोसों, जो 2006 की विजेता टीम के सदस्य थे, ने पिछली हारो से सबक लेते हुए टीम की फायटिंग स्पिरिट भले ही बढ़ाई, लेकिन टेक्टिकल कमजोरी के चलते टीम बड़े मैचों में बिखरने लगी। दरअसल देखा जाये तो ईतावली फुटबॉल का पतन 2006 में विजेता होने के बाद से होने लगा है। 2010 के दक्षिण अफ्रीका आयोजन में ग्रुप एफ में पैरागुने व न्यूजीलैंड से ड्रॉ खेलने के बाद अंतिम मैच में स्लोवाकिया से हारकर बाहर हो गई। इसी तरह 2014 के ब्राजील आयोजन में इंग्लैंड से 2-1 की अच्छी शुरुआत के बाद यह लय कोस्टारिका व उरुग्वे के खिलाफ कायम नहीं रख पाया और दो हार के बाद उसे बाहर जाने से कोई रोक नहीं सका। आईये अब देखें कि इन तीनों आयोजनों में इटली को कैसे-कैसे कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

कठिनाई एवं विफलता : 2018 के यूरोपियन क्वालीफाई के लिए 5 सितंबर 2016 से 10 नवंबर 2017 तक खेले गए लीग मैचों में इटली, स्पेन, नॉर्थ मेसिडोनिया, लीचेश्तीन, अल्बानिया और इजरायल के साथ ग्रुप 'जी' में था। यहां वह एक अवसर पर स्पेन से 3-0 से हारा और 7 में जीते। फिर ग्रुप में स्पेन के बाद दूसरा स्थान पर होने के कारण उसे प्लेऑफ में स्वीडन से खेलना पड़ा। जहां पहले अवसर पर तो स्वीडन ने उसे 1-0 से हरा दिया। 3 दिन बाद जब दुबारा इनके बीच मुकाबला हुआ तो मैच 0-0 की बराबरी पर छूटा और इटली विश्व कप के फाइनल दौड़ से बाहर हो गया। इस तरह 1958 के बाद पहली बार इटली विश्वकप के फायनल दौर में नहीं पहुँचा।

फिर आया 2022 का संस्करण। अब की इटली विश्व कप क्वालीफाइंग के लिए ग्रुप 'सी' में नार्थ मेसोडोनिया, बुल्गारिया, नॉर्दर्न आयरलैंड व स्विट्जरलैंड के साथ था। 25 मार्च 2021 में 15 नवंबर 2021 तक इस ग्रुप में खेले गए मैच में जहां स्विट्जरलैंड तो अपने 8 में से 5 मैच जीतकर सीधे विश्व कप के लिए क्वालीफाई कर लिया, तो इटली 4 मैच जीतकर प्लेऑफ के लिए पहुंचा। जहां नॉर्थ मेसोडोनिया जैसी टीम ने उसे इंजुरी टाइम के गोल से 1-0 हराकर फिर विश्व कप के अंतिम दौर से वंचित कर दिया। उल्लेखनीय है कि 8 महीने इटली ने यूरो कप जीता था।

2026 के लिए वह ग्रुप 'आई' में नार्वे, इसराईल एस्टोनिया और मालदोवा के साथ था। 6 जून 2025 से 16 नवंबर 2025 तक खेले गए लीग मैचों में जहां नार्वे ने अपने सभी 8 मैच जीतकर सीधे विश्व कप के लिए अपना टिकट पक्का करवाया। तो इटली दोनों ही अवसरों पर नॉर्वे से हारा और 6 मैच जीतने के बावजूद प्लेऑफ खेलने तक सीमित रह गया। फिर भी पहले प्लेऑफ में उसने 27 मार्च 2026 को बर्गेमो में नार्दन आयरलैंड को 2-0 से हराकर अपनी उम्मीदों को जिंदा रखा। इसके बाद 31 मार्च को बोस्निया एवं हर्जेगोविना के खिलाफ जेनिका में फिर महत्वपूर्ण मुकाबला हुआ।

पेनाल्टी शूटआउट भारी पड़ा : इस मैच में इटली के लिए मोइसे कीन ने 15वें मिनट में गोल दागकर बढ़त बनाई। फिर उसके एक प्रमुख खिलाड़ी अलेसंडो बोस्तानी को मध्यांतर से कुछ पहले 42वें मिनट में लाल कार्ड दिखाकर रेफरी ने मैदान से बाहर कर दिया। इससे इटली का आक्रमण संतुलन बिगड़ गया। फिर भी वह अपने विरोधी पर बराबर दबाव बनाए रखा। आखिरकार 79वें से मिनट में इटली का भी धैर्य जवाब दे गया। जब बोस्निया एवं हर्जेगोविना के सब्सीट्यूट खिलाड़ी हैरिस तबाकोविक ने गोल दागकर मैच को बराबरी पर ला दिया। इसके बाद अगले 11 मिनट और 30 मिनट के अतिरिक्त समय में दोनों टीम में कोई गोल नहीं कर पाई। जिससे पेनाल्टी शूट का सहारा लिया गया और बोल्निया एवं हर्जेगोविना के बेंजामीन ताहिरोविक, हैरिस तबाकोविक, करीम अल अजवेगोविक और एस्मीर ब्रजाकटारेविक ने अपने-अपने पेनाल्टी किक को गोल में बदला, तो इटली के लिए सिर्फ सैंडो तेनाली ही कर पाये। जबकि फ्रंसेसो पियो एस्पीसीटो व ब्रायन क्रिस्टेन्ट के किक गोल में नहीं बदल पाये। इस तरह बोस्निया एवं हर्जेगोविना में 4-1 से पेनाल्टी शूटआउट में बाजी जीतकर 12 वर्षों (2014 में पर्दापण) बाद पुनः विश्वकप खेलने का हक पा लिया।

फीफा विश्व कप में इटली के प्रमुख कीर्तिमान

- **पहला मैच-** अमेरिका के खिलाफ 27 मई 1934 को रोम में, 7-1 से जीता। यह इटली की अब तक सबसे बड़ी जीत भी है।
- **सबसे बड़ी हार-** 4-1 से सर्वप्रथम 23 जून 1954 को बारोल स्वीटजरलैंड में,

स्वीटजरलैंड से एवं 21 जून 1970 को मेक्सिको सिटी, मेक्सिको में ब्राजील से।

- **श्रेष्ठ प्रदर्शन-** 1934 (इटली गे), 1938 (फ्रांस गे), 1982 (स्पेन में) एवं 2006 जर्मनी में विजेता।
- **दो बार के विजेता कोच-** 1934 एवं 1938 में जीतने वाले विटारियो पोजो (एकमात्र)।
- **विरोधी टीम-** अब तक इटली ने विश्व कप में 39 देशों के खिलाफ कुल 83 मैच खेले हैं। इनमें वह कोस्टारिका, क्रोशिया, नीदरलैंड, उत्तरी अमेरिका, रलोवाकिया, सोवियत यूनियन के खिलाफ कभी जीत नहीं राका। हालांकि इनके खिलाफ वह सिर्फ एक-एक ही मैच खेला है। इनमें वह कोस्टारिका, इजरायल, उतरी कोरिया व सोवियत यूनियन के खिलाफ कोई गोल नहीं कर सका है।
- **लगातार विजेता-** इटली पहली टीम थी, जिरो दो लगातार बार (1934 एवं 1938) विजेता होने का श्रेय पाया। बाद में ब्राजील (1958 एवं 1968) में इससे दोहराया है।
- **दो खिताब के बीच लंबा अंतराल-** इटली ने सर्वाधिक 44 वर्ष बाद (1938 के बाद 198 2 में) इस किताब को दोबारा जीता। जो कि विश्व कप का कीर्तिमान है।
- **पहले प्रयास में ही विजेता-** विश्व कप के इतिहास में इटली (1934) दूसरी टीम है। जिसने अपने पहले ही प्रयास में इसे जीता। पहली टीम उरुग्वे (1930) है।
- **फायनल मैच में बुजुर्ग खिलाड़ी-** इटली के गोलकीपर एवं कप्तान डियनो जॉफ ने जब 11 जुलाई 1982 को मैड्रिड स्पेन में पश्चिम जर्मनी के खिलाफ फाइनल मैच खेला, तो उनकी उम्र 40 वर्ष 133 दिन (जन्म 28 फरवरी 1942, मेरियानो डेल फुली, इटली) था। इस मैच को इटली में 3-1 से जीता था।
- **लगातार सर्वाधिक समय तक गोल की सुरक्षा-** इटली के गोलकीपर वाल्टर जेंगा ने 1990 के विश्व कप संस्करण में 517 मिनटों तक अपने गोल की सुरक्षा की। इस दरम्यान इटली ने ऑस्ट्रेलिया को 1-0, अमेरिका को 1-0, चेकोस्लावाकिया को 2-0, उरुग्वे को 2-0 एवं आयरलैंड को 1-0 से हराया। ये सभी मैच रोम में खेले गये थे। मगर सेमीफाइनल में जब मुकाबला अर्जेंटाईना से हुआ तो 67वें मिनट में फॉरवर्ड क्लाडियो कनिजिया ने इस अभेद किले में सेंध लगाया। बाद में इटली अतिरिक्त समय के बाद पेनल्टी शूटआउट में 3-4 से हारा। 2006 के विजेता टीम के गोलकीपर गियानलुइँगी बफेन ने भी 5 बार इस संस्करण में ऐसा ही कारनामा दिखाया था। वैसे बफेन ने अपने 14 कुल मैचों में 6 बार क्लीन शीट का रिकॉर्ड बनाया है।
- **गोलकीपर द्वारा एक प्रतियोगिता में सबसे कम गोल खाये-** इटली के गोल कीपर गियानलुईगी बफेन ने 2006 के विश्व कप संस्करण में 7 मैचों में सिर्फ 2 गोल खाकर अपनी टीम को विजेता बनाया। इससे पहले यही कारनामा फ्रांसीसी गोलकीपर फेबियन बार्थेज ने 1998 में और फिर स्पेनिश गोलकीपर इकेर केसिलस 2010 में दोहराया।
- **विश्व कप में सर्वाधिक मैच सब्सीट्यूट के रूप में-** अलेसेंडो डेल पियरों ने 1998 से 2006 के बीच अपने 12 में से 7 सब्सीट्यूट के रूप में खेले। द कप्तान के नाम से मशहूर डेल पियरों ने एक फॉरवर्ड के रूप में खेलते हुए इन 12 मैचों में दो गोल दागे। वैसे इस मामले में फीफा रिकॉर्ड ब्राजील के डेनिल्सन डि ओलीवियारा ऑरेंजो। (12 में से 11 मैच) का है। जो की 1998 व 2002 के विश्व कप का है।

फीफा विश्वकप में इटली का अब तक प्रदर्शन

क्रम	सत्र	ग्रुप	मैच	जीते	ड्रा	हारे	गोल किये	गोल खाये	अंतिम स्थिति	कप्तान	गोलकीपर	कोच
1	1934	-	5	4	1	0	12	3	विजेता	वर्जीनियो रोसेटा (1)	गियानपियरो कोम्बी	विटोरिया पोजो
										गियानपियरो कोम्बी (2,3,4,5)	-	-
2	1938	-	4	4	0	0	11	5	विजेता	गुईसेपे मीजा	ऐल्डो ओलीवियर्स	विटोरिया पोजो
3	1950	सी	2	1	0	1	4	3	सातवाँ	रिकार्डो कारापेलेस	लुसीडियो सेंटीमेट	फेरूसियो नोवो
										-	गुईसेपे मोरो (2)	-
4	1954	डी	3	1	0	2	6	7	दसवां	गियामपियरो बोनिपर्टी	ग्लोरजियो धेजी	लाजोस सीजलर
										इरिस्टो पांडेल फिनी	गियोवेनी बिओला	-
5	1962	बी	3	1	1	1	3	2	नौवां	लोरेंजो बफेन (1,3)	लोरेंजो बफेन (1,3)	पावलो माजा
										बुनो मोरा (2)	कार्लो मैटरेल (2)	गियोवेनि फेरारी
6	1966	डी	3	1	0	2	2	2	नौवां	सैंड्रो साल्वाडोर (1,2)	एनरिको अल्बटौसी	एडमंडो फेब्री
										गियाकोमो बुल्गारेली (3)	-	-
7	1970	बी	6	3	2	1	10	8	उपविजेता	गियासेंटो फेकेटी	एनरिको अल्बटौसी	फेरूसियो वाल्कारेगी
8	1974	डी	3	1	1	1	5	4	दसवां	गियासेंटो फेकेटी	डियोनो जॉफ	फेरूसियो वाल्कारेगी
9	1978	ए	7	4	1	2	9	6	चौथा	डियोनो जॉफ	डियोनो जॉफ	एंजो बीयरजोट ग्रैंडे
10	1982	ए	7	4	3	0	12	6	विजेता	डियोनो जॉफ	डियोनो जॉफ	एंजो बीयरजोट ग्रैंडे
11	1986	ए	4	1	2	1	5	6	बारहवां	गिटोनो स्कीरेस	गियोवेनी गैली	एंजो बीयरजोट ग्रैंडे
12	1990	ए	7	6	1	0	10	2	तीसरा	गुईसेपे बर्गोमी	वाल्टर जेंगा	अजेगलियो विसीनी
13	1994	ई	7	4	2	1	8	5	उपविजेता	फ्रेंकिनो बारेसी (1,2,7)	गियानलुका पगलीका(1,2,5,6,7)	ऐरीगो सेच्ची
										पाआलो सीजर माल्दीनी (3,4,5,6)	लुका माशैगियनी (3,4,)	-
14	1998	बी	5	3	2	0	8	3	पाचवां	पाआलो सीजर माल्दीनी	गियानलुका पगलीका	सीजर माल्दीनी
15	2002	जी	4	1	1	2	5	5	पन्द्रहवां	पाआलो सीजर माल्दीनी	गियानलुका पगलीका	गियोवेनी ट्रैपाटोनी
16	2006	ई	7	5	2	0	12	2	विजेता	फेबियो कैनावेरो	गियानलुईगी बफेन	मार्सेलो रोमियो लिप्पी
17	2010	एफ	3	0	2	1	4	5	26वां	फेबियो कैनावेरो	गियानलुईगी बफेन	मार्सेलो रोमियो लिप्पी
18	2014	डी	3	1	0	2	2	3	22वां	आन्द्रेय पिरलो	साल्वाटोरा सिरिगु	वलाडियो सीजर प्रैंडेली
										गियानलुईगी बफेन	गियानलुईगी बफेन	-
	योग		**83**	**45**	**21**	**17**	**128**	**77**				

बैडमिंटन के लिए मंजूनाथ का त्याग

जेवर गिरवी रखे, भूखे खेले, परिवार छूटा

भारत में बैडमिंटन स्टार बनना जितना चमकदार दिखता है, उसकी राह उतनी ही कठोर और अक्सर अनदेखी रहती है। बड़े मंच पर जीत के बाद जिन खिलाड़ियों पर फूल बरसते हैं, वही खिलाड़ी कभी छोटे टूर्नामेंटों के दौरान होटल का खर्च तक नहीं उठा पाते, गर्मियों में छतों पर सोते हैं और सफर के बीच पेट भरने की चिंता से जूझते हैं। कई परिवारों के लिए यह खेल सिर्फ जुनून नहीं, बल्कि लगातार चलने वाली आर्थिक परीक्षा है, जहां जेवर गिरवी रखने पड़ते हैं, घरों का बंटवारा हो जाता है और वर्षों तक छुट्टियां टलती रहती हैं।

जूनियर स्तर से अंतरराष्ट्रीय मंच तक का सफर शटल, रैकेट, कोर्ट फीस और यात्रा खर्च के बीच संतुलन बनाने की जद्दोजहद से भरा होता है। जिस उम्र में खिलाड़ी अपने खेल को निखार रहे होते हैं, उसी समय उनके माता-पिता कर्ज, त्याग और अनिश्चित भविष्य के बीच फैसले ले रहे होते हैं। यह वह कड़वी सच्चाई है, जो अक्सर जीत के जश्न के पीछे छिप जाती है, जहां हर उभरते सितारे के पीछे भूख, कर्ज और अडिग विश्वास का लंबा संघर्ष होता है।

छत पर नींद और बंटते परिवार : ऐसे शुरू होता है बैडमिंटन का सफर

पूर्व राष्ट्रीय चैंपियन मिथुन मंजूनाथ के संघर्ष की कहानी इसी सच्चाई को सामने लाती है। जूनियर दिनों में छोटे टूर्नामेंट खेलने के दौरान कई बार वे पंखे वाले साधारण होटल का कमरा भी नहीं ले पाते थे। चिपचिपी गर्मियों में वे कपड़ों पर पानी डालकर खुले छतों पर सो जाते थे, ताकि किसी तरह अगला मैच खेलने की ताकत जुटा सकें। आयुष शेट्टी के परिवार की कहानी भी कम अलग नहीं है। आर्थिक मजबूरियों के चलते उनका परिवार बंट गया। पूरा परिवार उडुपी से बेंगलुरु शिफ्ट नहीं हो सका और उनके पिता को अकेले ही वहीं रहना पड़ा ताकि बेटे का सपना जारी रह सके।

जब मां बनी फिजियो, पिता बने अंपायर : ऐसे चलता है सपनों का खर्च

महिला सिंगल्स की कई खिलाड़ियों के घरों में हालात ऐसे हैं कि उनकी माताएं खुद ही फिजियो की भूमिका निभाने लगती हैं। वे पोषण, मसाज तकनीक और एंकल टेपिंग के क्रैश कोर्स सीखती हैं, क्योंकि ट्रैवलिंग फिजियो का खर्च उठाना संभव नहीं होता। सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी के पिता का उदाहरण बताता है कि यह संघर्ष कितना गहरा होता है। वे स्थानीय टूर्नामेंटों में लाइनसमैन और चेयर अंपायर बनते थे, ताकि बेटे के बार-बार टूटने वाले रैकेट स्ट्रिंग्स का खर्च निकाला जा सके। यह एक ऐसा खर्च है जो बेटे के करियर के लिए बेहद जरूरी था।

अकेलापन, भूख और सवाल : जीत के बाद भी खत्म नहीं होता संघर्ष

त्रिसा जॉली की कहानी भी इस संघर्ष की एक और परत खोलती है। घर से दूर अकेले रहकर अभ्यास करना, हॉस्टल की समयसीमा चूक जाने पर भूखे रहना, यह सब उनकी दिनचर्या का हिस्सा रहा है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सफलता के बावजूद, आर्थिक आत्मनिर्भरता अब भी उनके लिए एक अधूरा सपना है। विडंबना यह है कि जब यही खिलाड़ी अंतरराष्ट्रीय मंच पर जीतते हैं तो उन्हें सिर आंखों पर बैठाया जाता है, लेकिन जैसे ही प्रदर्शन में गिरावट आती है, सवाल उठने लगते हैं। यहां तक कि विश्व चैंपियनशिप पदक विजेताओं को भी संन्यास लेने की सलाह दी जाती है, उम्र को लेकर ताने दिए जाते हैं।

'दुखभरी कहानी' नहीं, यही है चैंपियन बनने की असली कीमत

इन्हें अक्सर खेल की 'दुखभरी कहानी' कहकर नजरअंदाज कर दिया जाता है, जैसे ये सिर्फ भावनात्मक कहानियां हों। हालांकि, सच यह है कि यही कहानियां एक खिलाड़ी बनने की असली कीमत को बयां करती हैं। भारत एक 'परफेक्ट चैंपियन' चाहता है, जो सिर्फ जीत के बाद बोले, हमेशा विनम्र रहे और अपने परिवार के संघर्षों को पीछे छोड़ दे, लेकिन यह उम्मीद उस हकीकत से टकराती है, जहां एलीट खेल बेहद महंगा है और हर कदम पर पैसे की चुनौती खड़ी रहती है। असल तस्वीर कहीं ज्यादा कठोर है। सेकेंड-हैंड रैकेट इस्तेमाल किए जाते हैं और महंगे शटल को दोबारा इस्तेमाल करने के लिए बचाया जाता है।

महंगा होता खेल, टूटते सपने : बैडमिंटन अब मध्यमवर्ग की पहुंच से दूर

बैडमिंटन अब मध्यमवर्गीय परिवारों के लिए भारी पड़ता जा रहा है। हैदराबाद से बेंगलुरु, मुंबई से जोधपुर और असम से चेन्नई तक कोच चेतावनी दे रहे हैं कि शटल की बढ़ती कीमतें अकादमियों के संचालन को मुश्किल बना रही हैं। इसका सीधा असर माता-पिता पर पड़ रहा है और धीरे-धीरे यह खेल कई परिवारों की पहुंच से बाहर होता जा रहा है। सरकारी नौकरियों के अवसर कम होते जा रहे हैं, फीस बढ़ रही है और ट्रेनिंग का खर्च लगभग दोगुना हो चुका है। नतीजा यह है कि कई खिलाड़ी बीच में ही खेल छोड़ देते हैं। खासतौर पर तब जब जूनियर स्तर पर उन्हें तुरंत सफलता नहीं मिलती।

खर्च का बोझ और जिद का सहारा : ऐसे टिके रहते हैं सपने

कोर्ट बुकिंग, लगातार शटल की जरूरत, रैकेट और जूते; ये सभी खर्च एक परिवार के बजट को हिला देने के लिए काफी होते हैं। जब तक किसी खिलाड़ी को शुरुआती उम्र से मजबूत स्पॉन्सरशिप नहीं मिलती, तब तक 17-18 साल की उम्र तक उन्हें अपने दम पर ही संघर्ष करना पड़ता है। कुछ खिलाड़ी हार मान लेते हैं, जबकि कुछ जिद पर टिके रहते हैं। वे रिश्तेदारों के ताने सुनते हैं, अनिश्चित भविष्य के साथ जीते हैं और फिर भी अपने सपनों को नहीं छोड़ते।

सपना दिखता आसान है पर रास्ता है बेहद महंगा

साइना नेहवाल और पीवी सिंधु जैसी असाधारण सफलताओं ने इस सपने को संभव जरूर दिखाया है, लेकिन उस रास्ते की असली कीमत पर बहुत कम चर्चा होती है। ज्यादातर लोगों ने पीवी सिंधु को 2016 ओलंपिक के दौरान जाना, लेकिन उससे पहले उनके करियर को संभालने में कितना संघर्ष और खर्च आया, इसको शायद ही कोई जानता है। कई खिलाड़ी किशोरावस्था तक कोशिश करते हैं और फिर टूटकर खेल छोड़ देते हैं। यह और भी दर्दनाक हो जाता है, जब पूरे परिवार की जिंदगी इस संघर्ष में झोंक दी जाती है।

हर मेडल के पीछे की है सच्चाई

शायद यह किसी के लिए 'एक और संघर्ष की कहानी' हो, लेकिन सच्चाई यही है कि हर उभरते खिलाड़ी के पीछे ऐसे ही सैकड़ों अनकहे संघर्ष खड़े होते हैं। चाहे ये कहानी सौवीं बार ही क्यों न सुनाई जाए, इसे बताया जाना जरूरी है, क्योंकि यहीं से समझ आता है कि एक पदक के पीछे सिर्फ मेहनत नहीं, बल्कि पूरा जीवन दांव पर लगा होता है। **साभार: जनसत्ता**

धर्मेश यशलाहा
बैडमिंटन समीक्षक

जनवरी 2027 से 15×3 रैली स्कोरिंग प्रणाली से बैडमिंटन मैच

विश्व बैडमिंटन महासंघ ने 25 अप्रैल को 87 वीं वार्षिक साधारण सभा में दो तिहाई बहुमत से मौजूदा 21×3 रैली स्कोरिंग प्रणाली की जगह 15×3 रैली स्कोरिंग प्रणाली को मंजूरी दे दी है। पक्ष में 198 और विरोध में 43 मत ही मिले। 82.16% मतों के साथ यह नई प्रणाली 4 जनवरी 2027 से दुनिया में लागू हो जाएंगी। 20-20 के बजाय 14-14 पर दो अंकों का अंतर जीत के लिए होगा जो 20-20 तक चलेगा। मैच 21-20 पर समाप्त होगा,अभी 29-29 तक चल कर 30 पर गेम समाप्त होता हैं। गेम में ब्रेक 11 के बजाय 8 पर मिलेगा। 21×3 स्कोरिंग प्रणाली 2006 से चल रही हैं। नई स्कोरिंग प्रणाली से गेम और मैच जल्दी समाप्त होंगे। खिलाड़ियों को थकान कम आएंगी। शटलकाकस और समय की बचत होगी।

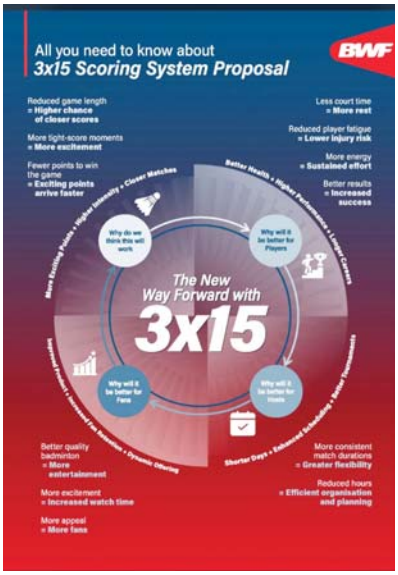

भारत में तो पहले से ही : भारत में तो 15×3 स्कोरिंग प्रणाली से ही अखिल भारतीय रैंकिंग बैडमिंटन स्पर्धाओं में पहले से ही योग्यता चक्र मुकाबले हो रहे हैं। राष्ट्रीय शालेय सहित अनेक स्पर्धाओं में 15 अंकों के गेम के मैच ही कराएं जा रहे हैं। विश्व बैडमिंटन महासंघ ने पिछले साल गुवाहाटी असम में हुई विश्व जूनियर बैडमिंटन स्पर्धा के व्यक्तिगत मुकाबलों को प्रायोगिक तौर पर 15×3 स्कोरिंग पद्धति से ही कराया था। कुछ स्पर्धा आयोजक तो अपनी पेतृक भारतीय बैडमिंटन संगठन के नियमों की उपेक्षा करके 15×3 अंकों के गेम में 14-14 पर दो अंक अंतर (डयुस) के बजाय गोल्डन अंक याने 15 पर ही गेम खत्म कर देते हैं। ऐसा करने वालों में मप्र भी शामिल हैं। मप्र बैडमिंटन संगठन को खिलाड़ियों की परेशानियों से कोई मतलब नहीं हैं।

मलेशिया के पूर्व ख्यात बैडमिंटन खिलाड़ी ली चोंग वेई और भारत के पूर्व अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी, पूर्व मुख्य प्रशिक्षक यु विमलकुमार 21×3 स्कोरिंग प्रणाली के ही पक्षधर हैं। विमलकुमार ने तो इस निर्णय को दुर्भाग्यपूर्ण बताया है। ली चोंग वेई मलेशिया की नेशनल परफार्मेंस कमेटी के निदेशक भी है। तो उन्होंने कहा कि विश्व बैडमिंटन महासंघ के निर्णय को हमें मानना ही होगा,4 जनवरी 2027 से विश्व टूर की मलेशिया खुली सुपर 1000 बैडमिंटन स्पर्धा होगी याने हमारे देश से ही इसकी शुरुआत होगी। हम तो इस साल अगस्त में होने वाले ली चोंग वेई कप से ही नये स्कोरिंग प्रणाली की शुरुआत कर देंगे जो जूनियर खिलाड़ियों के लिए होता हैं। ताकि खिलाड़ियों को इसकी आदत बनने लगे। सरताज अकादमी, इंदौर भी नई स्कोरिंग प्रणाली से अभी से स्पर्धाओं की शुरुआत कर देगी।

विश्व बैडमिंटन महासंघ की वार्षिक साधारण सभा में भारतीय बैडमिंटन संगठन महासचिव संजय मिश्रा, अंतरराष्ट्रीय बैडमिंटन खिलाड़ी कमेटी अध्यक्ष होने के नाते भारत की पी वी सिंधु ने भी हिस्सा लिया, मतदान भी किया।

डेनिश पाल एरिक होयेर को हाल आफ फेम उपाधि : विश्व बैडमिंटन महासंघ के पूर्व अध्यक्ष और मौजूदा आजीवन उपाध्यक्ष डेनमार्क के पाल एरिक होयेर को विश्व बैडमिंटन महासंघ हाल आफ फेम का सम्मान दिया गया है। 18 सालों में यह सम्मान पानेवाले वे पहले और कुल सातवें प्रशासक हैं। डेनमार्क के पाल एरिक होयेर 1996 एटलांटा ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीत चुके हैं। वे तीन कार्याकाल तक महासंघ अध्यक्ष रहे हैं। विश्व बैडमिंटन महासंघ अध्यक्ष थाईलैंड की खुन्यिंग पतामा लीस्वाद्त्राकुल ने होर्सेंस में उन्हें सम्मानित किया। वे यूरोपीय बैडमिंटन अध्यक्ष और अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति सदस्य भी रहे।

भारत 8 साल बाद युबेर कप के क्वार्टर फाइनल में नहीं : होर्सेंस डेनमार्क में विश्व थामस कप और युबेर कप फाइनल्स बैडमिंटन स्पर्धा में भारत की पुरुष टीम क्वार्टर फाइनल में आई। 2018 के बाद पहली बार भारतीय महिला टीम युबेर कप के समूह लीग में ही बाहर हो गई हैं। सिंधु के नेतृत्व में भारतीय टीम डेनमार्क से 2-3 से और गत विजेता चीन से 0-5 से हार गई। भारत ने यूरोपीय स्पर्धा कांस्य पदक प्राप्त युक्रेन को 4-1 से हराया।

भारत 2020, 2022और 2024 में युबेर कप फाइनल्स में क्वार्टर फाइनल तक खेला। 2014 और 2016 में भारत ने सेमीफाइनल खेलते हुए कांस्य पदक जीता। 2018 में भारतीय महिला टीम समूह लीग में कनाडा से 1-4 से और जापान से 0-5 से हार कर समूह लीग में तीसरे स्थान पर रही। अब 2026 में भी भारत समूह लीग में तीसरे स्थान पर रही हैं। भारतीय टीम में 5 श्रेष्ठ युगल खिलाड़ी थी। फिर भी पी वी सिंधु को युगल मैचों में खिलाया। क्या युगल की श्रेष्ठ खिलाड़ी तनिषा क्रास्टो को युगल विशेषज्ञ खिलाड़ी के साथ ही डेनमार्क और युक्रेन विरुद्ध मैच में नहीं खिलाया जाना था? जैसे चीन विरुद्ध खिलाया गया। चीन विरुद्ध पी वी सिंधु विश्व नंबर 2, आल इंग्लैंड विजेता वांग झि यि से, थाईलैंड मास्टर्स स्पर्धा विजेता देविका सिहाग 2024 की विश्व जूनियर विजेता झु वेन जिंग से एवं तनिषा क्रास्टो और कविप्रिया सेलवम लुओ झु मिन और झेंग शु झिआन से तीन -तीन गेमों में पराजित हुई। सिंधु पहली बार इस स्पर्धा के सभी मैचों में अपने सिर के एक छोर पर 'टेम्पल' डिवाइस पहन कर खेली। यह डिवाइस झोमटो फाउंडर दीपेन्दर गोयल की टीम ने बनाया हैं। यह टेक्नोलाजी ट्रेकर है। सिंधु को पहनाकर फीड बेक लिया जा रहा है। सिंधु पिछले कुछ सप्ताह से यह डिवाइस प्रायोगिक तौर पर पहनकर नियमित अभ्यास भी कर रही है। भारत और चीन मुकाबला 27 अप्रैल की रात लगभग सवा पांच घंटे चला। चीन ने युबेर कप में भारत को चौथी बार एक भी मैच गंवाएं बिना याने शून्य पर हराया हैं।

2022 की विजेता भारतीय पुरुष टीम थामस कप में समूह लीग के पहले दोनों मैच जीतकर क्वार्टर फाइनल में हैं भारत ने कनाडा को 4-1 से और आस्ट्रेलिया को 5-0 से हराया हैं।

विजेता शी युकी व उपविजता आयुष शेट्टी।

61 साल बाद पुरुष एकल फाइनल में भारतीय आयुष शेट्टी

आयुष एशियाई बैडमिंटन स्पर्धा में उपविजेता बनने वाले पहले भारतीय

एशियाई बैडमिंटन स्पर्धा में भारत को आल इंग्लैंड उपविजेता लक्ष्य सेन और पूर्व एशियाई विजेता सात्विक साईराज रैकीरेड्डी और चिराग शेट्टी से सर्वाधिक उम्मीद थी। इस साल अब तक बेहतर नहीं दे सके 20 वर्षीय आयुष शेट्टी उलटफेर करते हुए फाइनल खेल लेगे। यह तो किसी ने नहीं सोचा था। लक्ष्य सेन पहले दौर में विश्व नंबर 22 हांगकांग के ली चेयुक यियु से 12-21,19-21 से हार गए। आल इंग्लैंड के बाद लक्ष्य की यह पहली स्पर्धा थी। सात्विक साईराज रैकीरेड्डी और चिराग शेट्टी को चौथा क्रम मिला था। लेकिन सात्विक के कंधे की तकलीफ पूरी ठीक नहीं होने से वे स्पर्धा से ही हट गये। ट्रेसा जोली और गायत्री गोपीचंद भी हट गई।

विश्व नंबर 25 आयुष शेट्टी एशियाई बैडमिंटन स्पर्धा में दिनेश खन्ना एवं सात्विक साईराज रैकीरेड्डी और चिराग शेट्टी के इतिहास को तो नहीं दोहरा सके। लेकिन उन्होंने इतिहास तो रच दिया हैं। आयुष शेट्टी एशियाई बैडमिंटन स्पर्धा में रजत पदक जीतने वाले पहले भारतीय बन गए हैं। वे एकल में फाइनल खेलने वाले दूसरे भारतीय खिलाड़ी हैं। 61 साल बाद एकल में कोई भारतीय खिलाड़ी एशियाई बैडमिंटन स्पर्धा में फाइनल खेला,आयुष शेट्टी ने उपविजेता होकर भारत को तीन साल बाद एशियाई बैडमिंटन स्पर्धा में पदक दिलाया। निंग्बो में हुई 43 वीं एशियाई बैडमिंटन स्पर्धा में पांचों वर्गों में नये विजेता बने। दक्षिण कोरिया ने तीन खिताब जीते,दो खिताब चीन को मिले। चीन के शी युकी और दक्षिण कोरिया की एन से युंग नए एशियाई विजेता बने।

निंग्बो ओलंपिक स्पोर्ट्स सेंटर में 7 से 12 अप्रैल तक हुई साढ़े 5 लाख डालर इनामी राशि स्पर्धा में पुरुष एकल फाइनल में विश्व विजेता। दूसरे क्रम के चीन के 30 वर्षीय शी युकी ने 23 दिन बाद 21 साल पूरे कर रहे आयुष शेट्टी को 42 मिनट में 21-8, 21-10 से हराया। विश्व नंबर 2 शी युकी ने पहले गेम में 2-0,6-2,7-4,10-5और 8 मिनट में 11-6 की बढ़त ले ली। डाउन द लाइन स्मैशों,हाफ स्मैशों से शी 13-6,16-7और 17-8 से आगे हो गए। दूसरे गेम में 9-8 स्कोर पर आयुष के दोनों चैलेंज भी खत्म हो गए। इसके बाद शी ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। वे 10 मिनट में 11-8 से आगे हुए जिसको नेटक्रास और चैलेंज सक्सेसफुल से 14-8 कर दिया,इसके बाद तो शी पूरी तरह से हावी हो गए। करारे स्मैशों से 21 मिनट में गेम जीतकर पहली बार एशियाई विजेता बन गए। 2017 के बाद पहली बार पुरुष एकल खिताब चीनी खिलाड़ी को मिला हैं। तब चेन लोंग जीते थे। तब शी युकी चेन लोंग से ही सेमीफाइनल में हारे थे। एशियाई विजेता बनने वाले शी युकी 13 वें चीनी खिलाड़ी हैं। शी युकी ने 2017 में कांस्य पदक के बाद 2019 वुहान में रजत पदक जीता था। वे फाइनल में जापान के केन्तो मोमोतो से 21-12, 18-21, 8-21 से फाइनल में हारे थे। 2024 में भी शी इंडोनेशिया के जोनातन क्रिस्टी से सेमीफाइनल में तीन गेमों में हारे और कांस्य पदक हासिल किया। 2018 में एच एस प्रणोय, चेन लोंग से ही सेमीफाइनल में 16-21, 18-21 से हार कर कांस्य पदक लाए थे। जब शी युकी केन्ता मोमोता से दूसरे दौर में ही तीन गेमों में हार गए थे। प्रणोय है पहले एशियाई बैडमिंटन स्पर्धा में दिनेश खन्ना, सुरेश गोयल, प्रकाश पादुकोण, पुलैला गोपीचंद और अनुप श्रीधर ने पुरुष एकल में कांस्य पदक जीते।

भारत को तीन साल बाद इस स्पर्धा में पदक मिला हैं। आयुष शेट्टी से पहले 2023 में सात्विक साईराज रैकीरेड्डी और चिराग शेट्टी ने पुरुष युगल में एशियाई खिताब जीता था। आयुष शेट्टी ने फाइनल में हारने के बाद कहा ' मेरे लिए फाइनल बड़ी उपलब्धि हैं। मेरे लिए यह सप्ताह जबरदस्त रहा हैं। मुझे कड़े मुकाबलों में महत्वपूर्ण जीतें मिली। मैं सेमीफाइनल में पहला गेम हारने के बाद वापसी करने में सफल रहा। मुझे महसूस हो रहा था कि आज भी महान दिन होगा। दूसरे गेम में मैंने शुरुआत बढ़िया की। लेकिन फाइनल में आज शी युकी ने करारा जवाब दिया। उन्होंने कोर्ट के हर हिस्से में विजेता की तरह स्ट्रोक खेले।

आयुष के प्रशिक्षक यु विमलकुमार ने बताया कि आयुष का टाप प्रतिद्वंद्वी शी युकी से मुकाबला था,शी युकी का अनुभव। नियंत्रण और तकनीक उच्च स्तर की थी। वह पूरी तैयारी से उतरा। आयुष को अपनी लय में नहीं आने दिया। स्मैश अटेक और सटीक नेट से यह मैच अलग ही दिखाई दे रहा था। पहले गेम में आयुष ने आधुनिक बैडमिंटन के श्रेष्ठ आक्रमक खिलाड़ी के सामने नकारात्मक अंक दिए। दूसरे गेम में आयुष को 7-2 की बढ़त से मजबूत प्लेटफार्म मिला। लेकिन आयुष ने फिर नकारात्मक अंक दिए। शी नियंत्रित खेले। दोनों में फर्क साफ दिखाई दिया। भारतीय चहेतों के लिए खुशी है कि आयुष युवा खिलाड़ी हैं। अभी वास्तव में आयुष की यात्रा की शुरुआत हैं। अभी उसको आगे बढ़ना हैं।

– धर्मेश यशलहा

विश्व स्पर्धा नई दिल्ली और एशियाई खेल आयुष के अगले लक्ष्य

कहा- इस साल विश्व टाप-10 में आना है

एशियाई बैडमिंटन स्पर्धा में उपविजेता बनने और रजत पदक हासिल करने वाले पहले भारतीय खिलाड़ी बनने पर आयुष शेट्टी का सेंटर फॉर बैडमिंटन एक्सलेंस (सीबीई) में भव्य स्वागत किया गया। पूर्व नाम प्रकाश पादुकोण बैडमिंटन अकादमी मुख्य प्रशिक्षक सागर चौपड़ा और खिलाड़ियों ने स्वदेश लौटने पर स्वागत किया। पादुकोण-द्रविड सेंटर फॉर स्पोर्ट्स एक्सलेंस के विवेक कुमार (पूर्व अंतरराष्ट्रीय बैडमिंटन खिलाड़ी)के साथ ही प्रशिक्षकगण सागर चौपड़ा, डी के सेन, उमेंद्र राणा, सयाली गोखले आदि। आल इंग्लैंड उपविजेता लक्ष्य सेन भी मौजूद थे। इंडोनेशियाई प्रशिक्षक इरविंदस्याह का भी स्वागत किया गया जो आयुष शेट्टी के ट्रेवलर प्रशिक्षक थे। आयुष शेट्टी के भारत लौटने पर नईदिल्ली में भारतीय बैडमिंटन संगठन ने प्रेस से मिलिए कार्यक्रम का आयोजन भी किया। 3 मई को 21 साल पूरे करने वाले आयुष शेट्टी ने हमारे प्रतिनिधि **धर्मेश यशलहा** को बताया कि वे अब विश्व थामस कप फाइनल्स टीम बैडमिंटन स्पर्धा, थाईलैंड, मलेशिया, सिंगापुर और इंडोनेशिया की विश्व टूर स्पर्धाओं में हिस्सा लेंगे।

आपका अगला लक्ष्य क्या है?

आयुष ने बताया कि विश्व बैडमिंटन स्पर्धा और एशियाई खेल उनके अगले लक्ष्य हैं जो इस साल होंगे। एशियाई खेल जापान में हैं। विश्व बैडमिंटन स्पर्धा इस साल भारत में ही हैं। विश्व स्पर्धा नईदिल्ली में ही 17 से 23 अगस्त तक होगी। एशियाई बैडमिंटन स्पर्धा के बाद आयुष की विश्व रैंकिंग 18 हो गई हैं।

इस साल विश्व रैंकिंग में कहां तक पहुंचना चाहते हैं?

आयुष ने कहा कि वे इस साल टाप-10 में जगह बनाना चाहते हैं,3 मई 2005 को कर्नाटक के केरकला में जन्मे आयुष के माता-पिता शाल्मली और रामप्रकाश शेट्टी हैं। विश्व जूनियर बैडमिंटन स्पर्धा 2023 स्पोकने में कांस्य पदक प्राप्त 6फुट 5 इंच कद के आयुष ने बताया कि मेरे पहले आदर्श खिलाड़ी मलेशिया के ली चोंग वेई है। भारतीय खिलाड़ियों में पूर्व विश्व उपविजेता किदांबी श्रीकांत है। प्रशिक्षक यु विमलकुमार और सागर चौपड़ा हैं। उन्हें ओलंपिक विजेता डेनमार्क के विक्टर एक्सलेसेन के साथ दुबई में ट्रेनिंग और अभ्यास का फायदा मिला है।

एशियाई बैडमिंटन स्पर्धा में आयुष सेमीफाइनल में विश्व नंबर एक, विश्व उपविजेता थाईलैंड के कुन्लावुत वितिद्सर्न के खिलाफ सेमीफाइनल मैच को सर्वश्रेष्ठ मुकाबला मानते हैं। वे कहते हैं कि पहले क्रम के कुन्लावुत से वे पहला गेम हारने के बाद जीते हैं। फाइनल में शी युकी विरुद्ध खेलने का दबाव था ही, वह विश्व विजेता हैं। विश्व के श्रेष्ठ खिलाड़ियों में हैं और अपने देश के दर्शकों के बीच ही खेल रहे थे। पिछले साल अमेरिका खुली सुपर -300 स्पर्धा जीतने वाले आयुष ने बताया कि आस्ट्रेलियन खुली स्पर्धा सेमीफाइनल में जापान के कोदाई नाराओका से मुकाबले को वे पिछले साल का सर्वश्रेष्ठ मुकाबला मानते है। आयुष की राय में 21 × 3 स्कोरिंग प्रणाली ही बढ़िया हैं जो अभी चल रही हैं। प्रस्तावित 15×3 स्कोरिंग प्रणाली लागू नहीं होना चाहिए, जिसमें जल्दी अंक चले जाते हैं।

फ्रेंच ओपन की इनामी राशि में 10 प्रतिशत का इजाफा, जानिए विजेता को कितना होगा धनलाभ

नई दिल्ली। फ्रेंच ओपन टेनिस टूर्नामेंट की इनामी राशि में लगभग 10 प्रतिशत की बढ़ोतरी की गई है जिससे कुल इनामी राशि छह करोड़ 17 लाख यूरो (सात करोड़ 21 लाख डॉलर) हो गई है। यह कुल राशि पिछले साल के मुकाबले 53 लाख यूरो अधिक है। प्रतियोगिता 24 मई को पश्चिमी पेरिस के रोलां गैरो में शुरू होगी। पुरुष और महिला एकल चैंपियन को 28 लाख यूरो और उप विजेता को 14 लाख यूरो मिलेंगे। सेमीफाइनल में पहुंचने वाले खिलाड़ियों को सात लाख 50 हजार यूरो और पहले दौरे में हारने वाले खिलाड़ियों को 87 हजार यूरो मिलेंगे। पुरुष और महिला युगल के विजेताओं को छह लाख यूरो और मिश्रित युगल की चैंपियन जोड़ी को एक लाख 22 हजार यूरो मिलेंगे। पिछले साल कार्लोस अल्कारेज ने पांच सेट के तक चले फाइनल में यानिक सिनर को हराकर पुरुष एकल खिताब जीता था जबकि कोको गॉफ ने एरिना सबालेंका को हराकर महिला एकल खिताब अपने नाम किया था।

आरित कपिल अंतरराष्ट्रीय मास्टर नार्म हासिल करने वाले युवा भारतीय बने

नई दिल्ली। दिल्ली के 10 वर्षीय आरित कपिल ने कम उम्र में ही बड़ी उपलब्धि हासिल कर ली है। आरित स्पेन के मेनोरका में आयोजित अंतरराष्ट्रीय शतरंज प्रतियोगिता के अंतिम दौर में ऑस्ट्रेलिया के सैमुअल असाका के साथ ड्रॉ खेलकर अंतरराष्ट्रीय मास्टर (आईएम) नॉर्म हासिल करने वाले भारत के सबसे कम उम्र के खिलाड़ी बन गए हैं। उन्होंने महज 10 वर्ष सात महीने की उम्र में इस उपलब्धि को हासिल कर नया रिकॉर्ड बनाया। आरित ने प्रतियोगिता की शुरुआत शानदार तरीके से करते हुए दूसरे दौर में कजाखस्तान के पूर्व विश्व अंडर-20 चैंपियन और ग्रैंडमास्टर नोगरबेक काजीबेक को हराया। दिल्ली के इस खिलाड़ी के लिए पिछले साल अंडर-11 राष्ट्रीय चैंपियनशिप जीतना उनके करियर के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। वह वर्तमान में 2015 में जन्मे खिलाड़ियों की विश्व रैंकिंग में दूसरे नंबर पर हैं। इस प्रतियोगिता में आरित का सबसे यादगार प्रदर्शन अर्जेंटीना के 12 वर्षीय अंतरराष्ट्रीय मास्टर ओरो फॉस्टिनो के खिलाफ रहा, जिन्हें शतरंज की दुनिया का मेसी कहा जाता है। इस मुकाबले में आरित ने संयम दिखाते हुए ड्रॉ हासिल किया और वैश्विक स्तर पर ध्यान आकर्षित किया। आरित को अंतिम तीन मुकाबलों में केवल आधा अंक चाहिए था, लेकिन लगातार दो हार के बाद उनका पहला आईएम नॉर्म हासिल करने का सपना मुश्किल में पड़ता नजर आया। उन्होंने हालांकि अंतिम दौर में खुद को संभाला और तेजी से सही चालें चलते हुए लक्ष्य हासिल कर लिया।

भारत ने एशियन कुश्ती में जीते 14 पदक, सुजीत और अभिमन्यु ने दिलाए गोल्ड

नई दिल्ली। सीनियर एशियन कुश्ती चैंपियनशिप 2026 में वर्ल्ड अंडर-23 चैंपियन सुजीत और अभिमन्यु ने अपने-अपने पुरुषों के फ्रीस्टाइल फाइनल मुकाबलों में भारत को दो गोल्ड मेडल दिलाने में मदद की। किर्गिस्तान के बिश्केक में जारी चैंपियनशिप में सुजीत ने पुरुषों के 65 किलोग्राम फ्रीस्टाइल फाइनल में उज्बेकिस्तान के उमिदजोन जलोलोव के खिलाफ 8-1 से जीत दर्ज की। इसके साथ ही वह बजरंग पूनिया (साल 2019) के बाद इस भार वर्ग में एशियन चैंपियनशिप का गोल्ड जीतने वाले पहले भारतीय बन गए। सुजीत ने शुरुआती राउंड में धीमी शुरुआत की, क्योंकि जलोलोव ने पकड़ बनाए रखी और भारतीय पहलवान को हमला करने का मौका नहीं दिया, लेकिन 23 वर्षीय भारतीय पहलवान ने दूसरे राउंड की शुरुआत में ही तेजी दिखाई और उज्बेक पहलवान के खिलाफ अपनी पांचवीं जीत दर्ज की। कुछ ही मिनटों बाद, अभिमन्यु ने भारतीय खेमे के लिए खुशी दोगुनी कर दी। अभिमन्यु ने पुरुषों के 70 किलोग्राम फ्रीस्टाइल फाइनल में 0-2 से पिछड़ने के बाद शानदार वापसी करते हुए मंगोलिया के तुलगा तुमुर ओचिर को 5-3 से हराया।

सीआईएसएफ सेंट्रल रेसलिंग टीम के 24 वर्षीय पहलवान हेड कांस्टेबल अभिमन्यु ने किर्गिस्तान के बिश्केक में आयोजित एशियन कुश्ती चैंपियनशिप में 70 किलोग्राम फ्रीस्टाइल वर्ग में गोल्ड मेडल जीतकर फोर्स और देश का नाम रोशन किया। संदीप मान के पास भारत के लिए गोल्ड मेडल्स की हैट्रिक पूरी करने का मौका था, लेकिन पुरुषों के 79 किलोग्राम वर्ग के एक कड़े मुकाबले वाले फाइनल में उन्हें 1-2 से हार का सामना करना पड़ा।

इससे पहले, अंकुश ने जापान के फुगा सासाकी को 8-2 से हराकर पुरुषों के 57 किलोग्राम फ्रीस्टाइल वर्ग में ब्रॉन्ज जीता। इसके साथ ही भारत के कुल मेडलों की संख्या बढ़कर दो गोल्ड, चार सिल्वर और आठ ब्रॉन्ज मेडल हो गई। मुकाबले के आखिरी दिन भारत के पास दो और गोल्ड मेडल जीतने का मौका होगा, क्योंकि पेरिस ओलंपिक्स के ब्रॉन्ज मेडलिस्ट अमन (पुरुषों की 61 किलोग्राम फ्रीस्टाइल) और मुकुल दहिया (पुरुषों की 8 6 किलोग्राम फ्रीस्टाइल) ने फाइनल में अपनी जगह पक्की कर ली है। 86 किलोग्राम वर्ग में, मुकुल दहिया ने कजाकिस्तान के बोलत साकायेव के खिलाफ सेमीफाइनल मुकाबले की शुरुआत में ही छह प्वाइंट्स गंवा दिए थे, लेकिन फिर उन्होंने दो अहम 'टेकडाउन' करके अपनी लय हासिल कर ली और अपने विरोधी को 12-6 से हराकर फाइनल में अपनी जगह पक्की कर ली। अब गोल्ड मेडल के लिए उनका मुकाबला ईरान के कामरान गासेमपौर से होगा। इस बीच, दिनेश पुरुषों की 125 किलोग्राम फ्रीस्टाइल वर्ग में ब्रॉन्ज मेडल के लिए चुनौती देंगे, क्योंकि वे सेमीफाइनल में बहरीन के शमिल शरीपोव से च्फॉलज के जरिए हार गए थे।

भारतीय महिलाएं सैफ फुटबाल के ग्रुप बी में जौहर दिखएगी

नई दिल्ली। भारतीय महिला फुटबॉल टीम को 25 मई से छह जून तक गोवा के मडगाव में होने वाली सैफ महिला चैंपियनशिप में बांग्लादेश और मालदीव के साथ ग्रुप बी में रखा गया है। नेपाल, श्रीलंका और भूटान ग्रुप ए में हैं। ढाका में पिछले दिनों सैफ सचिवालय में ड्रॉ डाले गए, जिसके अनुसार प्रत्येक ग्रुप में शीर्ष पर रहने वाली दो टीमें सेमीफाइनल में जगह बनाएंगी। पाकिस्तान ने अपनी टीम नहीं भेजने का फैसला किया है। भारत दूसरी बार सैफ महिला चैंपियनशिप की मेजबानी करेगा। इससे पहले उसने 2016 में पश्चिम बंगाल के सिलीगुड़ी में इसकी मेजबानी की थी। भारत ने तब अपना चौथा खिताब जीता था। गोवा दूसरी बार सैफ चैंपियनशिप की मेजबानी करेगा। इससे पहले 1999 की पुरुष चैंपियनशिप भी जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में ही आयोजित की गई थी, जहां भारत ने फाइनल में बांग्लादेश को हराकर खिताब जीता था। भारत सैफ महिला चैंपियनशिप का रिकॉर्ड पांच बार का चैंपियन है। उसने 2010, 2012, 2014, 2016 और 2019 में खिताब जीते। बांग्लादेश पिछले दो बार का चैंपियन है। उसने 2022 और 2024 में खिताब जीते थे।

भारत में 14 साल बाद फॉर्मूला 1 की वापसी, जल्द मिलेगी मान्यता

नई दिल्ली। भारत में 13 साल बाद फॉर्मूला वन रेस की वापसी हो सकती है। नोएडा के बुद्ध इंटरनेशनल सर्किट को पुनर्जीवित करने की योजना है। यह वही ट्रैक है जहां 2011, 2012 और 2013 में फॉर्मूला वन रेस हुई थी। खेल मंत्रालय जल्द ही इस स्पोर्ट्स को मान्यता देने वाला है। खेल मंत्रालय फॉर्मूला वन की वापसी के मद्देनजर व्यवस्था और बुनियादी ढांचा उपलब्ध कराने के लिए तैयार है। तीन कंपनियां भी इसकी वापसी में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। कुछ ही दिनों में संयुक्त बैठक होने वाली है और साल 2027 में फॉर्मूला वन रेस आयोजित की जा सकती है। भारत में तीन शहरों (नोएडा, हैदराबाद और चेन्नई) में फॉर्मूला वन ट्रैक हैं। साल 2027 में नोएडा के बुद्ध इंटरनेशनल सर्किट पर फॉर्मूला वन रेस आयोजित हो सकती है। केंद्रीय खेल मंत्री मनसुख मांडविया ने सोमवार 13 अप्रैल को मीडिया के साथ एक अनौपचारिक बातचीत में कहा कि देश में फॉर्मूला वन की वापसी के लिए सरकार पूरा सहयोग करेगी। मनसुख मांडविया ने कहा कि उन्हें यकीन है कि 2027 में भारत में फॉर्मूला वन रेस की वापसी होगी। इसके लिए कर संबंधी बाधाओं को दूर किया जाएगा, जिसकी वजह से 2013 के बाद भारत में रेस नहीं हुई है।

राष्ट्रमंडल खेल 2030 में हॉकी और क्रिकेट भी होंगे शामिल

नई दिल्ली। केंद्रीय खेल मंत्री मनसुख मांडविया ने बताया है कि 2030 में होने वाले राष्ट्रमंडल खेलों में हॉकी और क्रिकेट जैसे भारतीय पारंपरिक खेल भी शामिल किए जाएंगे। वहीं, कबड्डी, योगासन, खोखो और मलखम्ब जैसे पारंपरिक भारतीय खेलों में से भी दो को जगह दी जाएगी। राष्ट्रमंडल खेल अध्यक्ष डोनाल्ड रूकारे की अध्यक्षता में इसके प्रतिनिधिमंडल ने पिछले सप्ताह मेजबान शहर अहमदाबाद में तैयारियों का जायजा लिया। उन्होंने शुक्रवार को मांडविया से भी मुलाकात की थी।

ग्लास्गो में सिर्फ 10 खेल शामिल : ग्लास्गो में इस साल होने वाले राष्ट्रमंडल खेलों में बजट में कटौती के लिए क्रिकेट और हॉकी को शामिल नहीं किया गया है, लेकिन मांडविया ने कहा कि भारत में होने वाले खेलों में इनकी वापसी होगी। ग्लास्गो खेलों में सिर्फ 10 खेल शामिल किए गए हैं जिनमें निशानेबाजी, कुश्ती और बैडमिंटन भी नहीं हैं। खेल मंत्री ने कहा, हमारे पारंपरिक खेलों में से कबड्डी, मलखम्ब, खोखो और योगासन में से दो को शामिल करने का प्रयास है। क्रिकेट और हॉकी दोनों 2030 खेलों में होंगे। राष्ट्रमंडल खेल के अध्यक्ष यहां से काफी प्रभावित होकर गए हैं। खासकर खेलो इंडिया की विभिन्न श्रेणियों और अस्मिता खेलों से वह काफी प्रभावित हुए। भारत में अब खेलों को प्राथमिकता में रखा जा रहा है जिसका उन पर अच्छा प्रभाव पड़ा है।

भारत में होना है आयोजन : भारत में 2010 के बाद पहली बार राष्ट्रमंडल खेलों का आयोजन हो रहा है। एथलेटिक्स, पैरा एथलेटिक्स, तैराकी और पैरा तैराकी, टेबल टेनिस और पैरा टेबल टेनिस, बॉल और पैरा बॉल, भारोत्तोलन और पैरा भारोत्तोलन, कलात्मक जिम्नास्टिक, नेटबॉल और मुक्केबाजी 2030 राष्ट्रमंडल खेलों का हिस्सा होंगे। टी20 क्रिकेट, रग्बी सेवंस और हॉकी में से दो खेल इनमें शामिल होंगे।

भारतीय महिला हॉकी टीम ने अर्जेंटीना से सीरिज 2-2 से बराबर कर दौरे का शानदार अंत किया

नई दिल्ली। भारतीय महिला हॉकी टीम ने अर्जेंटीना के खिलाफ चार मुकाबलों के दौरे को 2-2 की बराबरी पर खत्म किया। सीरीज की मुश्किल शुरुआत के बाद, भारतीय टीम ने शानदार वापसी करते हुए अपने आखिरी 2 मैच जीतकर दौरे का शानदार अंत किया। इस दौरे की शुरुआत 13 अप्रैल को एक कड़े मुकाबले वाले मैच से हुई, जिसमें नवनीत कौर (22') और अन्नू (29') ने भारत के लिए गोल किए। हालांकि, अर्जेंटीना ने यह मैच 4-2 से जीता, जिसमें मारिया एमिलिया लार्सन (11'), विक्टोरिया ग्रैनाटो (18'), और जूलिएटा जानकुनास (42', 55') ने गोल किए, लेकिन भारत ने पूरे मैच के दौरान जोरदार आक्रामक खेल दिखाया। 14 अप्रैल को खेले गए दूसरे मुकाबले में, इशिका (22') ने भारत को शुरुआती बढ़त दिलाई, लेकिन मेजबान टीम ने 2-1 से करीबी जीत दर्ज की। अर्जेंटीना की तरफ से दोनों गोल अगस्टिना गोरजेलानी (34', 48') ने दागे।

16 अप्रैल को तीसरे मैच में भारत ने अपनी लय हासिल कर ली और 2-1 से जीत दर्ज करके सीरीज में अपनी उम्मीदें जिंदा रखीं। नवनीत कौर (26') और नेहा (37') दोनों ने पेनाल्टी कॉर्नर से गोल करके भारत को 2-0 की आरामदायक बढ़त दिलाई। अर्जेंटीना की अगस्टिना गोरजेलानी (52') के आखिरी समय में किए गए गोल के बावजूद, भारतीय टीम ने अपना संयम बनाए रखा और जीत हासिल करके आखिरी दिन के मुकाबले को रोमांचक बना दिया।

17 अप्रैल को, सीरीज का आखिरी मुकाबला कड़ा था जो 0-0 की बराबरी पर खत्म हुआ। दोनों टीमों को गोल करने के मौके मिले, लेकिन भारतीय डिफेंडरों ने पूरे मैच के दौरान मजबूती से डटे रहकर कोई गोल नहीं होने दिया। शूटआउट में, भारत ने अपना संयम बनाए रखा और 3-2 से जीत दर्ज करके यह सुनिश्चित किया कि सीरीज बराबरी पर खत्म हो। यह दौरा उनकी तैयारियों का एक अहम हिस्सा रहा है, जिसने टीम को विरोधी टीम के घर पर एक शीर्ष स्तर की टीम के खिलाफ खेलने का महत्वपूर्ण अनुभव दिया है। टीम इंडिया अब अपने घर में कैंप और प्रैक्टिस मैचों के सहारे अपने आपको और मजबूत करेगी।

हॉकी ओलंपियन गुरबख्श सिंह ग्रेवाल का निधन

नई दिल्ली। भारतीय हॉकी के पूर्व खिलाड़ी और 1968 मैक्सिको ओलंपिक में कांस्य पदक जीतने वाली टीम के सदस्य गुरबख्श सिंह ग्रेवाल का 24 अप्रैल 2026 को पंजाब के जीरकपुर में निधन हो गया। 84 साल के गुरबक्स का हार्ट अटैक के कारण निधन हुआ। हॉकी इंडिया ने गुरबक्स सिंह ग्रेवाल के निधन की जानकारी दी। हॉकी इंडिया ने कहा, 'हॉकी इंडिया ने शनिवार को भारतीय पुरुष हॉकी टीम के

पूर्व खिलाड़ी और ओलंपियन गुरबख्श सिंह ग्रेवाल के निधन पर गहरा दुख जताता है। 84 साल की उम्र में उनका निधन हो गया। 1968 के मेक्सिको सिटी ओलंपिक्स में भारत की कांस्ट पदक जीतने वाली टीम के सदस्य, गुरबख्श सिंह ग्रेवाल एक खिलाड़ी, मेंटर और प्रशासक के तौर पर एक समृद्ध विरासत छोड़ गए हैं।'

गुरबख्श सिंह ग्रेवाल अपने भाई बलबीर सिंह ग्रेवाल के साथ खेले। भारतीय हॉकी के इतिहास में पहली बार था कि दो सगे भाइयों ने एक ही ओलंपिक खेलों में एक साथ देश का प्रतिनिधित्व किया। 1 अप्रैल 1942 को पंजाब प्रांत के लायलपुर (अब पाकिस्तान में) में जन्मे ग्रेवाल 20 साल की उम्र में हॉकी खेलने के लिए मुंबई आ गए। उन्होंने पश्चिम रेवला का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने मैदान पर और मैदान के बाहर दोनों जगह छाप छोड़ी। पश्चिम रेलवे में स्पोर्ट्स ऑफिसर के पद से रिटायर होने के बाद भी ग्रेवाल खेल के विकास में पूरी तरह से शामिल रहे। उन्होंने कई सालों तक मुंबई की कई टीमों को कोचिंग दी और बाद में मुंबई हॉकी एसोसिएशन के मानद सचिव के तौर पर काम किया।

दक्षिण एशियाई युवा टेबल टेनिस में भारत ने जीते 13 स्वर्ण पदक

नई दिल्ली। भारतीय टेबल टेनिस खिलाड़ियों ने शनिवार को दक्षिण एशियाई युवा टेबल टेनिस चैंपियनशिप में अलग-अलग वर्ग में 13 स्वर्ण पदक जीतकर अपना क्षेत्रीय दबदबा साबित कर दिया। यह टूर्नामेंट एशियाई युवा चैंपियनशिप के लिए क्वालिफायर भी है। भारत के प्रियनुज भट्टाचार्य ने अंडर-19 लड़कों के एकल फाइनल में हमवतन पुनीत बिस्वास को 3-1 से हराकर स्वर्ण पदक जीता।

मणिपुर की बेटी ने जूडो में रचा इतिहास

नई दिल्ली। चोटों से जूझती हुई, कई बार शुरुआती दौर में ही हार झेलने वाली और दो बार घुटने की सर्जरी से गुजरने के बाद भी हार न मानने वाली मणिपुर की इनुंगानबी ताखेल्लामबम ने आखिरकार वह कर दिखाया, जिसका भारत को 13 साल से इंतजार था। एशियन जूडो चैंपियनशिप में कांस्य पदक जीतकर इनुंगानबी ने न सिर्फ अपनी मेहनत को मुकाम तक पहुंचाया, बल्कि एंगोम अनीता चानू के बाद इस स्तर पर पदक जीतने वाली पहली भारतीय बनकर इतिहास भी रच दिया। यह सिर्फ एक पदक नहीं, बल्कि संघर्ष, धैर्य और विश्वास के जीत की कहानी है। मंगोलिया की लखवादुलम सरंत्सेत्सेग के खिलाफ कांस्य पदक मुकाबले में जब इनुंगानबी ने चोकहोल्ड लगाकर जीत पक्की की, तब वह सिर्फ मैच पर फोकस

कर रही थीं, लेकिन असली मायने उस जीत के बाद सामने आए। उनकी कोच एंगोम अनीता चानू वर्षों से एक ब्लेजर अपने साथ लेकर टूर्नामेंट में जाती थीं, जो सिर्फ पदक मैच में पहना जाता है, लेकिन उन्हें कभी पहनने का मौका नहीं मिला। इस बार इनुंगानबी ने ही उनसे कहा था कि मैम इस बार आप इसे जरूर पहनेंगी और आखिरकार 13 साल बाद वह ब्लेजर मैदान में नजर आया। इनुंगानबी का सफर आसान नहीं रहा। क्वार्टर फाइनल में उन्हें उज्बेकिस्तान की शिरिनजोन युल्डोशोवा से हार का सामना करना पड़ा। इसके बाद उनका सफर लगभग खत्म सा लग रहा था। हालांकि, जैसे ही युल्डोशोवा फाइनल में पहुंचीं, इनुंगानबी के लिए रेपेचेज का रास्ता खुल गया। इनुंगानबी ने मिले दूसरे मौके को दोनों हाथों से भुनाया और कांस्य पदक मुकाबले तक पहुंचीं। इनुंगानबी ने बताया कि जब मैं कांस्य पदक मुकाबले में उतरी तो खुद से कहा- यह बहुत बड़ा मौका है। इनुंगानबी मणिपुर से आती हैं। मणिपुर कुंजुरानी देवी और मैरीकॉम जैसी हस्तियों की जन्मस्थली है।

भारत ने एशियाई बॉक्सिंग में जीते 16 पदकों

नई दिल्ली। भारत ने एशियाई बॉक्सिंग चैंपियनशिप 2026 में एक यादगार अभियान का समापन किया। विश्वनाथ सुरेश ने भी पुरुषों के 50 किलोग्राम वर्ग में बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए गोल्ड मेडल जीता। उन्होंने फाइनल में जापान के दाइची इवाई को 5:0 के बड़े अंतर से हराया।

हालांकि, सचिन ने 60 किलोग्राम वर्ग के फाइनल में दमदार प्रदर्शन किया, लेकिन उन्हें सिल्वर मेडल से संतोष करना पड़ा। भारत पांच गोल्ड मेडल के साथ अंक तालिका में दूसरे स्थान पर रहा। वहीं, कजाकिस्तान ने छह गोल्ड मेडल के साथ पहले स्थान पर कब्जा किया। हालांकि, भारत ने टूर्नामेंट में कुल मिलाकर सबसे ज्यादा 16 मेडल जीते। भारतीय महिला टीम का प्रदर्शन एशियाई बॉक्सिंग चैंपियनशिप में ऐतिहासिक रहा। टीम ने 4 गोल्ड, 2 सिल्वर और 4 ब्रॉन्ज के साथ कुल 10 मेडल अपने नाम किए। भारतीय महिला टीम मेडल टैली में पहले स्थान पर रही, जो महाद्वीपीय स्तर पर टीम का अब तक का सबसे बेहतरीन प्रदर्शनों में से एक रहा। विश्वनाथ का गोल्ड मेडल उनकी तेजी से बढ़ती सफलता की कहानी में एक अहम पड़ाव है। नेशनल लेवल पर लगातार बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए आगे बढ़ने वाले विश्वनाथ ने बहुत कम समय में ही इंटरनेशनल मंच पर अपनी एक मजबूत पहचान बना ली है। उलानबटार में उनका अभियान खासकर बहुत प्रभावशाली रहा। फाइनल तक के सफर में उन्होंने दुनिया के नंबर एक बॉक्सर को हराया, जिससे न सिर्फ उनका आत्मविश्वास झलकता है, बल्कि यह भी साबित होता है कि वे बड़े और मजबूत प्रतिद्वंद्वियों के सामने भी बेहतरीन प्रदर्शन करने की काबिलियत रखते हैं।

भोपाल अंतरराष्ट्रीय स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स पर बनने से पहले ही उठे कई सवाल

स्टेडियम के निर्माण कार्यों की गुणवत्ता को लेकर खेल मंत्री हुए नाराज, कहा- लापरवाही करने वालों पर करेंगे कार्रवाई

भोपाल। खेल एवं युवा कल्याण मंत्री विश्वास कैलाश सारंग ने बरखेड़ानाथू स्थित अंतरराष्ट्रीय स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स के निर्माण कार्यों की समीक्षा के दौरान कार्यों की गुणवत्ता अपेक्षित स्तर पर नहीं पाए जाने पर नाराजगी व्यक्त की। उन्होंने एमपीआरडीसी के अधिकारियों को नाराजगी व्यक्त करते हुए निर्देश दिए कि खेल परिसर के सभी कार्य गुणवत्तापूर्ण तरीके से शीघ्र पूर्ण किए जाएं। मंत्री श्री सारंग ने स्पष्ट निर्देश दिए कि यदि कार्यों में लापरवाही या गुणवत्ता में कमी पाई गई, तो संबंधित अधिकारियों के विरुद्ध सख्त कार्यवाही की जाएगी।

मंत्री श्री सारंग ने निर्देशित किया कि कॉम्पलेक्स के हैण्डओवर और टेकओवर की प्रक्रिया का पूर्ण वेरिफिकेशन किया जाए। बिना तकनीकी सत्यापन के किसी भी संरचना का हैंडओवर नहीं लिया जाए। साथ ही, सभी मरम्मत योग्य कार्यों का विस्तृत फ्लो-चार्ट बनाकर चरणबद्ध मरम्मत योजना तैयार की जाए, जिससे कार्यों में पारदर्शिता और गति बनी रहे। मंत्री श्री सारंग ने निर्देश दिए कि परिसर में पानी, बिजली, स्वच्छता, पार्किंग, आईटी, सर्वर रूम सहित सभी आवश्यक मूलभूत एवं आधुनिक सुविधाओं की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। कॉम्पलेक्स के सुचारु संचालन के लिए प्रशासनिक भवन, सर्वर रूम, आईटी रूम और आधुनिक ऑडिटोरियम के निर्माण के लिये ठोस कार्य-योजना तैयार की जाए। मंत्री श्री सारंग ने खेल परिसर की सुविधाओं और निर्माण कार्यों का थर्ड पार्टी ऑडिट कराने के निर्देश दिए, जिससे गुणवत्ता और मानकों की निष्पक्ष समीक्षा सुनिश्चित हो सके और परियोजना की विश्वसनीयता और मजबूती बनी रहे।

मंत्री श्री सारंग ने स्पष्ट किया कि परिसर में बिजली की आवश्यकता के लिए सोलर एनर्जी के उपयोग पर विशेष ध्यान दिया जाए। साथ ही, प्रदेश के सभी खेल परिसरों में सोलर व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए कार्ययोजना तैयार की जाए, जिससे ऊर्जा संरक्षण के साथ पर्यावरण संरक्षण को भी बढ़ावा मिले।

अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप हो निर्माण : मंत्री श्री सारंग ने कहा कि पूरे खेल परिसर का निर्माण अंतरराष्ट्रीय स्पर्धाओं के मापदंडों के आधार पर किया जाए, जिससे खिलाड़ी विश्वस्तरीय सुविधाओं का लाभ उठा सकें और मध्यप्रदेश देश-दुनिया में अपनी मजबूत पहचान बना सके। मंत्री श्री सारंग ने निर्देश दिए कि पूरे परिसर में साइनेज की स्पष्ट एवं सुव्यवस्थित व्यवस्था के लिए समर्पित प्रोजेक्ट प्लान तैयार कर इसे शीघ्र लागू किया जाए। खिलाड़ियों एवं आगंतुकों की सुविधा के लिए परिसर के अंदर उपयुक्त स्थान पर कैफेटेरिया का निर्माण किया जाए। उन्होंने विद्युत व्यवस्था, अग्नि सुरक्षा, हॉर्टिकल्चर कार्य, अतिरिक्त प्रवेश द्वार और बाउंड्री वॉल के समानांतर सड़क निर्माण सहित अन्य सभी कार्यों के लिए अलग-अलग प्रोजेक्ट प्लानिंग रिपोर्ट तैयार करने के निर्देश दिए।

पार्किंग और सुरक्षा व्यवस्था पर विशेष ध्यान : बैठक में जानकारी दी गई कि परिसर के सभी ब्लॉकों में दोपहिया एवं चारपहिया वाहनों के लिए समुचित पार्किंग व्यवस्था विकसित की जा रही है। अग्नि सुरक्षा के मानकों के अनुरूप फायर सेफ्टी उपकरणों की स्थापना की जा रही है तथा अतिरिक्त प्रवेश द्वार के निर्माण से आमजन, फायर ब्रिगेड और पार्किंग क्षेत्रों तक सुगम पहुंच सुनिश्चित की जाएगी। मंत्री श्री सारंग ने यह भी निर्देश दिए कि निर्माण एजेंसी द्वारा किसी भी संबद्ध एजेंसी को भुगतान से पहले खेल विभाग से अनापत्ति प्रमाण-पत्र (NOC) लेना अनिवार्य होगा तथा सभी आवश्यक उपकरणों की खरीदी से पूर्व विभागीय अनुमोदन सुनिश्चित किया जाए। बैठक में खेल एवं युवा कल्याण संचालक अंशुमान यादव, संयुक्त संचालक बी.एस. यादव, निर्माण एजेंसी के प्रतिनिधि एवं अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

सचिन फेमिली का बस्तर दौरा

सचिन ने युवा खिलाड़ियों के साथ रस्साकशी वालीबॉल और क्रिकेट में हाथ आजमाए

सचिन तेंदुलकर का आगमन बदलते बस्तर की सशक्त पहचान : मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने पिछले दिनों माँ दंतेश्वरी की पावन धरा पर भारत र| और क्रिकेट के महानायक सचिन तेंदुलकर के आगमन पर सोशल मीडिया हैंडल एक्स पर पोस्ट करते हुए कहा कि दंतेवाड़ा जिले के सुदूर वनांचल क्षेत्र छिंदनार ग्राम में सचिन तेंदुलकर का आगमन बदलते हुए बस्तर की सशक्त पहचान है। यह उस नए बस्तर की तस्वीर प्रस्तुत करता है, जो अब भय और असुरक्षा की छाया से निकलकर विकास, अवसर और आत्मविश्वास की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इस तरह की पहल बस्तर के युवाओं को नई दिशा देंगी और उन्हें अपने सपनों को साकार करने के लिए प्रेरित करेंगी। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि सचिन तेंदुलकर द्वारा बच्चों के बीच जाकर समय बिताना, उन्हें खेलों के प्रति प्रेरित करना और उनके भीतर आत्मविश्वास का संचार करना इस अभियान को और अधिक प्रभावशाली बनाता है। इससे न केवल खेल प्रतिभाओं को निखरने का अवसर मिलेगा, बल्कि युवाओं में अनुशासन, टीम भावना और सकारात्मक ऊर्जा का भी संचार होगा।

छात्र जीवन में अनुशासन एवं कड़ी मेहनत सर्वाधिक जरूरी : सचिन

छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा जिले का स्वामी आत्मानंद हिन्दी मिडियम हाई स्कूल छिंदनार गाँव बुधवार को एक ऐतिहासिक बदलाव का साक्षी बना, जहाँ क्रिकेट जगत के दिग्गज सचिन तेंदुलकर ने सचिन तेंदुलकर एवं मानदेशी फाउंडेशन द्वारा निर्मित मल्टी-स्पोर्ट्स ग्राउंड का उद्घाटन किया। इस महत्वपूर्ण अवसर पर मानदेशी फाउंडेशन की फाउंडर चेतना सिन्हा भी सचिन के साथ मौजूद रहीं, जो इस क्षेत्र में बुनियादी विकास और महिला सशक्तिकरण की दिशा में मिलकर कार्य कर रही हैं। कार्यक्रम में तेंदुलकर परिवार की विशेष उपस्थिति रही।

कार्यक्रम की शुरुआत में सचिन, सारा और सोनिया ने विभिन्न खेल गतिविधियों में उत्साहपूर्वक भाग लेकर बच्चों का मनोबल बढ़ाया। उन्होंने न केवल बच्चों को खेलों के प्रति प्रेरित किया, बल्कि स्वयं भी उनके साथ शामिल होकर एक सकारात्मक वातावरण तैयार किया। कार्यक्रम के दौरान रस्साकशी, वॉलीबॉल, दौड़ और खो-खो जैसे रोचक खेल आयोजित किए गए, जिनमें बच्चों ने पूरे जोश और उमंग के साथ हिस्सा लिया। इन गतिविधियों से बच्चों में टीम भावना, आत्मविश्वास और खेल भावना का विकास हुआ। साथ ही, सचिन, सारा और सोनिया के सहयोग से बच्चों को प्रोत्साहन मिला और वे नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित हुए। उल्लेखनीय है कि छिंदनार के गांव के ही छात्र छात्राएं भूमिका ठाकुर, नियासा मौर्य, निर्मला तरमा, पायल ठाकुर, सीताराम पुनर्म, अमित कुमार द्वारा श्री सचिन तेंदुलकर को खेल गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। मैदान के उद्घाटन के पश्चात सचिन तेंदुलकर ने देश की युवा प्रतिभाओं को तराशने की दिशा में अपनी प्रतिबद्धता दोहराते हुए कहा कि भविष्य के चैंपियन तैयार करने के लिए केवल व्यक्तिगत जुनून पर्याप्त नहीं है, बल्कि जमीनी स्तर पर आधुनिक और सुदृढ़ खेल सुविधाओं का होना अनिवार्य है। इस दौरान सचिन ने खुद को केवल क्रिकेट पिच तक सीमित न रखते हुए वॉलीबॉल और अन्य मैदानी खेलों के महत्व पर भी चर्चा की। उन्होंने बच्चों को प्रेरित करते हुए बताया कि विभिन्न खेलों में भागीदारी करने से खिलाड़ियों की रणनीतिक समझ और मानसिक परिपक्वता बढ़ती है।

इस मौके पर श्री तेंदुलकर ने अपने जीवन में पिता की भूमिका का भी स्मरण किया। उन्होंने छात्रों से आग्रह किया कि खेल के साथ-साथ पढ़ाई में भी संतुलन

बना कर चले। इसके अलावा तेंदुलकर ने कहा कि सचिन तेंदुलकर फाउंडेशन के प्रारंभ होने में उनकी पत्नी अंजली का सर्वाधिक योगदान है। और अब उनकी पुत्री सारा, पुत्र अर्जुन, तथा बहु सानिया भी उसी नक्शे कदम पर चलकर फाउंडेशन कार्य को आगे बढ़ा रही हैं। अंत में उन्होंने कहा कि आज आपके बीच मुझे उपस्थित रहकर आपसे भी ज्यादा खुशी का अहसास हो रहा है इस दौरान बच्चों के द्वारा सचिन तेंदुलकर के आगामी जन्म दिवस को देखते हुए अग्रिम केक काटा गया। जिसके लिए सचिन तेंदुलकर ने बच्चों को धन्यवाद दिया। ज्ञात हो कि इस दौरान पूरा कार्यक्रम स्थल ''जन्म दिवस मुबारक हो'' के नारों से गूंज उठा।

इसके साथ ही कार्यक्रम के समापन पर कलेक्टर द्वारा श्री तेंदुलकर को स्मृति चिन्ह के रूप में टेराकोटा शिल्प एवं छिंदनार के ग्राम वासियों द्वारा लौह शिल्प की कलाकृतियां दी गई। इसके अलावा कार्यक्रम मानदेशी फाउंडेशन द्वारा विभिन्न खेल जैसे रस्साकस्सी, बालिवाल, कबड्डी, दौड़ के विजेता प्रतिभागियों को सचिन तेंदुलकर के हाथों मोमेन्टो प्रदान किया। इस अवसर पर कमिश्नर बस्तर डोमन सिंह, आईजी बस्तर सुंदरराज पी, पुलिस अधीक्षक गौरव राय, जिला पंचायत सीईओ जयंत नाहटा, डीएफओ रामकृष्ण रगंनाथा वाय, सहित जनप्रतिनिधि, सचिन एवं माणदेशी फाउंडेशन के कार्यकर्ता भी उपस्थित थे।

भारत को कबड्डी विश्वकप और एशियन चैंपियन बनाने वाली संजू देवी 50 लाख की प्रोत्साहन राशि से सम्मानित

रायपुर। भारत को कबड्डी विश्वकप और एशियन चैंपियनशिप दिलाने में अहम भूमिका निभाने वाली संजू देवी को राज्य शासन के खेल एवं युवा कल्याण विभाग द्वारा 50 लाख रुपए की प्रोत्साहन राशि प्रदान की गई है। छत्तीसगढ़ में पहली बार किसी खिलाड़ी को इतनी बड़ी प्रोत्साहन राशि दी गई है। उप मुख्यमंत्री तथा खेल एवं युवा कल्याण मंत्री अरुण साव ने पिछले दिनों नवा रायपुर स्थित अपने निवास कार्यालय में आयोजित सम्मान समारोह में उन्हें यह राशि सौंपी। श्री साव ने इस दौरान बिलासपुर के चिंगराजपारा कबड्डी क्लब को कबड्डी मैट भी प्रदान किया। संजू देवी को उनके शानदार खेल की वजह से पिछले साल नवम्बर में बांग्लादेश में आयोजित कबड्डी विश्वकप मंर मोस्ट वेल्युबल प्लेयर चुना गया था। कबड्डी विश्वकप के फाइनल में भारत को मिले 35 प्वाइंट्स में से 16 प्वाइंट्स अकेले संजू ने दिलाए थे। सेमी-फाइनल सहित अन्य मैचों में भी उन्होंने अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन से भारत को चैंपियन बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

संजू अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश का प्रतिनिधित्व करने वाली राज्य की पहली कबड्डी खिलाड़ी है। कबड्डी विश्व कप के साथ ही उन्होंने पिछले साल मार्च में ईरान में आयोजित एशियन कबड्डी चैम्पियनशिप में भी भारत का प्रतिनिधित्व किया था और भारत को चैंपियन बनाने में अहम भूमिका निभाई थी। कोरबा के छोटे से गांव केराकछार की श्रमिक दंपति की संतान 23 साल की संजू राज्य शासन के खेल एवं युवा कल्याण विभाग द्वारा संचालित बिलासपुर के बहतराई आवासीय बालिका कबड्डी अकादमी में जुलाई-2023 से प्रशिक्षण ले रही है।

उप मुख्यमंत्री अरुण साव ने संजू देवी को सम्मानित करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के मार्गदर्शन में राज्य में लगातार खेल और खिलाड़ियों की तरक्की व बेहतरी के लिए काम हो रहे हैं। संजू देवी ने अपने बेहतरीन खेल की बदौलत बड़ी उपलब्धियां हासिल की हैं। उन्होंने अपने उत्कृष्ट खेल से देश को दो-दो अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में स्वर्ण पदक दिलाया है और अपने खेल कौशल से मोस्ट वेल्युबल प्लेयर बनी हैं। छत्तीसगढ़ की बेटी का यह प्रदर्शन राज्य का मान-सम्मान और गौरव बढ़ाने वाला है। उन्होंने संजू देवी को शुभकामनाएं देते हुए उम्मीद जताई कि वे आने वाले समय में भी इसी तरह हमारे राज्य और देश का नाम रोशन करती रहेंगी।

श्रीनगर में खेल चिंतन शिविर में खेल मंत्री अरुण साव ने लिया हिस्सा

रायपुर। श्रीनगर के प्रतिष्ठित शेर-ऐ- कश्मीर- इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस सेंटर में पिछले दिनों आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय खेल चिंतन शिविर ने भारत के खेल भविष्य को नई दिशा देने का संकल्प मजबूत किया है। केंद्रीय युवा कार्य और खेल मंत्रालय द्वारा आयोजित इस महत्वपूर्ण पहल में देशभर के राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के खेल मंत्रियों, वरिष्ठ अधिकारियों और विशेषज्ञों ने भाग लिया। इस आयोजन की अगुवाई केंद्रीय मंत्री मनसुख मंदाविया तथा राज्य मंत्री रक्षा निखिल खडसे ने की, जबकि छत्तीसगढ़ का प्रतिनिधित्व उप मुख्यमंत्री एवं खेल मंत्री अरुण साव ने किया।

खेल विकास पर गंभीर मंथन : शिविर में मेडल स्ट्रेटजी- खेलो इंडिया पर गहन चर्चा हुई। इसका मुख्य उद्देश्य देश में खेल प्रतिभाओं को पहचानकर उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए तैयार करना है। वर्ष 2048 तक भारत को ओलंपिक पदक तालिका में शीर्ष 5 देशों में शामिल करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य भी सामने रखा गया। उप मुख्यमंत्री अरुण साव ने कहा कि छत्तीसगढ़ खेलों के समग्र विकास के लिए प्रतिबद्ध है और राज्य देश के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ेगा। उनका लक्ष्य है कि राज्य के हर गांव और शहर से खिलाड़ी निकलकर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी पहचान बनाएं। दो दिवसीय यह चिंतन शिविर भारत को खेल महाशक्ति बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। नीति निर्माण से लेकर जमीनी स्तर पर क्रियान्वयन तक, यह मंच देश के खेल इकोसिस्टम को मजबूत करने का एक व्यापक प्रयास है।

खेल और करियर के बीच संतुलन : शिविर में यह महत्वपूर्ण संदेश भी दिया गया कि खिलाड़ी केवल नौकरी पाने के उद्देश्य से नहीं, बल्कि देश के लिए पदक जीतने के लक्ष्य के साथ खेलें। साथ ही एक ऐसा मॉडल विकसित करने पर जोर दिया गया, जिससे खिलाड़ी नौकरी मिलने के बाद भी अपना खेल जारी रख सकें।

ग्रामीण भारत में खेल क्रांति : ग्रामीण क्षेत्रों में खेल संस्कृति को मजबूत करने, बुनियादी सुविधाओं के विस्तार और बच्चों को खेलों के लिए अधिक समय देने पर विशेष बल दिया गया। विशेषज्ञों की मदद से आधुनिक खेल अधोसंरचना विकसित करने की आवश्यकता भी रेखांकित की गई।

डोपिंग और खेल नैतिकता पर सख्ती : तीसरे सत्र में डोपिंग और खेल नैतिकता जैसे संवेदनशील विषयों पर गंभीर चर्चा हुई। प्रतिबंधित दवाइयों के उपयोग को रोकने के लिए कड़े नियम बनाने और डोपिंग को अपराध की श्रेणी में लाने की दिशा में सख्त नीति दोहराई गई।

खेल मंत्री अरुण साव ने गोंडवाना कप टेनिस के विजेताओं को किया पुरस्कृत

रायपुर। उप मुख्यमंत्री तथा खेल एवं युवा कल्याण मंत्री अरुण साव पिछले दिनों रायपुर के जोरा स्थित इंटरनेशनल टेनिस स्टेडियम में आयोजित गोंडवाना कप ऑल इंडिया टेनिस टूर्नामेंट-2026 के समापन समारोह में शामिल हुए। उन्होंने मिश्रित और एकल के विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कार प्रदान किए। उप मुख्यमंत्री साव ने खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ में गोंडवाना कप का आयोजन अनेक वर्षों से हो रहा है। प्रदेश में लगातार खेल प्रतियोगिताएं होने से खिलाड़ियों को बेहतर अवसर मिलता है और अच्छे खिलाड़ी निकल कर आते हैं। टूर्नामेंट में 20 राज्यों के 120 खिलाड़ियों का भाग लेना इसकी सफलता को बताता है।

इन विजेता खिलाड़ियों को प्रदान की ट्रॉफी : महिला डबल्स के फाइनल मुकाबले में शताक्षी चौधरी और अनन्या जैन (उत्तर प्रदेश) की जोड़ी ने स्निग्धा पाटिबंडला और इरम जैदी को 3-6, 6-3, 10-7 से हराकर खिताब जीता। वहीं पुरुष डबल्स में निरव शेट्टी और अनुप बंगार्गी (महाराष्ट्र) की जोड़ी ने प्रसाद इंगाले और परितोष पवार को 6-2, 6-4 से हराया। वहीं महिला एकल में राजस्थान की आयुषी तनवार ने उत्तरप्रदेश की शताक्षी चौधरी को 2-6, 6-2, 6-2 से हराकर खिताब अपने नाम किया। पुरुष एकल में तेलंगाना के नैशिक रेड्डी गनागामा ने महाराष्ट्र के प्रसाद इंगाले को 7-6 (7-4), 6-3 से हराकर विजेता बने। उप मुख्यमंत्री श्री साव ने सभी विजेता खिलाड़ियों को ट्रॉफी प्रदान की। समापन समारोह में एआईटीए (AITA) के महासचिव अनिल धुपर, स्टेट टेनिस एसोसिएशन के अध्यक्ष और हरिभूमि के प्रधान संपादक डॉ. हिमांशु द्विवेदी, गुरुचरण सिंह होरा, उपाध्यक्ष नरेश गुप्ता और आशीष सराफ सहित बड़ी संख्या में खिलाड़ी एवं खेलप्रेमी मौजूद थे।

बैडमिंटन संघ की वार्षिक साधारण सभा सम्पन्न

रायपुर। विगत दिनों छत्तीसगढ़ बैडमिंटन संघ की वार्षिक साधारण सभा सम्पन्न हुई। जिसमें वर्ष 2026-27 की बैडमिंटन स्पर्धाओं के तिथि की घोषणा की गई। जिसके अनुसार - जूनियर राज्य बैडमिंटन स्पर्धा (19 वर्ष आयु समूह) 9 से 13 अगस्त तक राजनांदगांव में, सीनियर राज्य बैडमिंटन स्पर्धा 1 से 5 जुलाई तक बिलासपुर में, द्वितीय जूनियर राज्य बैडमिंटन स्पर्धा (19 वर्ष आयु समूह) दिनांक 15 से 19 सितंबर तक नैला जांजगीर में,मिनी जूनियर राज्य बैडमिंटन स्पर्धा (11 व 13 वर्ष आयु समूह) दिनांक 3 से 7 अक्टूबर तक रायपुर में, सब जूनियर राज्य बैडमिंटन स्पर्धा (15 व 17 वर्ष आयु समूह) दिनांक 11 से 16 नवंबर तक रायगढ़ में, द्वितीय सीनियर राज्य बैडमिंटन स्पर्धा दिनांक 30 नवंबर से 4 दिसंबर तक जगदलपुर में तथा वेटरन राज्य बैडमिंटन स्पर्धा दिनांक 3 से 7 फरवरी तक सूरजपुर में आयोजित की जाएगी। इसके अतिरिक्त पश्चिम क्षेत्रीय अंतरराज्यीय बैडमिंटन स्पर्धा की मेजबानी छत्तीसगढ़ को प्राप्त हुई है। जिसका आयोजन सितंबर माह रायपुर में किया जायेगा। साथ ही राज्य के बैडमिंटन इतिहास में प्रथम बार आधिकारिक राष्ट्रीय बैडमिंटन स्पर्धा (11 वर्ष आयु समूह) की मेजबानी छत्तीसगढ़ को प्राप्त हुई है। जिसका आयोजन 24 से 27 नवंबर तक रायपुर में किया जायेगा।

छत्तीसगढ़ के सात युवा क्रिकेटरों का एनसीए कैंप में चयन

रायपुर। छत्तीसगढ़ के खेल इतिहास में एक और गौरवशाली अध्याय जुड़ गया है। ऑल इंडिया जूनियर सिलेक्शन कमेटी द्वारा छत्तीसगढ़ राज्य क्रिकेट संघ के 7 होनहार खिलाड़ियों का चयन -16 और -19 (मेंस एवं गर्ल्स) एलीट कैंप तथा हाई-परफॉर्मेंस कैंप के लिए किया गया है, जिसका आयोजन नेशनल क्रिकेट एकेडमी द्वारा किया जा रहा है। यह उपलब्धि न केवल खिलाड़ियों की कड़ी मेहनत और प्रतिभा का परिणाम है, बल्कि छत्तीसगढ़ में क्रिकेट के बढ़ते स्तर और मजबूत खेल संरचना का भी प्रमाण है।

चयनित खिलाड़ियों की सूची : 1. अर्शवीर सिंह भाटिया (बेंगलुरु) 2. प्रतीक गंधर्व (देहरादून) 3. अरहम नाहर (अनंतपुर) 4. रुद्र प्रताप देहरी (राजकोट) 5. बी. बालाजी राव (नडियाद) 6. रोहित यादव (मोहाली) 7. महक नरवसे (बेंगलुरु)।

इन खिलाड़ियों को अब देश के सर्वश्रेष्ठ कोचों और विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में उन्नत तकनीकी और शारीरिक प्रशिक्षण प्राप्त होगा। बीसीसीआई के अनुभवी प्रशिक्षकों द्वारा दिया जाने वाला यह प्रशिक्षण खिलाड़ियों के कौशल, फिटनेस और मानसिक मजबूती को नई ऊँचाइयों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।यह चयन इस बात का स्पष्ट संकेत है कि छत्तीसगढ़ अब भारतीय क्रिकेट के मानचित्र पर तेजी से अपनी मजबूत पहचान बना रहा है। छोटे शहरों और उभरते क्रिकेट केंद्रों से निकलकर ये खिलाड़ी अब राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने के लिए तैयार हैं। छत्तीसगढ़ राज्य क्रिकेट संघ ने सभी चयनित खिलाड़ियों को इस शानदार उपलब्धि के लिए हार्दिक बधाई देते हुए उन्हें अपने खेल में और आगे बढ़ने की बात कही है।

अमय खुरासिया की पुस्तक '74 वर्ष बाद' को दिग्गजों ने भी सराहा

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने पिछले दिनों भोपाल के समत्व भवन, मुख्यमंत्री निवास में क्रिकेटर और केरल के कोच अमय खुरासिया द्वारा लिखित हिन्दी पुस्तक '74 वर्ष बाद' का विमोचन किया। इस अवसर पर उनकी बेटी और पुस्तक की सह-लेखिका अमयसी कीर्ति खुरासिया भी मौजूद रहीं। मुख्यमंत्री ने अमय खुरासिया और सह-लेखिका अमयसी कीर्ति को इस उपलब्धि पर बधाई दी। खास बात यह है कि यह पुस्तक अंग्रेजी भाषा में भी उपलब्ध है, जिससे यह और व्यापक पाठकों तक पहुंच सकेगी। इस पुस्तक को लेकर भारतीय क्रिकेट के पूर्व कप्तान अनिल कुंबले, राहुल द्रविड़, वीवीएस लक्ष्मण, संजय बांगर, श्रीलंका के पूर्व कप्तान दिलीप मेंडिस, बीसीसीआई के पूर्व सचिव संजय जगदाले और प्रसिद्ध अभिनेता मोहनलाल जैसे दिग्गजों ने भी प्रशंसा की हैं। यह पुस्तक भगवान श्रीकृष्ण द्वारा गीता में दिए गए उपदेशों और युद्ध नीतियों की वर्तमान दौर में उपयोगिता पर आधारित है। अमय खुरासिया ने कोच के रूप में इन सिद्धांतों को अपनाते हुए क्रिकेट टीम की रणनीति तैयार की, जिसका सकारात्मक असर भी देखने को मिला। उनके मार्गदर्शन में केरल टीम ने रणजी ट्रॉफी के 74 साल के इतिहास में पहली बार फाइनल तक का सफर तय किया। इसके अलावा दिलीप ट्रॉफी जैसे प्रतिष्ठित टूर्नामेंट में पहली बार केरल के छह खिलाड़ियों का एक साथ चयन हुआ।

यह पुस्तक क्रिकेट में युद्धनीति का महत्व बताती है : मालवा की माटी से निकलकर एक प्रतिभाशाली पूर्व क्रिकेटर अमय खुरासिया किस तरह इंदौर से 1800 किलोमीटर दूर जाकर केरल की. टीम को सुगठित-संतुलित-ताकतवर बनाते हैं। वहां के खिलाड़ियों को तराशते हैं और उनमें पसीना बहाकर फिट और हर चुनौती से लड़ने की क्षमता और कुशलता पैदा करते हैं। यह किताब इन्हीं संघर्षों की एक बेहतर मिसाल है। पूर्व क्रिकेटर और केरल टीम के कोच अमय खुरासिया की यह किताब '74 वर्ष बाद रणजी में केरल क्रिकेट टीम का पुनरुत्थान' छोटे-छोटे 54 अध्यायों में बंटी है। हर अध्यायों में भावों के साथ अमयासीकीर्ति की अर्थवान कविताएं यह साबित करती हैं कि क्रिकेट मैदान में सिर्फ रन और विकेट ही निर्णायक नहीं होते बल्कि हर संघर्ष रणनीतिक कुशलता का परिमाप होता है। रणनीतिक कुशलता बेहतर युद्ध नीति से हासिल होती है। पुस्तक श्रीकृष्ण के दिए उपदेश और युद्धनीति की वर्तमान दौर में उपयोगिता पर आधारित है।

अमय ने सरल-सहज भाषा में अपने विचारों को ऐसे अभिव्यक्त किया है

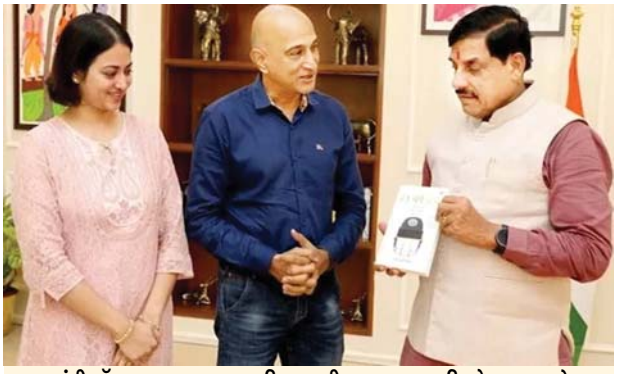

मुख्यमंत्री डॉ. यादव अमय खुरासिया की पुस्तक का विमोचन करते हुए।

कि एक तरफ केरल टीम को मुकाम पर पहुंचाने के लिए वे कागज़ पर योजना बनाकर उसे अपने अनुभव, क्रिकेटीय सोच, रणनीति से कैसे तराशते हैं और फिर हर परिस्थिति में बेहतर खेल दिखाकर अपनी प्रतिभा से चौंका देते हैं। इसमें भाषा रुकावट नहीं बनी। उन्होंने खिलाड़ियों में आशा का दीपक जलाकर उनके लिए राह मजबूत बना दी। उन्होंने टीम को बताया अच्छे होने से ज्यादा जरूरी है कि एक टीम के रूप में कैसे हैं। तीन तीन घंटे नेट प्रैक्टिस कराई और समय के पाबंद खिलाड़ियों ने इसे गंभीरता से लिया। जो कम नेट प्रैक्टिस करते थे उन पर ध्यान दिया। टीम के पीछे के खिलाड़ियों को भी प्रशिक्षित किया और विश्वास पैदा किया कि हर बल्लेबाज शतक बना सके। यही नहीं उन्हें ऑलराउंडर बनाने की कोशिशें की। टाइम मैनेजमेंट के साथ ही उनमें आग पैदा की कि आपके लिए सब संभव है। इसी मंत्र के कारण केरल की टीम पंजाब के खिलाफ बढ़त गंवाने के बाद भी मैच जीत गई। मध्यप्रदेश के खिलाफ 10 खिलाड़ियों के दम पर जीत हासिल की।

केरल की टीम जब क्वार्टरफाइनल में पहुंची तो उसका मुकाबला जम्मू कश्मीर से था और बेहतरीन बल्लेबाजी के बदौलत मैच जीत लिया। गुजरात को हराने के बाद केरल की टीम 74 साल बाद रणजी के फाइनल में पहुंची, लेकिन फाइनल नहीं जीत सकी, इतना जरूरी हुआ कि अमय ने इन खिलाड़ियों में आशा, विश्वास, धैर्य और आत्मबोध पैदा कर दिया जो किसी भी जीत से ज्यादा मायने रखता है।

ऑल इंडिया टैलेंट जूनियर टेनिस टूर्नामेंट में दीविना और शांभवी युगल विजेता

इंदौर। ऑल इंडिया टैलेंट सीरीज जूनियर टेनिस टूर्नामेंट में मध्यप्रदेश के खिलाड़ियों का दबदबा देखने को मिला। ओजस मिश्रा और लावण्या शर्मा ने शानदार खेल का प्रदर्शन करते हुए क्रमशः बालक और बालिका एकल खिताब अपने नाम किए। आईटीसी टेनिस कोर्ट पर खेले गए फाइनल मुकाबलों में ओजस ने कड़ा संघर्ष करते हुए अद्वीथ भार्गव को 2-6, 7-6 (1), 6-2 से हराया। वहीं लावण्या ने एकतरफा मुकाबले में गुजरात की आरना खत्री को 6-1, 6-3 से पराजित किया। युगल मुकाबलों में भी रोमांच देखने को मिला। बालक युगल में ओजस मिश्रा और अद्वीथ भार्गव की जोड़ी ने रेयांश पटेल-अयांश संवत्सर को 6-4, 6-3 से हराया। बालिका युगल में दीविना धूपर और शांभवी सिंह ने वापसी करते हुए आरना खत्री-प्रिशा शर्मा को 2-6, 6-1, 10-6 से मात दी। विजेताओं को गोपाल अग्रवाल, गोपाल मारवाल और अर्जुन धूपर ने पुरस्कृत किया। इस मौके पर इरफान अहमद भी मौजूद थे।

इंटर स्कूल तैराकी स्पर्धा में 500 से ज्यादा युवा तैराकों ने दिखाया दम

इंदौर। नव्या शर्मा, माही जोशी, देवांश कौशल और केशव चोइथानी ने प्रभावी प्रदर्शन करते हुए लीलादेवी अग्रवाल स्मृति इंटर स्कूल तैराकी स्पर्धा में अपने-अपने वर्गों में सफलता हासिल की। नव्या और माही ने एक से ज्यादा स्पर्धाओं में जीत दर्ज कर अपनी बहुमुखी प्रतिभा दिखाई। गोल्डन इंटरनेशनल स्कूल में खेली गई स्पर्धा के 50 मीटर बटरफ्लाई तैराकी के अंडर-11 बालिका वर्ग में नव्या शर्मा ने पहला, अनिका गुप्ता ने दूसरा और म्हालसा टोंडे ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। अंडर-15 वर्ग में माही जोशी पहले, दृष्टि पंवार दूसरे और दक्षिता कराडिया तीसरे स्थान पर रहीं। अंडर-11 बालक वर्ग में देवांश कौशल पहले, दिव्यांश कौशल दूसरे और रुद्राक्ष शर्मा तीसरे स्थान पर रहे। 15 वर्ष वर्ग में पहले स्थान पर केशव चोइथानी, दूसरे पर हर्षिल तंवीर और तीसरे स्थान पर शब्बीर ठेलीवाला रहे। 50 मीटर बैकस्ट्रोक स्पर्धा के अंडर-11 बालिका वर्ग में नव्या शर्मा ने पहला, ध्रुविका चिंतामन ने दूसरा और अनिका गुप्ता ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। बालक वर्ग में दिव्यांश कौशल पहले, युवराज दीवान दूसरे और मल्हार रुड़कर तीसरे स्थान पर रहे।

स्नेहा ने बॉक्सिंग में जीता कांस्य पदक

इंदौर। शहर की स्नेहा वर्मा ने मध्य प्रदेश की ओर से खेलते हुए नेशनल बॉक्सिंग चैंपियनशिप में शानदार प्रदर्शन किया है। महाराष्ट्र के नागपुर में 4 से 11 अप्रैल तक आयोजित इस प्रतियोगिता में स्नेहा ने जूनियर 70-75 किलोग्राम वेट कैटेगरी में हिस्सा लिया। कड़े मुकाबलों के बीच स्नेहा वर्मा ने बेहतरीन खेल दिखाते हुए ब्रॉन्ज मेडल अपने नाम किया और मध्य प्रदेश का नाम रोशन किया। उनके प्रदर्शन की खेल जगत में सराहना की जा रही है।

मृदुल को टेबल टेनिस में दोहरा खिताब

इंदौर। इंदौर जिला टेबल टेनिस संगठन के तत्वावधान में आयोजित सत्र की पहली जिला रैंकिंग टेबल टेनिस स्पर्धा में खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन किया। मृदुल पुरोहित ने अंडर-15 और अंडर-17 दोनों वर्गों में खिताब जीतकर दोहरी सफलता हासिल की। वहीं बालिका वर्ग में अंडर-15 में सिद्धिक्षा जैन और अंडर-17 में नेहल नाहर विजेता रहीं। खेल प्रशाल में खेले गए फाइनल मुकाबलों में मृदुल ने अंडर-15 वर्ग में मित मिमरोट को 3-0 से हराया, जबकि अंडर-17 में साकार भार्गव को 3-1 से मात दी। बालिका अंडर-15 में सिद्धिक्षा जैन ने सान्वी सिंघल को 3-1 से और अंडर-17 में नेहल नाहर ने आरवी जैन को 3-1 से हराकर खिताब अपने नाम किया।

बास्केटबॉल कोर्ट पर खिलाड़ियों का दमदार प्रदर्शन

इंदौर। सत्य साईं स्कूल ने शानदार प्रदर्शन करते हुए डॉ. आरएस बडगरा मेमोरियल बास्केटबॉल स्पर्धा का खिताब अपने नाम किया। जीडी गोयंका स्कूल में खेली गई स्पर्धा के फाइनल में सत्य साईं ने मेजबान स्कूल को 28-22 से पराजित किया। एमरल्ड हाइट्स तीसरे स्थान पर रहा। सेमीफाइनल में सत्य साईं ने एमरल्ड वर्ल्ड को 28-7 और जीडो गोयंका ने एमरल्ड हाइट्स को 34-32 से मात दी। विजेता टीम को मनोज धनोतिया और स्कूल चेयरमैन देवराज सिंह बड़गरा ने पुरस्कृत किया।

जीडीसीए में बड़ा बदलाव, संग्राम सिंह अध्यक्ष, विजय प्रकाश बने सचिव

ग्वालियर। लगभग 32 वर्ष ग्वालियर डिवीजन क्रिकेट एसोसिएशन जीडीसीए के प्रमुख रहे और ग्वालियर में क्रिकेट प्रेमियों के हर दिल अजीज रहे प्रशांत मेहता अब जीडीसीए के अध्यक्ष नहीं रहेंगे। पिछले दिनों अचानक कै. रूप सिंह स्टेडियम पर आहुत की गई बैठक में महाआर्यमन सिंधिया ने अध्यक्ष प्रशांत मेहता सहित सचिव संजय आहूजा व अन्य सभी पदाधिकारियों को बदल दिया। प्रशांत मेहता की जगह महाआर्यमन सिंधिया ने संग्राम सिंह कदम को नया अध्यक्ष बनवाया है। नये सचिव विजय प्रकाश शर्मा बेटू होंगे।

सचिव बनाए गए विजयप्रकाश शर्मा लगातार तीसरी बार महत्वपूर्ण भूमिका में आए हैं। उन्हें पिछले वर्ष एमपीसीए और एमपीएल में सदस्य बनाया गया था। संग्राम कदम भी एमपीएल में सदस्य हैं। अब दोनों को जीडीसीए में बड़ी जिम्मेदारी मिलने के बाद एमपीएल में उनके स्थान पर नए सदस्यों की नियुक्ति संभावित मानी जा रही है। नव-मनोनीत अध्यक्ष संग्राम कदम ने कहा कि महानआर्यमन जी ने जिस भरोसे के साथ मुझे जिम्मेदारी दी है, उसे पूरी निष्ठा से निभाऊंगा। वहीं सचिव विजयप्रकाश शर्मा ने बताया कि उनकी कोशिश रहेगी कि ग्वालियर में अधिक से अधिक क्रिकेट गतिविधियां हों और क्लब क्रिकेट को बढ़ावा मिले।

जीडीसीए की नई कार्यकारिणी की सूची : जीडीसीए की नई टीम में संग्राम कदम को अध्यक्ष, विजय प्रकाश शर्मा 'बेटू' को सचिव, निर्भय बाकलीवाल च्झब्बूज को उपाध्यक्ष और विकास गंगवाल को कोषाध्यक्ष नियुक्त किया गया है। संजय सांखला (शिवपुरी) संयुक्त सचिव और बीके शर्मा चेयरमैन ऑफ सिलेक्टर्स बनाए गए हैं। कार्यकारिणी सदस्यों में रमेश अग्रवाल, अंकुर मोदी, डॉ. पुनीत रस्तोगी, अनंत पुरोहित, रामाधर चौबे और सुनील गुप्ता शामिल हैं।

ग्वालियर की वैदेही शिंदे ने 15 साल बाद मप्र के पदक का सूखा किया खत्म

ग्वालियर। नई दिल्ली के त्यागराज स्टेडियम में 16 से 22 अप्रैल तक आयोजित 69वीं नेशनल स्कूल गेम्स की अंडर-14 व 17 टेनिस समापन हुआ। ग्वालियर की प्रतियोगिता का बुधवार को वैदेही शिंदे ने अंडर-14 में गुजरात की हर्षा देशपांडे को हराकर कांस्य पदक जीता और 15 साल बाद मप्र को पदक दिलाया। 40 डिग्री से अधिक गर्मी में उन्होंने सवा घंटे में मुकाबला जीता। इससे पहले हिना (चंडीगढ़), आध्या (राजस्थान) व गीता पांडा (महाराष्ट्र) को हराया, जबकि सेमीफाइनल में सातवीं मरदनिया से हारीं। प्रतियोगिता में 128 128 खिलाड़ी शामिल हुए। टेनिस एसोसिएशन के मुताबिक एसजीएफआई की इस प्रतियोगिता में डेढ़ दशक पहले बालक वर्ग में मप्र ने पदक जीता था। जीसीटीए की प्लेयर वैदेही की उपलब्धि पर मप्र टेनिस एसोसिएशन के अध्यक्ष अनील महाजन, सचिव अनिल धूपर, वरिष्ठ कोच इरफान खान, ग्वालियर चंबल टेनिस एसोसिएशन के सचिव एवं विक्रम अवार्डी अनुराग ठाकुर, चीफ कोच विकास पांडे ने खुशी जाहिर की है।

इंदौर ने जीता राज्य स्तरीय शूटिंग बाल खिताब

भोपाल। तात्या टोपे स्टेडियम में 25 एवं 26 अप्रैल 2026 को आयोजित दो दिवसीय राज्य स्तरीय शूटिंग बॉल चैंपियनशिप का भव्य समापन हुआ। समापन समारोह में दक्षिण-पश्चिम विधानसभा क्षेत्र के विधायक भगवान दास सबनानी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे और उन्होंने विजेता एवं उपविजेता टीमों को ट्रॉफी, प्रमाण पत्र एवं नगद पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया। प्रतियोगिता का फाइनल मुकाबला इंदौर और नगर निगम भोपाल की टीम के बीच खेला गया, जिसमें इंदौर की टीम ने 21-17 अंकों से शानदार जीत दर्ज कर खिताब अपने नाम किया। नगर निगम भोपाल की टीम उपविजेता रही। टूर्नामेंट में च्हीरो ऑफ द टूर्नामेंटज्ज का खिताब नगर निगम भोपाल के अमित बघेल को प्रदान किया गया, जबकि च्च्बेस्ट शूटरज्ज का पुरस्कार इंदौर टीम के सिकंदर को मिला। इस अवसर पर भोपाल शूटिंग बॉल एसोसिएशन के अध्यक्ष राधेश्याम भार्गव, संरक्षक सुबोध श्रीवास्तव, विक्रम अवार्ड से सम्मानित हेमलता छतवानी, कोषाध्यक्ष हिमांशी चौबे, अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी रमेश तिवारी एवं भानु भारद्वाज सहित आयोजन समिति के महासचिव रोहित सिंह उपस्थित रहे। सभी अतिथियों ने खिलाड़ियों और दर्शकों को प्रतियोगिता की सफलता पर बधाई दी।

जू-जित्सु : 8 गोल्ड के साथ शाकुंभरी यूनिवर्सिटी ओवरऑल चैंपियन, एलएनसीटी ने जीते 6 पदक

भोपाल। एलएनसीटी यूनिवर्सिटी में आयोजित पांच दिवसीय ऑल इंडिया इंटर यूनिवर्सिटी जू-जित्सु प्रतियोगिता का समापन शानदार मुकाबलों के साथ हुआ। प्रतियोगिता में मां शाकुंभरी यूनिवर्सिटी, सहारनपुर ने बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए ओवरऑल चैंपियनशिप का खिताब अपने नाम किया। टीम ने 8 स्वर्ण, 2 रजत और 8 कांस्य सहित कुल 18 पदक जीतकर शीर्ष स्थान हासिल किया। पदक तालिका में कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल ने 7 स्वर्ण, 5 रजत और 1 कांस्य के साथ दूसरा स्थान प्राप्त किया, जबकि राजीव गांधी विश्वविद्यालय (आरजीयू) 6 स्वर्ण और 1 कांस्य पदक के साथ तीसरे स्थान पर रहा। प्रतियोगिता में देशभर के विभिन्न विश्वविद्यालयों के खिलाड़ियों ने भाग लिया, जहां ने-वाजा, फाइटिंग सिस्टम, फुल कॉन्टैक्ट, डुओ शो और मिक्स स्पर्धाओं में रोमांचक और कड़े मुकाबले देखने को मिले। मेजबान एलएनसीटी यूनिवर्सिटी, के खिलाड़ियों ने 3 रजत और 3 कांस्य पदक जीते। खिलाड़ियों के प्रदर्शन ने दर्शकों और आयोजकों का ध्यान आकर्षित किया। व्यक्तिगत पुरस्कारों में महिला वर्ग का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी अवॉर्ड स्कोप ग्लोबल यूनिवर्सिटी की लावण्या को दिया गया, जबकि पुरुष वर्ग में इसी विश्वविद्यालय के निवेदन सिंह गुर्जर को सम्मानित किया गया। समापन समारोह में जू-जित्सु फेडरेशन ऑफ इंडिया के प्रेसिडेंट डॉ. विनय जोशी सिंह, जनरल सेक्रेटरी अमित अरोड़ा, पंकज जैन आदि ने विजेता टीमों को ट्रॉफी और पदक प्रदान किए।

एथलेटिक्स में रंजना ने बनाया नेशनल रिकॉर्ड

भोपाल। तुमकुर (कर्नाटक) में 24वीं नेशनल जूनियर फेडरेशन एथलेटिक्स प्रतियोगिता में भोपाल की एथलीट रंजना यादव ने दमदार प्रदर्शन करते हुए जूनियर महिला 5000 मीटर रेस वॉक में स्वर्ण पदक जीत लिया। उन्होंने 23 मिनट 21.12 सेकंड का समय निकालकर नया राष्ट्रीय रिकॉर्ड भी अपने नाम कर लिया। रंजना ने यह रिकॉर्ड दूसरे दिन के मुकाबले में बनाया। इससे पहले यह रिकॉर्ड राजस्थान की मनीषा के नाम 23 मिनट 43.58 सेकंड के साथ दर्ज था, जिसे रंजना ने करीब 22 सेकंड से बेहतर करते हुए तोड़ दिया। रंजना के इस प्रदर्शन को प्रतियोगिता के सबसे बेहतरीन प्रदर्शनों में गिना जा रहा है। उनकी तकनीक, रफ्तार और लय ने पूरे मुकाबले में उन्हें बाकी खिलाड़ियों से आगे बनाए रखा।

ASIA CATERING

(A Prestigious Caterer)

Vijay Kumar
Director, Asia Catering

Specialist in

- Outdoor Catering
- Marriage Reception
- Mess Catering
- Birthday Parties
- Corporate Meetings and Events

Office- A-315, Pallavi Nagar, Bawadiya Kalan, Bhopal- 462026

9826057495, 9425013598

Email- asiacateringbhopal@gmail.com, www.asiacateringbhopal.com

अरेरा क्रिकेट अकादमी

खेलों के प्रति समर्पित स्वैच्छिक संगठन

सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षण हमारी मुख्य पहचान

अरेरा अकादमी की सौम्या तिवारी ने टी20 गर्ल्स विश्व कप क्रिकेट में भारतीय क्रिकेट टीम को चैंपियन बनाने में अपना विशेष योगदान दिया।

अकादमी में खिलाड़ियों को मिलने वाली सुविधाएं

- टर्फ एवं सीमेंटेट विकेट
- फ्लड लाइट में प्रेक्टिस
- विशेष फिटनेस प्रशिक्षण
- समर्पित, अनुभवी एवं सीनियर कोच
- गर्ल्स क्रिकेटरों को विशेष प्रशिक्षण

भोपाल की प्रतिष्ठित क्रिकेट अकादमी से प्रशिक्षण प्राप्त कर खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान बनाई है। अकादमी में पूर्व अनुभवी खिलाड़ियों की समर्पित टीम द्वारा कोचिंग एवं प्रशिक्षण दिया जाता है।

प्रतीक शुक्ला

अर्जुन शुक्ला

ड्रोन श्रीवास्तव

अश्विन दास
रणजी ट्रॉफी क्रिकेटर

पलक वशिष्ठ

अंशुलिका सिंह

शानवी मंडलोई

श्रेया दीक्षित

मुख्य संरक्षक : श्री ध्रुवनारायण सिंह (पूर्व विधायक एवं अध्यक्ष, बीडीसीए)

अरेरा क्रिकेट अकादमी, मंदिर के पास, ओल्ड केम्पियन खेल मैदान, भोपाल

सुरेश चैनानी, कोच
9425365797

हेमन्त कपूर, सचिव
9425661029

मलेशिया में कल्याणी ने जीता गोल्ड

भोपाल। सेज यूनिवर्सिटी, भोपाल की छात्रा कल्याणी कोडोपे ने मलेशिया के कुआलालंपुर में आयोजित 15वीं साइलेंट नाइट कराटे कप 2026 में शानदार प्रदर्शन करते हुए गोल्ड मेडल अपने नाम किया। बीबीए प्रथम सेमेस्टर की छात्रा कल्याणी ने सीनियर महिला-68 किलोग्राम वर्ग के फाइनल में इंडोनेशिया की खिलाड़ी को 8-1 से हराकर खिताब जीता। पूरे टूर्नामेंट में कल्याणी का प्रदर्शन लगातार मजबूत रहा। उन्होंने मलेशिया और इंडोनेशिया को 8-0 से हराया, सिंगापुर को 5-3, नेपाल को 6-2 और श्रीलंका को 7-4 से पराजित किया।

रॉयल निमाड़ ईगल्स महिला टीम के ट्रायल्स 50 से अधिक खिलाड़ियों ने दिखाया दम

भोपाल। मप्र प्रीमियर लीग (सिंधिया कप) 2026 के तहत आईसेक्ट समूह की महिला क्रिकेट टीम 'रॉयल निमाड़ ईगल्स' के लिए चयन ट्रायल्स का आयोजन भोपाल स्थित स्कोप ग्लोबल स्किल्स यूनिवर्सिटी परिसर में में किया गया। ट्रायल्स में प्रदेश के विभिन्न जिलों से आई लगभग 50 महिला खिलाड़ियों ने भाग लेकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। ट्रायल्स के लिए ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों माध्यमों से पंजीकरण हुए थे। खिलाड़ियों ने बैटिंग, बॉलिंग, फील्डिंग और विकेटकीपिंग में अपने कौशल का प्रदर्शन किया। चयन समिति ने खिलाड़ियों का मूल्यांकन तकनीकी दक्षता, फिटनेस, खेल की समझ और प्रतिस्पर्धात्मक भावना जैसे महत्वपूर्ण मानकों पर किया। कार्यक्रम में आईसेक्ट इंडिया के कार्यकारी उपाध्यक्ष डॉ. सिद्धार्थ चतुर्वेदी, डॉ. अदिति चतुर्वेदी वात्स, डॉ. सीतेश कुमार सिन्हा, कोच संजय पाण्डे सहित अन्य अतिथि उपस्थित रहे।

अकादमी के दिलजोत, पूनम ने जीते कांस्य

भोपाल। मध्य प्रदेश वॉटर स्पोर्ट्स अकादमी की खिलाड़ियों ने दक्षिण कोरिया में आयोजित एशिया कप रोइंग प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करते हुए प्रदेश को गौरवान्वित किया है।

प्रतियोगिता में दिलजोत कौर और पूनम ने बेहतरीन तालमेल और तकनीक के दम पर 2 कांस्य पदक हासिल किए। दोनों खिलाड़ियों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपने कौशल का शानदार प्रदर्शन करते हुए देश और प्रदेश का नाम रोशन किया। उनकी इस उपलब्धि ने यह साबित किया है कि मध्यप्रदेश के खिलाड़ी वैश्विक मंच पर भी मजबूती से अपनी पहचान बना रहे हैं।

मलेशिया में मप्र के खिलाड़ियों ने जीते कई पदक

भोपाल। मध्यप्रदेश मार्शल आर्ट्स अकादमी, भोपाल के खिलाड़ियों ने अंतरराष्ट्रीय मंच पर शानदार प्रदर्शन करते हुए प्रदेश का नाम रोशन किया है। 17 से 19 अप्रैल 2026 तक कुआलालंपुर (मलेशिया) में आयोजित 15वीं साइलेंट नाइट कराटे कप 2026 में खिलाड़ियों ने बेहतरीन खेल दिखाते हुए स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक अपने नाम किए। प्रतियोगिता में अमेय कटारे (कैडेट, -57 किग्रा) ने फाइनल में सिंगापुर के खिलाड़ी को 8-1 से हराकर स्वर्ण पदक जीता। वहीं कल्याणी कोडोपे (सीनियर महिला, -68 किग्रा) ने इंडोनेशिया की खिलाड़ी को 8-1 से पराजित कर स्वर्ण हासिल किया। टीम कुमिते स्पर्धा में संदीप राठौर और अमन कुमार की जोड़ी ने शानदार प्रदर्शन करते हुए मलेशिया को हराकर भारत के लिए एक और स्वर्ण पदक जीता।

तनिष्का की घातक गेंदबाजी से भोपाल ने इंदौर को हराकर खिताब जीता

भोपाल। तनिष्का सेन की घातक गेंदबाजी और बल्लेबाजों के संयमित प्रदर्शन के दम पर भोपाल डिवीजन ने सीनियर वूमेन्स जेएस आनंद ट्रॉफी के फाइनल में इंदौर डिवीजन को 25 रन से हराकर खिताब अपने नाम किया। मुकाबला इंदौर के होल्कर स्टेडियम में खेला गया। पहले बल्लेबाजी करते हुए भोपाल डिवीजन ने 50 ओवर में 7 विकेट पर 177 रन बनाए। खुशी यादव ने नाबाद 49 रन की अहम पारी खेली, जबकि सौम्या तिवारी ने 45 और निकिता सिंह ने 26 रन जोड़े। इंदौर की ओर से अनादि और प्रियंका कौशल ने 2-2 विकेट लिए। लक्ष्य का पीछा करने उतरी इंदौर डिवीजन की टीम दबाव में नजर आई और 48.3 ओवर में 152 रन पर ऑलआउट हो गई। प्रियंका कौशल ने 56 रन बनाए, जबकि आशना पाटीदार और वैष्णवी व्यास ने 24-24 रन का योगदान दिया। भोपाल की ओर से तनिष्का सेन ने 5 विकेट लेकर मैच का रुख पूरी तरह बदल दिया, जबकि निकिता सिंह ने 2 विकेट लेकर अहम सहयोग दिया। इसी प्रदर्शन के लिए तनिष्का को प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया।

खेल विभाग के मैदानों पर सिस्टम की जंग

कहीं पवेलियन पर ताला, तो कहीं जंग खा रहा लाखों का सामान

मैदानों का बुरा हाल, टायलेट और पानी जैसी बुनियादी सुविधाओं के लिए भटक रहे भविष्य के सितारे

भोपाल। राजधानी भोपाल, जिसे मप्र का स्पोर्ट्स हब कहा जाता है, यहां के सरकारी खेल मैदान खुद अपनी बदहाली पर आंसू बहा रहे हैं। नेशनल स्पोर्ट्स टाइम्स की टीम ने जब शहर के 5 प्रमुख खेल मैदानों बाबे आली, ओल्ड कैंपियन, अंकुर मैदान, गौतम नगर और श्यामा प्रकाश मुखर्जी कोलार रोड का दौरा किया, तो जमीनी हकीकत दावों से काफी दूर नजर आई। खेल एवं युवा कल्याण विभाग के अधीन इन मैदानों से विभाग हर साल एक-एक अकादमी से करीब 1 लाख रुपये किराया तो बराबर वसूल रहा है, लेकिन खिलाड़ियों को मिलने वाली रोजमर्रा की सुविधाएं यहां बहुत कम हैं। समर वेकेशन के चलते मैदानों पर बच्चों की भारी भी है, लेकिन वे बिना पानी और टॉयलेट जैसी बुनियादी सुविधाओं की कमी होने के बावजूद पसीना बहाने को मजबूर हैं। खेल विभाग के शीर्ष अधिकारी खेल मैदानों का निरीक्षण करें तो हो सकता है यहां के खिलाड़ियों को रोजमर्रा की परेशानियां दूर हो जाए।

बाबेअली स्टेडियम (स्थापना : 1970 के दशक में विकसित)

करोड़ों का पवेलियन धूल फांक रहा, खिलाड़ियों के लिए सुलभ नहीं 'सुलभ'

शाहजहानाबाद स्थित ऐतिहासिक बाबेअली स्टेडियम की स्थिति सबसे ज्यादा चौंकाने वाली है। यहां खिलाड़ियों की सुविधा के लिए पीडब्ल्यूडी ने दो साल पहले एक भव्य नया पवेलियन बनाना शुरू किया था। यह छह महीने पहले बनकर तैयार भी हो चुका है, लेकिन विभाग ने इसका अब तक हैंडओवर नहीं लिया।

■ **ताले में बंद सुविधा :** करोड़ों की लागत से बना नया पवेलियन नहीं खुलने के कारण खिलाड़ियों को वाशरूम के लिए पुरानी जर्जर बिल्डिंग या बाहर जाना पड़ता है। जो शौचालय हैं वे भी बूरी स्थिति में हैं। खिलाड़ी कहते हैं कि इस विषय में हमें बहुत ही कठिनाइयों का सामना मैदान पर करना पड़ता है, खासतौर पर लड़कियों को। इस मैदान पर दो क्रिकेट अकादमियां चलती हैं। मैदान पर पीने के पानी की व्यवस्था नहीं है। नगर निगम का एक कनेक्शन जरूर है, लेकिन इसमें अपने समयसीमा के अनुसार ही कभी पानी आता है, कभी नहीं। मैदान की वाटरिंग भी अन्य स्त्रोतों से होती है।

■ **मेंटेनेंस का अभाव :** पुरानी बिल्डिंग में बैडमिंटन और टेबल टेनिस की सुविधा तो है, लेकिन सालों से पुताई और मरम्मत नहीं हुई। खिलाड़ियों ने बताया कि बैडमिंटन कोर्ट को सिंथेटिक बनाया गया है, जिसकी हार्डनेस के कारण उनके घुटनों में दर्द होने लगा है। यही वजह है कि यहाँ अब बहुत ही कम खिलाड़ी आते हैं। केवल छुट्टियों की दिन ही खिलाड़ियों की संख्या बढ़ती है। बैडमिंटन और टेबल टेनिस खिलाड़ी भी रोजमर्रा की सुविधाओं से परेशान रहते हैं।

■ **स्टाफ की कमी :** यहां सुरक्षा के नाम पर केवल एक सुरक्षाकर्मी, एक ग्राउंड्समैन और एक सफाई कर्मी है, जो इतने बड़े परिसर के लिए नाकाफी है।

धूल खा रहा नया वाटर कूलर, वाशरूम पर जड़ा है ताला

10 नंबर मार्केट स्थित ओल्ड कैंपियन मैदान शहर का सबसे चर्चित क्रिकेट ग्राउंड है। यहां साल भर क्रिकेट की गतिविधियां चलती हैं, लेकिन विभाग की अनदेखी यहां भी साफ नजर आती है। यहां खेल विभाग इस मैदान को आदर्श क्रिकेट मैदान तो बनाना चाहता है, लेकिन यहां भी रोजमर्रा की सुविधाओं की कमी है, खासतौर पर शौचालय की। इस मैदान पर दो क्रिकेट अकादमियां और एक ताइक्वांडो क्लब चलता है। क्रिकेट टूर्नामेंट तो यहां आए दिन होते रहते हैं, जिसमें शहर के बड़े-बड़े नागरिकों, अधिकारियों और मंत्रियों का आना-जाना लगा रहता है।

■ **बंद पड़ा वाटर कूलर :** विडंबना देखिए कि खिलाड़ियों के लिए नया वाटर कूलर आया तो है, लेकिन

ओल्ड कैंपियन मैदान

(स्थापना : 1980 के दशक में शुरू)

जर्जर हालत में वाटर कूलर।

वह एक कमरे में बंद पड़ा धूल खा रहा है। वह कब लगेगा, किसी को नहीं पता। मैन गेट के पास का वाटर कूलर तो जर्जर हालत में पहुंच चुका है।

■ **ताले में कैद टायलेट :** यहां शौचालय और वीआईपी वाशरूम पर ताला लटका रहता है। एक बाथरूम में कबाड़े का सामान रखा गया है। जो चौकीदार के कब्जे में रहते हैं। उसने चारों ओर से कमरों को कवर कर रखा है। यहां दो अकादमियों के कैंप चल रहे हैं, लेकिन बच्चों के लिए पीने के पानी और टायलेट की पूर्ण व्यवस्था नहीं है। यहां सिर्फ दो वाटर कूलर लगाए गए हैं। जिसमें कभी पानी आता है तो कभी नहीं। इसमें साफ-सफाई भी बहुत कम देखने को मिलती है। मैदान के एक साइट तो वाटर कूलर ही नहीं लगाया गया है। यहां टायलेट बनाया तो गया है लेकिन यहां हमेशा गंदगी फैली रहती है।

■ **जर्जर स्टैंड :** दर्शकों के लिए बने 14 स्टैंडों में से 8 की छत पुरी तरह टूट-फूट चुकी है। है। हाल ही में खेल विभाग ने कुछ स्टैंडों पर सीट लगवाई थी। जिन स्टैंडों पर छत नहीं है वहां धूप में बैठना सजा जैसा है।

■ **स्टाफ विवरण :** यहां दो सुरक्षा कर्मी, एक चौकीदार, एक सफाई कर्मी और दो ग्राउंड्समैन तैनात हैं, फिर भी व्यवस्थाएं पटरी से उतरी हुई हैं। साफ-सफाई की कमी साफ नजर आती है।

गौतम नगर खेल मैदान (स्थापना : 2000 के दशक में विकसित)

यहां गार्ड की कमी खलती है

बात करते हैं गौतम नगर स्थित खेल मैदान की यहां पानी और शौचालय की व्यवस्था की खिलाड़ियों को कोई समस्या नहीं है लेकिन यहाँ गार्ड और सफाईकर्मी की कमी साफ खलती है मैदान पर वीएस क्रिकेट अकादमी चलती है जो यहां की रोजमर्रा की सुविधाओं का ध्यान रखती है। यहां पर खेल विभाग ने एक ग्राउंड्समैन की नियुक्ति की है। यह मैदान यहां के रहवासीयों के लिए आकर्षण का केंद्र माना जाता है। खेल विभाग ने हाल ही में करोड़ों की लागत से शहर के कोलार रोड स्थित **श्यामा प्रकाश मुखर्जी खेल मैदान** का निर्माण कराया है। यहां क्रिकेट, फुटबॉल, बैडमिंटन, टेबल टेनिस खेलों की सुविधाएं हैं। खिलाड़ियों का कहना है कि यहां सब कुछ ठीक-ठाक है कैंप लगे हैं और यहां खेलने में काफी अच्छा लग रहा है पहले इस एरिये में कोई बड़ा खेल मैदान नहीं था।

अंकुर खेल मैदान (स्थापना : 1990 के दशक में निर्मित)

नशेड़ियों का कब्जा और जंग खाता लाखों का सामान

6 नंबर स्थित अंकुर मैदान की स्थिति सबसे दयनीय है। यहां पिछले तीन साल से ओपन जिम का लाखों रुपये का सामान खुले में पड़ा हुआ है, लगता है जिसे विभाग ने जंग खाने के लिए छोड़ दिया है। इनका मेंटनेंस भी नहीं किया जा रहा है। रात होते ही यहां नशेड़ियों और गंजेड़ियों का कब्जा हो जाता है। ये लोग दिन में भी अभ्यास करने वाले खिलाड़ियों को परेशान करते हैं, लेकिन खेल विभाग के गार्ड इनके सामने असहाय नजर आते हैं। कई जगह से मैदान की बाउंड्री टूटी होने से उत्पाती लोग कभी भी अंदर आ जाते हैं। जिससे खिलाड़ियों और ग्राउंड स्टाफ को परेशानी का सामना करना पड़ता है।

■ **इंजरी का डर :** मैदान की आउटफील्ड इतनी खराब है कि आए दिन खिलाड़ी जख्मी होते हैं। पुरानी बिल्डिंग के शौचालय में भयानक गंदगी रहती है। यहां भी खिलाड़ियों को कफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

■ **स्टाफ :** यहां एक ग्राउंड्समैन, दो सफाईकर्मी, दो सरकारी गार्ड और कुछ निजी गार्ड हैं, फिर भी सुरक्षा और सफाई के नाम पर कई तरह की कमियां हैं।

यहां मैदान पर संचालित अकादमियों से खेल विभाग साल भर का 1 लाख रुपये किराया वसूलता है। इसके बावजूद सुविधाएं नहीं दी जा रही हैं। ताइक्वांडो में रश्मिका (संविदा) कोचिंग दे रही हैं, वहीं टेबल टेनिस में इमरान अपनी निजी अकादमी चला रहे हैं।

एशिया कप कैंप के लिए भोपाल के साई में जुटे युवा हॉकी सितारे

भोपाल। भारतीय हॉकी के भविष्य को तराशने के लिए हॉकी इंडिया ने बड़ा कदम उठाते हुए अंडर-18 राष्ट्रीय कोचिंग कैंप के लिए 84 खिलाड़ियों (42 पुरुष और 42 महिला) का चयन किया है। यह हाई परफॉर्मेंस कैंप स्पोर्ट्स ऑथोरिटी ऑफ इंडिया (साई) भोपाल में शुरू हो चुका है और इसे आगामी अंडर-18 एशिया कप (काकामिगाहारा, जापान) की अंतिम तैयारियों का अहम पड़ाव माना जा रहा है। हाल ही में संपन्न 16वीं सब-जूनियर नेशनल चैंपियनशिप के प्रदर्शन के आधार पर चुने गए इन खिलाड़ियों को पहले एक हफ्ते तक कड़ी निगरानी में परखा जाएगा। इसके बाद 42-42 के ग्रुप को घटाकर 24-24 खिलाड़ियों तक सीमित किया जाएगा, जो एशिया कप के लिए भारत की अंतिम टीम में जगह बनाने की दौड़ में शामिल रहेंगे। यह प्रतिष्ठित टूर्नामेंट 29 मई से 6 जून तक जापान में आयोजित होगा। महिला टीम की जिम्मेदारी भारतीय हॉकी की स्टार खिलाड़ी रानी रामपाल को सौंपी गई है, जबकि पुरुष टीम का मार्गदर्शन दिग्गज सरदार सिंह और राजनिश मिश्रा करेंगे। विशेषज्ञों के मुताबिक कई खिलाड़ी अगले 10-15 साल तक सीनियर भारतीय टीम का हिस्सा बन सकते हैं।

ये हैं मप्र के खिलाड़ी- ■ **पुरुष टीम :** आयुष राजक (गोलकीपर), अंश बहुत्रा (डिफेंडर), अवि माणिकपुरी (मिडफील्डर), सिद्धार्थ बेन (फॉरवर्ड), करण गौतम (फॉरवर्ड), गाजी खान (फॉरवर्ड)। ■ **महिला टीम :** महक परिहार (गोलकीपर), शालिनी सिंह (डिफेंडर), स्नेहा दावड़े (मिडफील्डर), नम्मी गीताश्री (फॉरवर्ड), नौशीन नाज (फॉरवर्ड)।

निंबालकर ट्रॉफी पर भोपाल का कब्जा

भोपाल। मप्र क्रिकेट एसोसिएशन की भाऊ साहेब निंबालकर ट्रॉफी अंडर-18 बॉयज क्रिकेट में भोपाल डिवीजन ने शानदार प्रदर्शन करते हुए रेस्ट ऑफ एमपी च्वीज को 284 रन के बड़े अंतर से हराकर खिताब अपने नाम किया। मुकाबला जबलपुर में खेला गया। मैच के चौथे और अंतिम दिन रेस्ट ऑफ एमपी च्वीज ने 3 विकेट पर 22 रन से आगे खेलना शुरू किया, लेकिन पूरी टीम 47.4 ओवर में 122 रन बनाकर ऑलआउट हो गई। भोपाल डिवीजन की ओर से ओजस शुक्ला ने 3 विकेट झटके, जबकि रबजीत सिंह मल्ही और नैतिक जैन ने 2-2 विकेट लेकर जीत में अहम भूमिका निभाई। इस जीत के साथ भोपाल डिवीजन ने पहली बार इस प्रतिष्ठित ट्रॉफी पर कब्जा किया। खास बात यह रही कि रेस्ट ऑफ एमपी चएज और च्वीज दोनों टीमों में भोपाल को छोड़कर प्रदेश के अन्य हिस्सों के खिलाड़ियों का चयन किया गया था। इसके बावजूद भोपाल ने दोनों टीमों को हराकर अपनी श्रेष्ठता साबित की। इससे पहले भोपाल डिवीजन हीरालाल गायकवाड़ ट्रॉफी भी जीत चुका है।

रेलवे यूथ को हरा मयंक अकादमी बनी चैंपियन

भोपाल। मयंक चतुर्वेदी क्रिकेट अकादमी ने प्रथम शहीद भगत सिंह क्रिकेट टूर्नामेंट जीत लिया है। उसने फाइनल में रेलवे यूथ को 41 रन से हराया। ओल्ड कैंपियन पर मयंक ने 40 ओवर में 191 रन बनाए। आर्यवीर मेघवानी ने 57 और इशान तिवारी 49 रन बनाए। नमस्ते ने 3 विकेट लिए। जवाब में रेलवे यूथ 150 रन पर ऑलआउट हो गई। ग्रन्थ प्रजापति ने 63 रन बनाए। वेद ने 3 विकेट लिए। उन्हें मैन ऑफ द मैच चुना गया।

ट्रायथलॉन में अमन, आध्या सहित कई खिलाड़ियों ने जीते पदक

भोपाल। जिला ट्राइथलॉन चैम्पियनशिप आरपीएम परिसर में आयोजित हुई। ट्रायथलॉन में 350 मीटर तैराकी, 7.5 किलोमीटर साइक्लिंग और 2.5 किलोमीटर दौड़ शामिल थी, जिसने प्रतिभागियों की शारीरिक क्षमता के साथ मानसिक मजबूती की भी कड़ी परीक्षा ली। मास्टर्स पुरुष वर्ग में दिवाकर शर्मा ने पहला स्थान हासिल किया। वहीं महिला वर्ग में भावना एम विजेता रहीं। सीनियर पुरुष वर्ग में अमन प्रजापति ने पहला स्थान प्राप्त किया। सीनियर महिला वर्ग में आध्या सिंह ने पहला स्थान हासिल किया।

सब-जूनियर वर्ग में भी शानदार प्रदर्शन देखने को मिला। लड़कों में वेंकटेश के ने पहला स्थान प्राप्त किया, जबकि लड़कियों में अनुष्का हिंगनकर प्रथम रहीं, उनके बाद आरोही रायकर दूसरे और अवनि राजपूत तीसरे स्थान पर रहीं। जूनियर पुरुष वर्ग में ध्रुव साहू ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, उनके बाद राजवीर तिवारी और अल्तैर अली अख्तर क्रमशः दूसरे और तीसरे स्थान पर रहे। जूनियर महिला वर्ग में मानवा पाबले ने पहला स्थान हासिल किया, जबकि तनिष्क सिंह और आस्था गोसाई दूसरे और तीसरे स्थान पर रहीं।

स्पर्धा का पुरस्कार वितरण आरडी झा ने किया। जहां विजेताओं को उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया गया। सभी खिलाड़ियों को वरिष्ठ तैराकी प्रशिक्षक रामाधार झा सचिव भोपाल जिला ट्रायथलोन संघ एवं तनवीर हलीम प्रेसिडेंट द्वारा सम्मानित किया गया। इस अवसर पर उपस्थित कैप्टन मनोज झा बृजभान सिंह धाकड़ अशोक सिंगरौल उदयवीर सिंह, मनोज करैया ने खिलाड़ियों को शुभकामनाएं दी। यह आयोजन क्षेत्र में मल्टी-स्पोर्ट प्रतियोगिताओं के बढ़ते आकर्षण का प्रमाण है और आरपीएम परिसर को एक उभरते हुए खेल केंद्र के रूप में स्थापित करता है।

एमपी के खिलाड़ियों ने नेशनल में 6 मेडल जीते

भोपाल। दिल्ली में आयोजित स्पेशल ओलंपिक भारत नेशनल बॉलिंग चैंपियनशिप में मध्यप्रदेश के खिलाड़ियों ने 6 पदक अपने नाम किए। इसमें प्रदेश के 8 एथलीट्स ने भाग लिया। डबल्स मुकाबलों में पिंकी और दुर्गा की जोड़ी ने बेहतरीन खेल दिखाते हुए स्वर्ण पदक जीता। वहीं जूनियर डबल्स में अतुल साहू और वन्या ने सिल्वर मेडल हासिल किया। सीनियर वर्ग में प्रतीक और केशव की जोड़ी ने कांस्य पदक जीता। इसके अलावा अंशुमन, अतुल साहू और दुर्गा ने सिल्वर जीते।

बेटियों के बाद बेटों ने भी रचा इतिहास दोनों टीमों ने जीता रजत पदक

भोपाल। 16वीं हॉकी इंडिया सब-जूनियर महिला राष्ट्रीय चैम्पियनशिप 2026 में मध्यप्रदेश की महिला और पुरुष दोनों टीमों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए रजत पदक अपने नाम कर प्रदेश को गौरवान्वित किया। रांची में आयोजित इस प्रतिष्ठित प्रतियोगिता में मध्यप्रदेश महिला हॉकी टीम तथा पुरुष हॉकी टीम ने उत्कृष्ट खेल, अनुशासित रणनीति और सशक्त टीमवर्क का प्रदर्शन करते हुए फाइनल तक का सफल सफर तय किया।

महिला टीम- युवा जोश और प्रतिभा का संगम : मध्यप्रदेश महिला टीम में महक परिहार, साजेदा बेगम, शालिनी सिंह, रोली, स्नेहा दवाड़े, मानसी, प्रियंशी केश्त्रे, सुदीप्ता, नौसीन नाज़, केशर, गीता श्री, भाविका, जागृति, प्रियंशी भावर, आक्शा खान, सादफ खान, विभा सिंह एवं मुस्कान रघुवंशी जैसी प्रतिभाशाली खिलाड़ी शामिल हैं, जिन्होंने पूरे टूर्नामेंट में अनुशासन और समर्पण का परिचय दिया है।

पुरुष टीम में शामिल खिलाड़ी : राजक आयुष, लोढ़ी आयुष सिंह, शुक्ला अनिल, अंश बहुतरा (कप्तान), अवि माणिकपुरी, अली गुफरान, निंगोम्बाम रोनिन सिंह, सिद्धार्थ बेन, देवराज प्रजापत, करण गौतम, रैयान उल हक, दीपक सिंह, गाजी खान, हर्षित धोते, जितेंद्र कहार, आज़ाद सुल्तानी, कुणाल कावरे और नंदू सिंह ने उत्कृष्ट टीमवर्क और समर्पण का परिचय दिया।

खेल मंत्री सारंग ने दी बधाई : मध्यप्रदेश के सहकारिता, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री विश्वास कैलाश सारंग ने दोनों टीमों को बधाई देते हुए कहा कि यह उपलब्धि खिलाड़ियों की मेहनत, कोचिंग स्टाफ के मार्गदर्शन और राज्य सरकार द्वारा विकसित खेल सुविधाओं का परिणाम है। उन्होंने विश्वास जताया कि भविष्य में ये खिलाड़ी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर और भी बड़ी सफलताएं हासिल करेंगे।

मध्यप्रदेश अकादमी की माही लामा और अंजली नेशनल बॉक्सिंग कैंप में

भोपाल। मध्य प्रदेश राज्य बॉक्सिंग अकादमी भोपाल की अंजली सिंह

57 किलोग्राम और माही लामा 60 किलोग्राम भार वर्ग में इंडियन बॉक्सिंग कोचिंग कैंप के लिए चयनित हुई हैं। यह कैंप एनआईएस पटियाला में शुक्रवार से आयोजित किया जा रहा है। कैंप 1 जुलाई तक चलेगा। कैंप में प्रदर्शन के आधार पर भारतीय दल का चयन कियाजाएगा। इन दोनों ने हाल में नेशनल बॉक्सिंग में मेडल जीते हैं। उसी के आधार पर उनका चयन कैंप के लिए हुआ। दोनों टीटी नगर स्टेडियम में चीफ कोच रोशनलाल से इस खेल की ट्रेनिंग ले रही हैं।

भोपाल में पिंक स्पोर्ट्स शुरू हुआ, महिलाओं को मिल रहा है स्पोर्ट्स का एक समर्पित मंच

भोपाल। राजधानी में महिलाओं के लिए विशेष रूप से तैयार 'पिंक स्पोर्ट्स' स्पोर्ट्स शॉप का पिछले दिनों भव्य शुभारंभ किया गया। टीटी नगर स्थित श्री गुरु सिंह सभा गुरुद्वारा परिसर में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मंत्री कृष्ण गौर ने फीता काटकर इस नए खेल प्रतिष्ठान का उद्घाटन किया। शहर के खेल प्रेमी, स्थानीय नागरिक, खिलाड़ी और बड़ी संख्या में महिलाएं मौजूद रहीं। इस अवसर पर मुख्य अतिथि कृष्णा गौर ने कहा कि महिलाओं को खेलों से जोड़ना समय की जरूरत है और इस तरह की पहल से उन्हें बेहतर अवसर मिलेंगे। इस मौके पर पिंक स्पोर्ट्स के ऑनर विपिन कोहली ने बताया कि पिंक स्पोर्ट्स का उद्देश्य महिलाओं को सशक्त बनाना और उन्हें खेलों में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना है। उन्होंने कहा कि भविष्य में भी ऐसे प्रयास जारी रहेंगे।

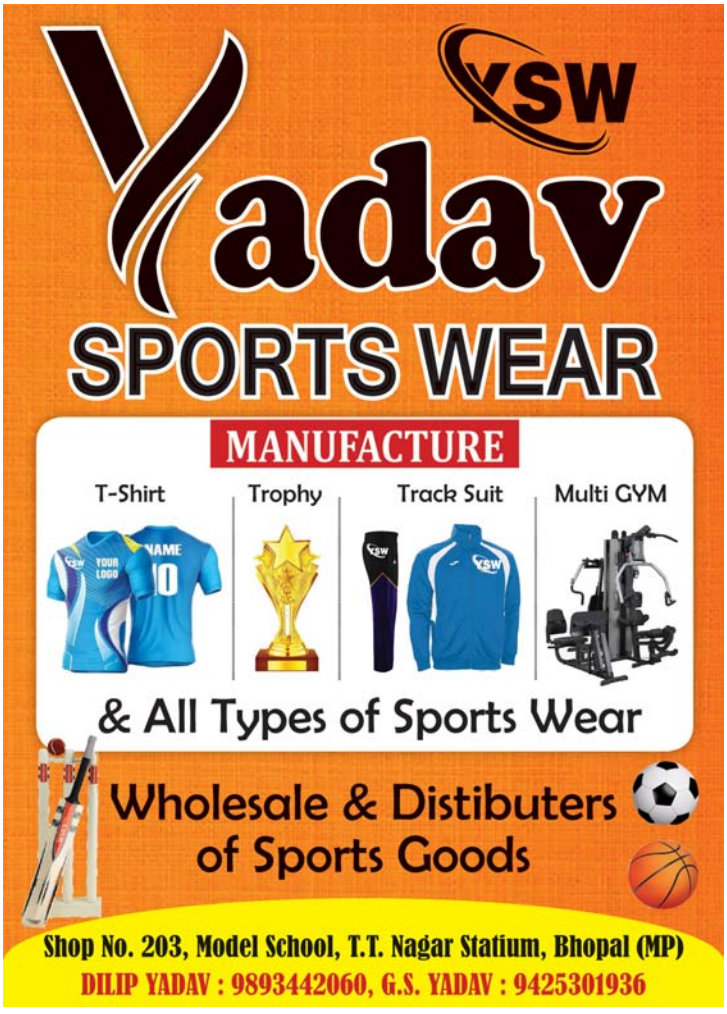

HONDA

नई शुरुआत
नए रिश्तों की

RTO टैक्स पर 50% OFF

डाउन पेमेंट ₹2999*
इंस्टेंट केशबैक ₹5000*
न्यूनतम ब्याज दर @6.99*
बिना हाईपोथिकेशन

Shine 100 DX

EX SHOWROOM PRICE ₹70196*

ACTIVA

EX SHOWROOM PRICE ₹76946*

Terms & Condition Apply*

Om Auto Honda

PRABHAT SQUARE, RAISEN ROAD, BHOPAL, M: 9826331339

तकनीकी, प्रगति और सुशासन की
मिसाल बनीं नागरिक सेवाएं
नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री
सायबर तहसील देश में सबसे पहले लागू
सिर्फ 15 दिन में
सभी राजस्व कार्य ऑनलाइन
संपदा 2.0 (ई-रजिस्ट्री)
अब घर बैठे पेपरलेस, फेसलेस संपत्ति पंजीयन
त्वरित नक्शे की अनुमति एवं ऑनलाइन डीम्ड अनुज्ञा
300 एवं 105 वर्ग मीटर तक के आवासीय भू-खण्डों पर
लोक सेवा गारंटी एक्ट
741 सेवाएं उपलब्ध,
10 करोड़ + आवेदनों का निराकरण
सीएम जनसेवा पोर्टल एप
दिव्यांगजनों के लिए
हेल्पलाइन
सीएम हेल्पलाइन 181
CM HELPLINE 181
त्वरित और प्रभावी शिकायत निवारण
डायल 112
16 मिनट में पहुंचने वाली
आपातकालीन सहायता
ई - ऑफिस
जनकल्याणकारी योजनाओं के लिए
पारदर्शी एवं एकीकृत ऑनलाइन प्रणाली
eOffice
हेल्पलाइन नम्बर - 1912, शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में
विद्युत संबंधित शिकायतों के निराकरण हेतु
डॉ. मोहन यादव का
अभ्युदय
मध्यप्रदेश
मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी
आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2026
D19031/26

आस्था का दिव्य महाकुंभ
पूरा विश्व देखेगा उज्जैन का वैभव

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

30 करोड़ श्रद्धालुओं का स्वागत उज्जैन नगरी का हो रहा अभूतपूर्व कायाकल्प

सुगम आवागमन ₹ 13,536 करोड़ से 581 कि.मी. मार्गों का चौड़ीकरण एवं निर्माण कार्य प्रगतिरत

पुल निर्माण ₹440 करोड़ के निर्माण से यातायात का बेहतर प्रबंधन

शुद्ध जल क्षिप्रा के लिये ₹ 919 करोड़ लागत की कान्ह क्लोज्ड डक्ट परियोजना एवं शहर में पेयजल आपूर्ति हेतु ₹1113 करोड़ के कार्य जारी

घाट निर्माण लगभग 29 कि.मी. घाटों का निर्माण जारी

ज़ीरो वेस्ट इवेंट जन भागीदारी से ज़ीरो वेस्ट इवेंट बनाने की पहल

मंदिरों का जीर्णोद्धार सभी पौराणिक मंदिर जैसे हरसिद्धि, गढ़कालिका का विकास

आधुनिक तकनीक से प्रबंधन भीड़ नियंत्रण से लेकर ट्रांसपोर्ट और कंट्रोल रूम तक एआई का उपयोग

कनेक्टिविटी विश्वस्तरीय उज्जैन हवाई अड्डा और सदावल में 4 हेलीपैड का निर्माण कार्य जारी

उज्जैन बनेगा मेडिकल हब ₹ 592.30 करोड़ लागत से मेडिसिटी एवं मेडिकल कॉलेज निर्माणाधीन

"सिंहस्थ महापर्व 2028 करोड़ों भक्तों को सरल, सुलभ और नवीनतम सुविधाओं से युक्त विश्व-स्तरीय कुंभ का अनुभव प्रदान करना हमारा संकल्प है।"

- डॉ. मोहन यादव
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

D19031/26